नई पीढ़ी के निर्माण का मासिक

नंदन

हिंदुस्तान टाइम्स प्रकाशन

मई '८९

रु.३.५०पै.

Scanned with CamScanner

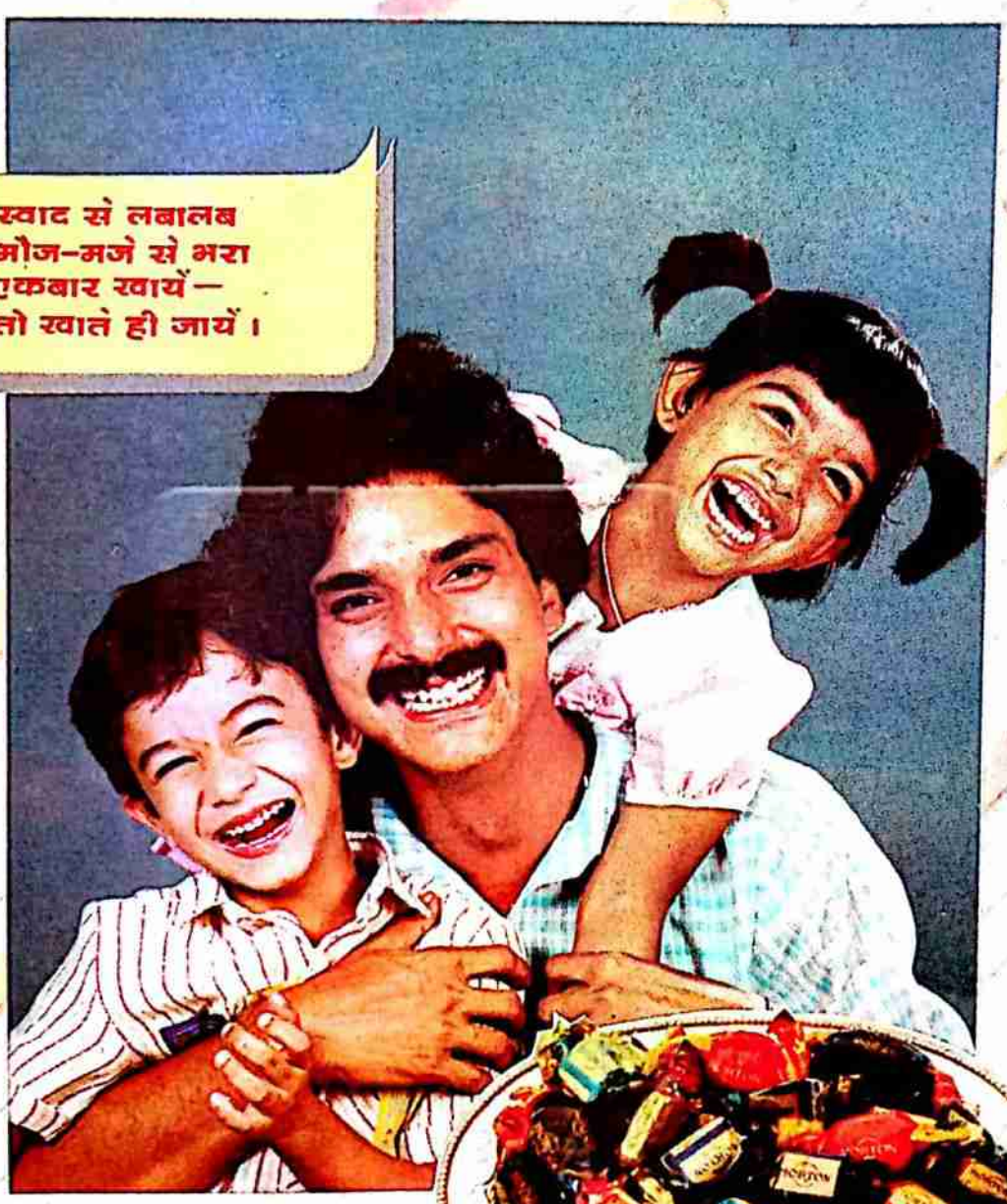

मॉर्टन स्वीट्स व टॉफीयाँ—वर्षों से पूरे परिवार की मनपसंद।
स्वादिष्ट व पौष्टिक—इतने सारे जायकों में—चीनी, ग्लूकोज व क्रीमयुक्त शुद्ध दूध के गुणों से भरपूर।
चॉकलेट व कोकोनट कूकीज, रोज एक्लेयर्स, सुप्रीम डिलक्स टॉफीयाँ, लेक्टोबोनबोन्स तथा अन्य मजेदार स्वादों में उपलब्ध।
एक खायें तो बस खाते ही जायें।

चेतावनी :

MORTON स्वीट्स का लोगो एवं रैपर कम्पनी का पंजीकृत व्यापार-चिन्ह है। किसी भी प्रकार से व्यापार-चिन्ह अधिकारों का उलंघन अभियोजनीय है।

MORTON
SWEETS

मॉर्टन कन्फैक्सनरी एण्ड मिल्क प्रोडक्ट्स फैक्ट्री
पो.ओ. : मढ़ौरा-८४१४१८ जिला : सारन, (बिहार)

CC/M-2/88 HIN

Scanned with CamScanner

डायमंड कामिक्स में

चिंकी के मम्मी पापा
पलटू और नये सात बौने
फौलादी सिंह और शैतानों की टोली
छोटू लम्बू और भिखारी का प्रेत
मोटू छोटू और खजाने की खोज
राजन इकबाल और मदमस्त इकोती
चाचा भतीजा और उड़ने वाली छिपकली
पिकलू और मंगल पाण्डेय

डायमंड कॉमिक्स पहेली प्रतियोगिता में भाग लेकर 2 लाख रूपयों के नकद इनाम प्राप्त करें। विवरण अगले अंक में

मूल्य प्रत्येक 5/-

डायमंड कामिक्स डाइजेस्ट में

12.00

मूल्य प्रत्येक 12/-

डायमंड मिनी कॉमिक्स

मूल्य प्रत्येक 2/-

नई बाल पॉकेट बुक्स

पलटू और जादूगर गोगी	3.00
पिकलू और जगंल का शैतान	3.00
चाचा चौधरी और थ्री डब्लू	3.00
बिल्लू और बुलबुल का बाग	3.00
महाबली शाका और कबीलों का दुश्मन	3.00
मोटू पतलू और जादूगर काला मुंडा	3.00
फौलादी सिह और सुपर क्वीन	3.00
मीकू और बंदर का ज्योतिष	3.00

डायमंड पाकेट बुक्स प्रा.लि.
2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

Scanned with CamScanner

टपकते, चिपकते गोंद की छोड़ो स्विट पिट

अपनाओ
झंझट रहित कोरस प्रिट ग्लू स्टिक

आसान • साफ़-सुथरा • तुरन्त

हां भई, कोरस प्रिट ग्लू स्टिक काग़ज़ चिपकाने का अनोखा तरीका है – आसान, साफ़-सुथरा और शीघ्र. देखो तो सही, इस से तुम क्या क्या चिपका सकते हो :

- पुस्तकों पर कवर
- लेबल
- काग़ज़ के चित्र और खिलौने बनाओ
- पतंग जोडो या बनाओ
- तस्वीरें चिपकाओ
- डाक टिकट चिपकाओ
- उपहार पर सुन्दर कवर चढ़ाओ

और... बहुत कुछ

अपनी मम्मी से कहो कि आज ही कोरस प्रिट ग्लू स्टिक ले आयें.

स्टेशनरी विक्रेताओं और जनरल स्टोर्स में उपलब्ध.

विक्री व्यवस्था :
कोरस (इंडिया) लि., बम्बई 18.
प्रिट ® रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क
पश्चिम जर्मनी

AKA/366-HN

Scanned with CamScanner

मनोज कॉमिक्स

के मई माह के 16 नये कॉमिक्स पढ़िये

और फ्री भाग्यशाली ड्रॉ में शामिल होकर जीतिये

₹ 1,25,000/- रूपये के सैकड़ों आकर्षक इनाम

मनोज कॉमिक्स के मई माह के निम्न 16 कॉमिक्स खरीदते समय
अपने पुस्तक विक्रेता से एक भाग्यशाली टिकट मुफ्त प्राप्त करें

- वृक्ष देवता का चमत्कारी हार
- राजमहल का षड्यंत्र
- लाश का संदेश
- अब आया तूफान
- कैप्सूल की वापसी
- इंस्पेक्टर मनोज और मौत का निर्माता
- किस्मत का लेख
- शाही खजाने के चोर
- आफत की जड़
- एक खिलाड़ी तीन अनाड़ी
- कौन सच्चा कौन झूठा
- वन देवता और विचित्र फल
- अलीबाबा की तिजोरी
- चोर का भाई चोर
- बन्द गुफा का कैदी
- लाश का झूमर

विशेष नोट:- इस ड्रॉ में जून माह में प्रकाशित अन्य 16 कॉमिक्स पर फ्री वितरित की गई टिकटों को भी शामिल किया जा रहा है। अर्थात् उपरोक्त ड्रॉ मई व जून के सैटों पर वितरित की गइ भाग्यशाली टिकटों पर निकाला जायेगा।

मनोज कॉमिक्स 26/97, अग्रवाल मार्ग, शक्तिनगर, दिल्ली- 110 007

KARE/231

Scanned with CamScanner

अब लायन पेंसिल्स की ओर से एक और नयी पेशकश... पर्ल फ़िनिश युक्त **लायन पिंकी** पेंसिल. आकर्षक पेंसिल. देखने में खूबसूरत. इसकी एच बी लैड की मज़बूत बनावट के कारण यह सहजता से लिखे, और न ही बार-बार टूटे.

रबर टिप और हेक्ज़ागॉनल के साथ भी उपलब्ध

लायन पेंसिल के अन्य जाने-माने ब्राण्ड :

लायन **मोटो**, लायन **टरबो**, लायन **स्वीटी**, लायन **कॉन्कॉर्ड**, लायन हाय-टैक **मैटालिक**, लायन **मशहूर**, लायन **एक्ज़ेक्यूटिव**, लायन **नॉवेल्टी**, लायन **जीमैटिक** ड्राइंग पेंसिलें. और **रतन** कलर पेंसिलें तथा वैक्स क्रेयॉन.

लायन पेंसिल्स प्रा. लि., ९५ पारिजात, मरीन ड्राइव, बम्बई ४०० ००२.

Scanned with CamScanner

नंदन

मई '८९

वर्ष २५ अंक ७

सम्पादक

जयप्रकाश भारती

कहां क्या है

कहानियां

केदारनाथ	मूसल की मार	२
घनश्यामदास बिड़ला	बाबा खिचड़ीदास	१२
कविराज ओम प्रकाश	शुभ शकुन	१५
रामपाली भाटी	कुलदेवी	१८
डा. रणवीर रांग्रा	चलो मिलने	२०
जी. ई. फैरो	बन जा बौना	२४
कल्पना गहलौत	चोर कौन था	२८
श्रीनिवास वत्स	लोभ को हार	३१
कमला चमोला	बगदाद का बादशाह	४१
रवि दिवाकर	नींद आ गई	४४
कैलाश जैन	लोरी	४५
डा. मधु धर	गंगा मिल गई	४६
डा. भगवतीशरण मिश्र	माखन खिलाऊंगी	५२
तनवीर अख्तर 'रूमानी'	झूठ-सच	५४
रामनारायण उपाध्याय	मणि	५६
रमेश गुप्त	टहनी हिलाओ	५९
हरफूल सुईवाल	मत पूछो	६६

कविताएं

रामसेवक, रमेश कौशिक, गोपीचंद श्री नागर, नवीन जैन, डा. देवव्रत जोशी ३२

इस अंक में विशेष

गर्मी के दिन	सतरंगी झांकी	२२-२३
लाला हरदयाल	चित्र कथा	३३-४०
बातें रंग-बिरंगी		६७

स्तम्भ

एलबम ११; आप कितने बुद्धिमान हैं ३०; चटपट ४८; तेनालीराम ५१; ज्ञान-पहेली ५७; चीटू नीटू ६१; पुरस्कृत कथा ६३; नई पुस्तकें ६४; पत्र मिला ६९।

मुख पृष्ठ : मंजुला— एलबम : रामकृष्ण शर्मा

सहायक सम्पादक : चन्द्रदत्त 'इन्दु'

उप-सम्पादक : देवेन्द्रकुमार, रत्नप्रकाश शील, क्षमा शर्मा, डा. चन्द्रप्रकाश; चित्रकार : प्रशांत सेन

Scanned with CamScanner

आओ बात करें

किसी ने चांदी का एक पिंजरा बनवाया। एक पंछी को पकड़कर उसमें बंद कर लिया। पंछी रात-दिन छटपटाता। यही रट लगाए रहता— "मेरा घर, मेरी मातृभूमि..."

पिंजरे के मालिक ने सोचा— 'जरूर यह किसी बहुत सुंदर और अद्‌भुत देश का पंछी है। क्यों न इसे आजाद कर दूं। फिर देखूं, यह उड़कर कहां जाता है? वहां न जाने कैसा क्या हो!'

यह सोच, उसने पिंजरा खोल दिया। पंछी पिंजरे से निकला और फुर्र से उड़ा। उसने कई चक्कर काटे, फिर थोड़ी दूर उड़कर गया। वहां ऊंची-ऊंची झाड़ियां उगी थीं। एक बड़ी झाड़ी में जा बैठा। वहीं उसका घोंसला था। पंछी मस्ती से झूम रहा था और लगता था, जैसे खुशी का गीत गा रहा हो।

कई बरस हुए, परदेश में दो चित्र देखे थे। उनमें कलाकार ने यही दिखाया था। वह कलाकार भारतीय था। बहुत-बहुत पहले उस देश में गया था। वहीं पढ़ाई की, फिर शादी की। घर बसा लिया। पर उसे अपने देश की याद सताती थी। उसने ऐसे कई चित्र बनाए थे, जिनमें मातृभूमि से प्यार झलकता था।

कलाकार से मैंने कहा था— "क्यों नहीं तुम भारत चले आते?"

उसका उत्तर था— "मेरे लिए अब वहां क्या है। मैं किशोर था, जब वहां से आया। अब बूढ़े शरीर को लेकर वहां जाऊं, तो किसलिए?"

भारत में उसके परिवार को मैंने खोजा। रिश्तेदारों ने उसके बारे में सुनने और बातचीत करने में रुचि नहीं दिखाई। हैरानी की बात, उस कलाकार की मां से भी मुलाकात हो गई। मां को बेटे की हर बात में दिलचस्पी थी। बातें करते-करते मां पूछ बैठी— "तुम किस भाषा में बातें करते रहे? क्या मेरा बेटा पंजाबी बोलता है?"

मैंने उत्तर दिया— "माता जी, वह पंजाबी नहीं बोलता। वह फ्रांसीसी में बोलता रहा। दुभाषिए की मदद से हम बातें कर सके।"

उस मां की आंखें भर आईं। गला रुंध गया। कुछ देर बाद वह बोली— "मेरा बेटा तो मर चुका। तुम शायद किसी और से मिले होगे। जो भाषा मैंने उसे गोद में सिखाई, वही भूल गया।"

भारी मन से वहां से चला आया था।

परदेश में बस गए कलाकार की तस्वीर कई बार सामने उभर आती है। वह मातृभूमि को याद करता है, पर भाषा भूल गया। हम अपने देश में रहते हैं, पर मातृभाषा को भूले रहते हैं। बच्चे ही नहीं, जो बड़े हैं, वे भी पराई भाषा का इस्तेमाल करने में बड़प्पन मानते हैं।

इन दिनों 'नंदन' की ढाई लाख प्रतियां महीने में छपती हैं। अगर हम ढाई सौ नंदन एक के ऊपर एक रखते जाएं, तो ऊंचाई होती है एक मीटर। इसी तरह से रखते रहें तो ढाई लाख नंदन एक किलोमीटर (एक हजार मीटर) ऊंचाई तक पहुंच जाएंगे। छोटा-सा पहाड़ ही समझो। एक साल के 'नंदन' इसी तरह से रख दें, तो ऊंचाई बहुत हो जाएगी, यानी एवरेस्ट पहाड़ से डेढ़ गुनी। उस ऊंचाई पर पर्वतारोहण का अभ्यास भी किया जा सकता है। ऐसी अनोखी है तुम्हारी पत्रिका— 'नंदन'।

तुम्हारे भइया

जयप्रकाश मानस

Scanned with CamScanner

मूसल की मार

—केदारनाथ

यह कहानी लगभग दो सौ साल पुरानी है। कर्नाटक राज्य का जिला है चित्रदुर्ग। वहां आज से लगभग दो सौ साल पहले राजा मदकरि नायक का शासन था। प्रजा बड़ी खुशहाल थी। पहाड़ियों से घिरा यह राज्य अपनी सम्पन्नता के लिए दूर-दूर तक प्रसिद्ध था।

उन दिनों मैसूर पर हैदर अली का शासन था। हैदर अली बड़ा ही महत्वाकांक्षी था। हर समय अपने राज्य के विस्तार की बातें सोचा करता। खजाने को बहुमूल्य हीरे-जवाहरातों से भरने की चिंता उसे लगी रहती। उसके कानों में भी चित्रदुर्ग की खुशहाली का समाचार पड़ा। उसने उसे जीतने की सोची। फिर एक दिन अचानक चित्रदुर्ग पर हमला बोल दिया। चित्रदुर्ग राज्य के वीर सैनिकों ने उसके इस हमले को नाकाम कर दिया। हैदर अली ने दूसरी बार फिर हमला किया। इस बार भी उसे मुंह की खानी पड़ी।

हैदर अली था अपनी धुन का पक्का। वह हार मानने वाला नहीं था। इस बार उसने अपनी जीत के लिए पूरी तैयारी की। सेना को अच्छे हथियारों से लैस किया। पिछले हमलों में जो कमियां थीं, उन्हें दूर किया। तीसरी बार उसने बड़ा ही जोरदार हमला चित्रदुर्ग पर कर दिया।

चित्रदुर्ग का राजा भी असावधान नहीं था। वह हैदर अली के इरादों को समझ गया था। उसने भी दुश्मन से अपने किले को बचाने का पूरा इंतजाम कर लिया था। किले में कई महीने के लिए भोजन सामग्री जमा थी। राज्य के वीर सैनिक दिन-रात किले की चौकसी करते रहते थे।

इस बार हैदर अली ने चित्रदुर्ग पर चारों ओर से धावा बोला। उसके जांबाज बहादुर सैनिक किले में घुसने की कोशिश करने लगे। हैदर अली ने किले को चारों ओर से घेर लिया। लेकिन वह किले का बाल भी बांका नहीं कर पा रहा था। उसके सिपाही सीढ़ियां लगाकर किले की दीवार पर चढ़ने की कोशिश करते, परंतु चित्रदुर्ग के सैनिक उन पर ऊपर से बड़े-बड़े पत्थरों की वर्षा करने लगते। वे खौलता हुआ तेल और पानी गिराते। किले की दीवारें बड़ी सख्त और मजबूत थीं। उन पर तोप के गोलों का भी कोई असर नहीं हो रहा था। इस प्रकार कई सप्ताह बीत गए। हैदर अली अभी भी सफलता से कोसों दूर था। अंत में उसने कूटनीति से काम लेने का निश्चय किया। उसने अपने गुप्तचरों को आदेश दिया—"पता लगाओ, किले में प्रवेश करने के लिए कोई सुरंग या गुप्त दरवाजा है या नहीं ?"

किले के पिछले भाग में अंदर जाने के लिए एक सुरंग थी। सुरंग के पास ही किले के बाहर एक कुआं था। पास ही सुरंग में जाने के लिए एक छोटा-सा द्वार बना हुआ था। इसकी जानकारी गिने-चुने लोगों को ही थी। परंतु सावधानी के लिए इसकी सुरक्षा का भी उचित प्रबंध राजा ने किया था। सुरंग की देखभाल का भार उन्होंने ओबा नामक एक सैनिक को सौंपा था। वह सुरंग के नजदीक ही एक झोंपड़ी में अपनी पत्नी ओबी के साथ रहता था। किला दुश्मनों से घिरा हुआ था। दोनों पति-पत्नी हमेशा सतर्क रहते थे।

एक रात चारों ओर घना अंधेरा छाया हुआ था। कहीं से कोई आवाज नहीं आ रही थी। घर में पानी नहीं था। ओबी घड़ा लेकर चुपचाप सुरंग के द्वार से किले के बाहर निकली। कुआं पास ही था। वह कुएं पर जाकर पानी भरने लगी। पानी भरते समय वह पूरी तरह सावधान थी। अंधेरे में ही आंखें फाड़-फाड़कर चारों ओर देख रही थी। अचानक कुछ दूरी पर उसे

Scanned with CamScanner

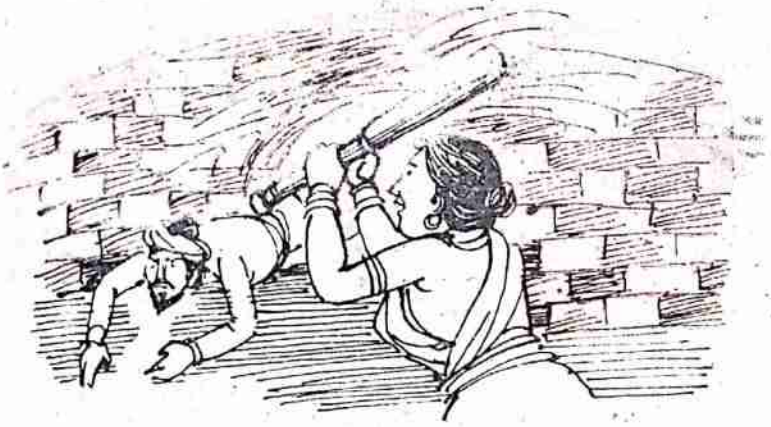

कुछ साए दिखाई पड़े । वह समझ गई कि ये शत्रु के सैनिक हैं । वह एक ओर हटकर ओ में खड़ी हो, उनकी बातें सुनने की कोशिश करने लगी । सैनिक दूर थे । वह पूरी बातचीत नहीं सुन पाई । दो-चार शब्द ही उसके कानों में पड़े । उसे लगा, सैनिकों को सुरंग के द्वार की जानकारी हो गई है । उसने अंदाजा लगा लिया, ये लोग कुछ देर में सुरंग के द्वार पर हमला भी कर सकते हैं । वह अपना काम भूल गई । उसे किले की रक्षा की चिंता थी । उसने घड़ा कुएं के पास छोड़ दिया । धीरे-धीरे सरकती हुई सुरंग के भीतर पहुंची । वह अपने पति ओबा को यह सब बता देना चाहती थी । परंतु उसने देखा, उसका पति वहां नहीं था ।

बड़ी गम्भीर समस्या थी । बाहर शत्रु के सैनिक घात लगाए थे । किसी भी क्षण उनका हमला हो सकता था । इधर ओबी अकेली थी । वह सोचने लगी—'यदि शत्रु सुरंग में आ गए, तो बड़ा भारी अनर्थ हो जाएगा । चित्रदुर्ग शत्रुओं के अधिकार में चला जाएगा । बहुत-सी जानें जाएंगी।

ओबी ने साड़ी का फेंटा अच्छी तरह से कस लिया । घर में एक मूसल पड़ा था, जो धान कूटने के काम आता था । उसे मजबूती से पकड़कर सुरंग के द्वार के पास आ गई । फिर एक ओर आड़ में छिपकर खड़ी हो गई ।

थोड़ी देर के बाद सुरंग के द्वार के बाहर हलचल होने लगी । वह समझ गई, शत्रु द्वार तक आ पहुंचे हैं । वह मूसल लिए तैयार थी । कुछ क्षणों बाद एक सैनिक ने द्वार के अंदर सिर घुसाकर भीतर की टोह लेनी चाही । ओबी ने मूसल का कसकर वार उसके सिर पर किया । वह कुछ बोल भी नहीं सका, तुरंत बेहोश होकर गिर पड़ा । एक तो गया ! वह दूसरे सैनिक की राह देखने लगी । फिर एक और सैनिक का सिर अंदर आया । उस पर भी मूसल का जोरदार वार हुआ । वह भी बिना कुछ बोले, बेहोश होकर गिर पड़ा । इन दोनों सैनिकों को उसने दो-चार मूसलों की करारी चोट और मारी । फिर फुर्ती से उन्हें घसीटकर, द्वार से कुछ दूर ले आई । यह करने के बाद वह तेजी से वापस आकर फिर अपनी जगह डट गई । इसी प्रकार एक-एक करके शत्रु के पचीस सैनिकों को ओबी ने मौत की नींद सुला दिया । वह मूसलधारिणी दुर्गा की तरह सुरंग के द्वार पर चौकस खड़ी थी । अब शत्रु का कोई और सैनिक वहां नहीं बचा था, जो उसके मूसल की प्यास बुझाता ? उसने बाहर झांककर देखा । दूर-दूर तक सन्नाटा था ।

काफी देर के बाद उसका पति आया । वहां जो कुछ भी हुआ था, उसे देखकर, वह हैरान हो गया । उसने फौरन ही किले के अंदर जाकर खतरे की घंटी बजा दी । खतरे की सूचना पाकर, सैनिक सुरंग के द्वार की ओर दौड़ पड़े । राजा मदकरि नायक भी भागे-भागे वहां पहुंचे ।

वहां उन सबों ने एक अनोखा दृश्य देखा—उनके सामने शत्रु के सैनिकों की लाशों का ढेर पड़ा था । द्वार पर ओबी मूसल थामे खड़े थी । उसकी इस अनोखी बहादुरी को देखकर सब आश्चर्य चकित रह गए । उसकी चतुराई, साहस और बहादुरी के कारण हार होते-होते बच गई थी ।

दूसरे दिन किले में विजय पर्व मनाया गया । राजा ने भरे दरबार में ओबा और ओबी का सम्मान किया । उन्हें पुरस्कार में काफी धन भी दिया । राजा ने घोषणा की—"जिस राज्य में ओबी जैसी वीर बालाएं हों, उसे ताकतवर दुश्मन भी जीत नहीं सकता ।"

चित्रदुर्ग राज्य की सारी जनता ओबी की जय-जयकार कर रही थी । आज भी वहां के लोक गीतों में ओबी की इस अद्‌भुत वीरता का गुणगान बड़े गौरव के साथ किया जाता है । ●

Scanned with CamScanner

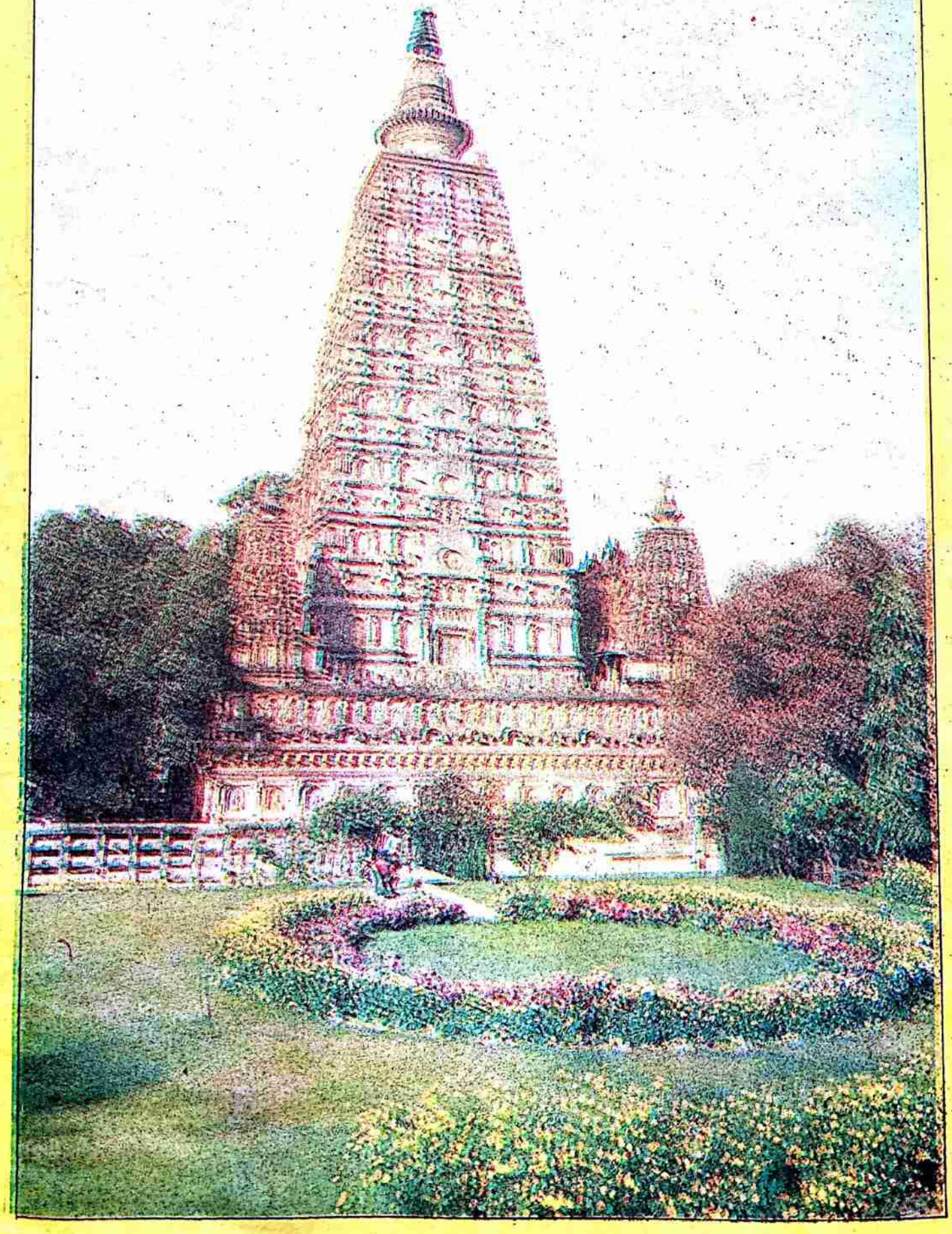

बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर

बुद्ध मंदिर बोध गया

Scanned with CamScanner

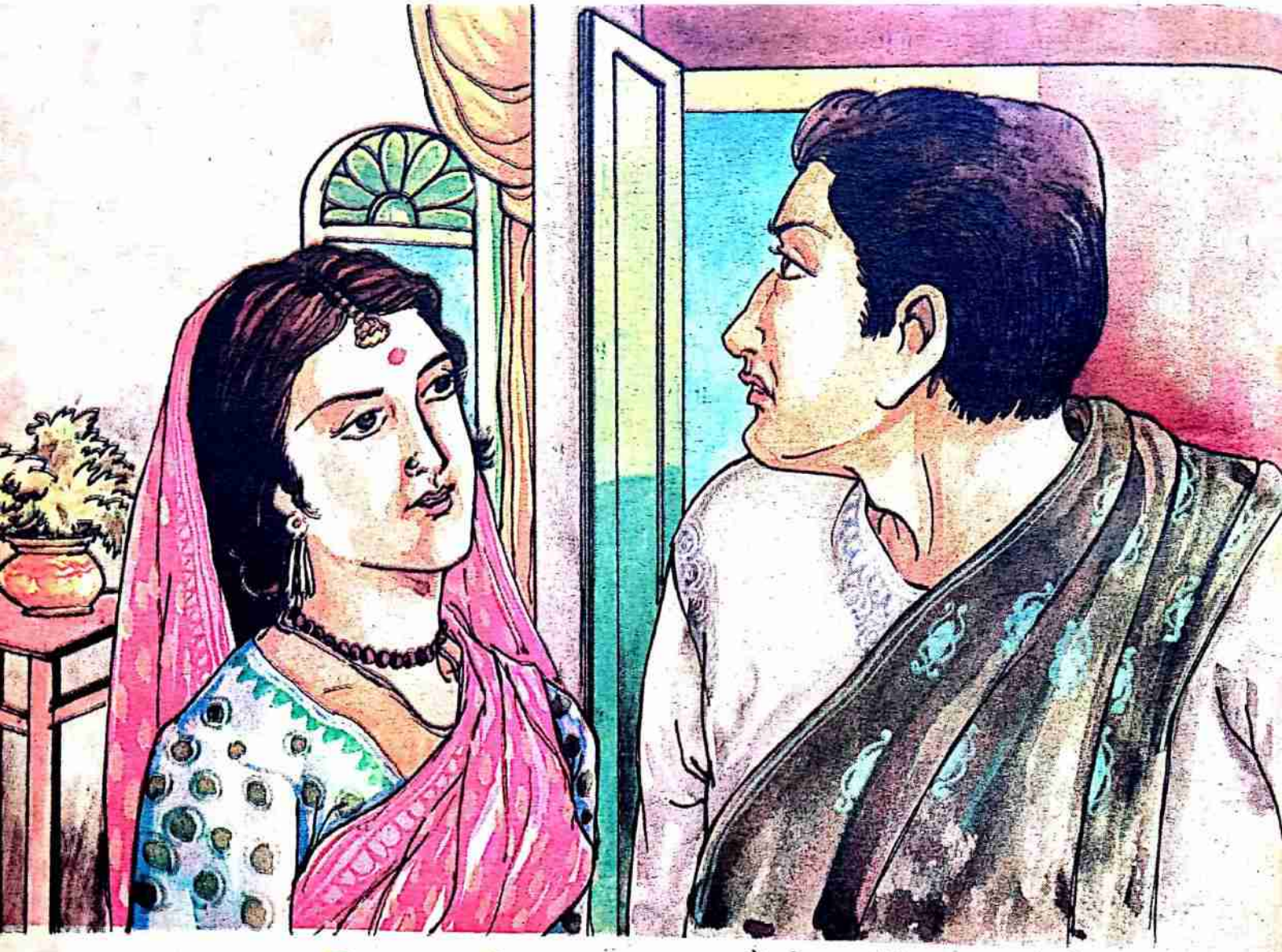

बाबा खिचड़ीदास

— घनश्यामदास बिड़ला

हमारे हरिया की मां में आवश्यकता से कहीं अधिक श्रद्धा है।

मैं भी श्रद्धा का विरोधी नहीं हूं। केवल बुद्धिवादी ही नहीं हूं, श्रद्धा का भी पुजारी हूं; पर बुद्धि को ताक में रखने का पक्षपाती नहीं हूं। स्वयं भगवान ने भी गीता में साफ-साफ कहा है— 'बुद्धौ शरणम् अन्विच्छ' अर्थात् बुद्धि की शरण ले। मेरा कथन है कि श्रद्धा ठीक है, पर अक्ल को खटाई में डालना मूर्खता को अपनाना है।

पर हरिया की मां न मेरी मानती है, न भगवान की। यही हमारे झगड़े की बुनियाद है। इस प्रश्न पर अक्सर हमारी झपट भी हो जाया करती है। पर अब तक मैं उसे हरा नहीं पाया, बल्कि वह तो यह समझती है कि मैं अंग्रेजी पढ़कर नास्तिक हो गया हूं और नरक के रास्ते जा रहा हूं।

मैंने लाख समझाया कि ऐसा कोई खतरा नहीं है, पर हरिया की मां तो ठहरी मेरे शरीर और आत्मा दोनों की रक्षक। शरीर को मोटा-ताजा रखने के लिए तो वह मुझे चुपड़ी देती है। हालांकि मेरे दीर्घ जीवन में वह रोड़ा हो सकता है। पर मोटापे में उसका इतना विश्वास है, जितना कि श्रद्धा में और आत्मा को तंदुरुस्त रखने के लिए घंटों मुझसे बकवास करती रहती है और उपदेश के मारे नाकोंदम कर देती है। पर सुनना भी पड़ता है।

पर ज्यादा शास्त्रार्थ का नुक्ता है, हमारे पड़ोसी का कुत्ता। हमारे पड़ोसी खां साहब, भूरे खां साहब, जिले के कलेक्टर हैं। मैं भी सरकारी मुलाजिम हूं। हम दोनों पुराने यार-दोस्त होते हैं।

Scanned with CamScanner

इन भूरे खां साहब के यहां एक कुत्ता है। उसके बारे में यह शोहरत फैला दी गई है कि वह कोई पुराने जनम का पहुंचा हुआ औलिया है, जो किसी दुर्घटना के कारण कुत्ता बन गया है। अब भी राम-राम रटता रहता है और भजन-स्मरण में अपना जीवन व्यतीत कर रहा है। बस, इस किंवदंती को हमारे हरिया की मां ने वेद-वाक्य मान रखा है।

अव्वल तो किसी पहुंचे हुए राम-राम रटने वाले औलिया को भूरे खां के यहां क्यों, किसी हरचरनदास के घर जाना चाहिए था। दोयम कुत्ते के कंठ या जीभ की बनावट ऐसी है नहीं कि वह स्वर-व्यंजनों का उच्चारण कर सके। पर हरिया की मां के पास इसका भी जवाब है। वह कहती है— "यह पूरब जनम का पुन्न-प्रताप है।"

चर्चा तो यह छिड़ी कि भूरे खां का कुत्ता एक प्राचीन भक्त है, जो अब राम-राम रटकर अपने संकट के दिन काट रहा है। अब मेरे-जैसा कुशाग्र बुद्धि वाला ऐसी बेसिर-पैर की बात पर कैसे विश्वास कर सकता है, पर हरिया की मां भी अपने विश्वास पर दृढ़ है। इस कुत्ते की कहानी यह बताई गई है कि भूरे खां साहब का कुत्ता 'पूरब जनम' में बाबा खिचड़ीदास के नाम से विख्यात था। काफी नेम-धरम से रहता था। सुबह-शाम गंगा स्नान और कई तरह की उपासनाएं करता था। हर एकादशी को व्रत रखता था। अर्थात् अन्न को जीभ के पास भी जाने नहीं देता था। पारणा के समय वह लेता था सिर्फ गाढ़े दूध की रबड़ी, मिश्री मिलाई हुई कूटू की पूरी और पकौड़ी तथा सिंघाड़े का हलवा। ऐसी कई तरह की बानगियां बनती थीं, जो बाबा हजम करते थे, पर अन्न से उन्हें पूरा परहेज था।

संयोग की बात है, इसे चाहे होनहार कहिए या विधि की चाल, बनिए की लापरवाही से एक दिन बाबा जी ने जो कूटू का आटा मंगाया, उसमें कुछ मैदा मिल गई। इसी आटे की पूरी-पकौड़ी बनीं और बाबा जी खा भी गए। उन्हें शायद कुछ वहम तो हुआ कि यह निरा कूटू का आटा नहीं है, पर आंख मींचकर इसको बर्दाश्त कर गए। बस, इस छोटी-सी बात पर एकादशी ने बाबा जी को शाप दे डाला कि हो जा कुत्ता। बस, खिचड़ीदास जी कुत्ते के अवतार होकर भूरे खां साहब के यहां कुतिया के पेट से उतरे। खिचड़ीदास जी अब बन गए कुक्कर। यह इस कुत्ते की कथा बताई गई।

घनश्यामदास बिड़ला

अब यह भी आप जरा पक्ष छोड़कर सोचिए कि शाप खिचड़ीदास को क्यों दिया ? यदि एकादशी को अन्न से आपत्ति थी, तो कुक्कर बनाना था उस बनिए को, जिसने मिलावटी आटा बेचा। पर वह बनिया तो बच गया और सपाटे में आ गए खिचड़ीदास जी। जैसे सरकारी दफ़्तरों में अंधेर होता है, वैसे ही एकादशी के दरबार में भी कोई इंसाफ नहीं था और इस गैर-इंसाफी में भुगतना पड़ा खिचड़ीदास जी को। यह कथा हरिया की मां ने पूरी हजम कर रखी थी।

यह किसी ने नहीं पूछा कि इस कथा का कोई यथेष्ट प्रमाण भी है क्या ! हरिया की मां कहती थी— "ईश्वर है, इसका क्या प्रमाण ? मुझे तो इसका पूरा यकीन है, नहीं तो यह कुत्ता जी राम-राम कैसे रटते।"

मैंने कहा— "कहां रटता है राम-राम ?" तो हरिया की मां कहती है— "चलकर देख न लो, तुम्हारा अविश्वास भी दूर होगा और दर्शन का लाभ भी होगा। हाथ कंगन को आरसी क्या ? तसल्लीबख्श

Scanned with CamScanner

मुलाकात ही क्यों न कर लो ?"

मेरी अपनी भी कुछ हैसियत है। सरकारी महकमों में साख भी है। इस तरह का मैं कदम उठाऊं, तो यार-दोस्त क्या कहेंगे— इसकी भी शर्म थी। पर दूसरे पलड़े में हरिया की मां का आग्रह था, जिसने पलड़े को झुका दिया और एक कमजोरी के क्षण में मैंने कुत्ते से सम्मेलन करने की हां भी भर ही ली। हां भरने के बाद कुछ मिचलाहट-सी हुई, पर 'अब पछताए क्या होत है, जब चिड़िया चुग गई खेत।' अब इस वादे से मुकरना नामुमकिन था।

खैर, तिथि निश्चित हुई और समय भी। हरिया की मां तो साथ होने ही वाली थी, पर मोहल्ले के कुछ नौजवान भी इस मजाक को देखने के लिए साथ हो लिए। कुछ हरिभक्त श्रद्धालु भी शरीक हो गए। इस भीड़-भड़क्के के साथ हमारा जुलूस घर से निकलकर भूरे खां साहब के घर पहुंचा।

भूरे खां साहब का कुत्ता था— अलसेशियन। अलसेशियन वैसे ही खूंखार होते हैं, और यह तो अलसेशियनों में रुस्तम था। दरवाजे पर लेटा था। कुत्ते ने गुर्राकर मेरी ओर जो ताका, तो मेरा कलेजा बैठ गया। न तो इस कुत्ते को मेरी सूरत ही पसंद आई, न पसंद आया मेरा जुलूस। भीड़ को देखकर तो वह आग-बबूला हो उठा। मैंने उसकी खूंखार तबीयत को देखकर ही समझ लिया कि खैरियत नहीं है। पर वापस भागना भी आसान नहीं था। हरिया की मां भी तो थी, वह अब कब वापस जाने देती!

कुत्ते ने हमारे मजमे को नापसंद किया, यह तो जाहिर था। वह चट से उठ बैठा और शोरगुल सुनकर तो वह भड़क ही उठा।

वह भड़का और मेरा दिल धड़का। कुछ पीछे हटने की कोशिश करने लगा, तो हरिया की मां ने मेरी पीठ पर दोनों हाथ रखकर आगे धकेलने की कोशिश की। मैंने कहा— "हरिया की मां, यह क्या करती हो ? देखती नहीं, आगे खतरा है ?"

उसने कहा— "कैसी भोली बातें करते हो ! खतरा कहां, सब्द्राग्य है। तीर लगी नाव को क्या फिर से मंझधार में ले जाना है।"

मैं भी तीर लगी नाव को मंझधार में ले जाना नहीं चाहता था। मंझधार से डरता था। पर इस शब्द के माने हमारे दोनों के भिन्न-भिन्न थे। हरिया की मां के माने में, तीर था कुत्ता और मंझधार था हमारा घर। पर मेरे माने में तीर था घर और मंझधार था कुत्ते के नीचे और ऊपर के जबड़ों के मध्य में स्थित पैने-पैने दांत। इस मंझधार के डर के मारे मैं कांप रहा था। पर अब कोई चारा नहीं रह गया।

पीछे से हरिया की मां ने धकेला। इस धकेल के दबाव में मैंने एक कदम आगे रखा और कुत्ता सतर्क होकर लगा भौं-भौं करने। मैंने कहा— "हरिया की मां, कुत्ता काटेगा। यह भों-भों कर रहा है।"

हरिया की मां ने कहा— "आपकी अकल पर पर्दा पड़ गया है, यह तो ओम्-ओम् रटता है। इसके बाद यह राम-राम रटेगा।"

मैंने कहा— "क्या खाक-पत्थर कहती हो। कैसा ओम्-ओम्। इसने तो दांत निकाल रखे हैं और काटने पर उतारू है।" पर हरिया की मां ने एक न सुनी। पीछे से धकेलती ही गई। मैं कुछ ऐंठता था, मानो शरीर में धनुष-बाय आ गया हो। पर हरिया की मां

Scanned with CamScanner

का चेहरा मारे संतोष के प्रफुल्लित था।

इस तना-तुनी में कुत्ता भी अपने धीरज को खो बैठा और उछलकर चबा गया मेरी एक पूरी अंगुली। मैंने चीख मारी और साथ ही मारे दर्द के अनायास ही मुंह से— 'हे राम, हे राम' निकल गया। हरिया की मां ने कहा— "सुना, महात्मा राम-राम रटने लगा है।"

मैंने कहा— "नरक में जाय तेरा महात्मा। सुनती नहीं, यह कुत्ता नहीं, यह तो मैं राम-राम चिल्ला रहा हूं।" पर हरिया की मां ने इसका समाधान इस तरह किया कि बाबा जी मेरी जिह्वाग्र पर बैठकर राम-राम रट रहे हैं। ऐसी पगली से अब कौन झगड़े!

इस दर्द की बेचैनी में शास्त्रार्थ करना भी मेरे लिए असम्भव था और क्रोध के मारे शरीर भी कांप रहा था। मेरी लकड़ी हाथ में होती, तो उसकी खोपड़ी को फोड़कर मैं टुकड़े-टुकड़े कर डालता। अब तो मुसीबत यह थी कि लकड़ी तो थी नहीं और कुत्ता अपने दांत निकालकर, मुझे पछाड़कर मेरी छाती पर चढ़ बैठना चाहता था।

खुशबख्ती से ऐन मौके पर भूरे खां साहब ने जब इस धमाचौकड़ी का शोर सुना, तो घर से बाहर निकल आए। कुत्ते को डांटा, तो कुत्ता दुम दबाकर बैठ गया और मुझे देखकर आश्चर्य से कहने लगे— "अरे मुंशी कबड्डीलाल जी, मेरे कुत्ते के साथ यहां क्या मखौल कर रहे हो?" कैसे समझाऊं कि मखौल नहीं, मैं तो अपनी जान की बाजी पर खेल रहा था और जाल में फंसी हुई चिड़िया की तरह हरिया की मां को बहेलिए के रूप में देख रहा था।

खैर, मरहम-पट्टी हुई। डाक्टर भी आया। हमारी मुलाकात तसल्लीबख्श तो नहीं हुई, पर खां साहब ने मरहम-पट्टी बांधकर चाय-वाय पिलाई। गुलाब जामुन खिलाए और हम जिंदा वापस घर पहुंच गए, यही तसल्लीबख्श बात हुई।

पर हरिया की मां को न दिल-धड़कन हुई, न बेचैनी हुई, उलटे उसे तो संतोष हुआ कि आखिर मैंने महात्मा का दर्शन कर ही लिया। ●

शुभ शकुन

—कविराज ओमप्रकाश

समुद्र में एक द्वीप है। वहां तट के पास वाली ऊंची चट्टान पर मछली का चित्र बना हुआ है। कोई नहीं जानता कि वह चित्र किसने और कब बनाया। हां, उसे लेकर एक कहानी जरूर कही-सुनी जाती है। द्वीपवासी इसे अपने किसी अज्ञात पुरखे की कलाकारी बताते हैं।

समुद्र के किनारे एक नगर था सागरपुर। कुलभूषण सेठ वहां के धनी व्यापारी थे। उनका इकलौता बेटा था विजय। उसे घूमने-फिरने का बेहद शौक था। समुद्र यात्रा का तो जैसे वह दीवाना था। अक्सर ही अपनी नाव में बैठकर अकेला निकल जाता। मां-बाप मना करते, तो हंस देता। कहता—"खतरा तो कायर के लिए होता है।"

पूर्णिमा की रात। समुद्र में ज्वार आया हुआ था। विजय को न जाने क्या धुन समाई। अपनी नाव लेकर निकल पड़ा। चांदनी ने लहरों पर जैसे चांदी बिखरा दी थीं। विजय मस्ती से गुनगुनाता नाव खे रहा था। नाव लहरों के साथ उठ-गिर रही थी।

तभी एक बड़ी लहर ने विजय की नाव को जोर से ऊपर उछाल दिया। वह हवा में उड़ता हुआ-सा एक द्वीप पर जा गिरा। भाग्य अच्छा था। वह चट्टान पर नहीं, घने पेड़ पर गिरा।

विजय को चोट अधिक नहीं आई, पर बेहोश हो गया। एक डाल पर उसका आधा शरीर इधर, आधा उधर झूलने लगा। पेट पर दबाव पड़ा, तो पेट में भरा पानी निकल गया। कुछ घंटे बाद उसे होश आ गया। अपने को यूं पेड़ पर लटके देख, घबरा गया। फिर किसी तरह नीचे उतरा। उसने याद करने का प्रयास किया, तो सिर में दर्द होने लगा। कुछ भी तो याद नहीं आ रहा था। आघात के कारण विजय अपनी स्मृति खो बैठा था। बेहोशी से पहले वाला विजय जैसे कोई और ही था।

विजय द्वीप पर भटकने लगा। कुछ दूर पर

Scanned with CamScanner

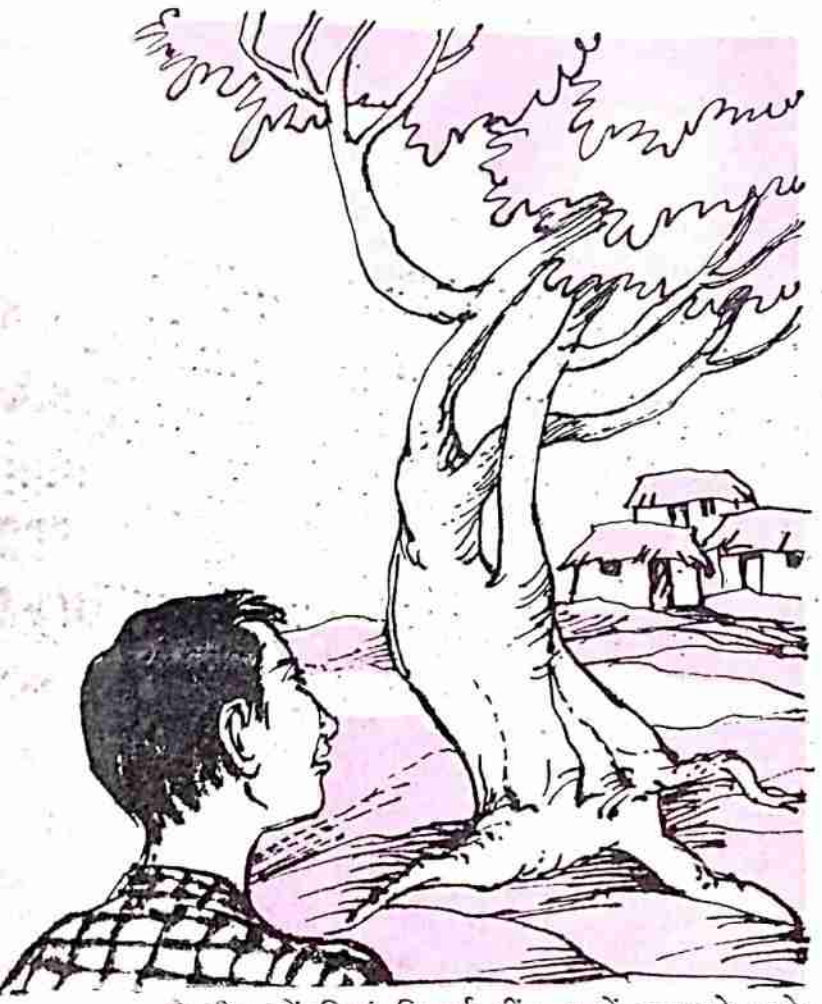

दो-तीन झोंपड़ियां दिखाई दीं। उनमें मछुआरे रहते थे। उन्होंने एक युवक को लड़खड़ाते हुए अपनी ओर आते देखा, तो चौंक पड़े। उस द्वीप पर वर्षों से कोई बाहरी आदमी नहीं आया था।

मछुआरों के मुखिया ने विजय से पूछा—"तुम कौन हो ? कहां से आए हो ?"

विजय ने जवाब दिया—"मैं कोई नहीं हूं। मैं पेड़ से आया हूं।"

विजय का उत्तर सुन मछुआरे चौंक उठे। वे कुछ समझ न पाए। उनके बार-बार पूछने पर विजय कुछ न बता सका।

मछुआरों ने विजय को भोजन दिया—बदलने को कपड़े दिए। अब विजय उनके साथ रहने लगा। मछुआरों के साथ मछली पकड़ने जाता। उन्हीं की तरह रहता। इसी तरह दिन बीतने लगे।

उधर विजय के मां-बाप का रो-रोकर बुरा हाल था। उन्होंने सब जगह बेटे को तलाश किया, पर वह भला कहां मिलता!

एक दिन विजय मछुआरों के साथ द्वीप के तट पर खड़ा था, तभी लहरों पर दो मछलियां तैरती नजर आईं। उनका रंग सफेद था, जिस पर काली धारियां बनी थीं। मछलियों को देख, मछुआरे चिल्लाने लगे। सफेद-काली मछलियों को चमत्कारिक माना जाता था। कहते थे कि ये मछलियां गहरे समुद्र में रहती थीं। कभी-कभी ही समुद्र की लहरों पर दिखाई पड़ती थीं। मछुआरे आपस में बातें करने लगे—"भला, आज ये मछलियां क्यों आई हैं ?"

फिर तो दो काली-सफेद मछलियां रोज ही दिखाई देने लगीं। मछुआरों को लगा, मछलियां उस युवक के आने के बाद ही नजर आई हैं। वे उसका और भी ध्यान रखने लगे। मछुआरे जब भी इकट्ठे होते, तो यही बातें करते—'यह युवक कौन है, कहां से आया है ? क्या इन मछलियों का इससे कोई सम्बंध है ?'

रात को विजय की नींद खुल जाती और वह तट पर आ खड़ा होता। रात में उसे दोनों मछलियां अपनी तरफ बढ़ती नजर आतीं। वह मछलियों की ओर बढ़ने लगता, तो वे लोप हो जातीं। इस दृश्य को मछुआरों ने भी कई बार देखा था। वे सोचते थे—'अगर काली-सफेद मछलियों को पकड़ा जा सके, तो शायद उनका भाग्य चमक जाए।'

इसके बाद मछुआरों ने उन मछलियों को पकड़ने के लिए जाल डालने शुरू किए, पर दोनों मछलियां जैसे जाल में आकर भी निकल जाती थीं, न जाने कैसे !

एक दिन विजय अस्वस्थ था। वह झोंपड़ी में लेटा रहा। उसने भोजन भी नहीं किया। मन परेशान था। आंखों के सामने कुछ चित्र उभरते और फिर खो जाते। रात हुई। समुद्र चांदनी में चमकने लगा। विजय की झोंपड़ी से समुद्र दिखाई दे रहा था। एकाएक उसने उन्हीं मछलियों को देखा। वे लहरों पर उछल रही थीं। विजय का मन हुआ, उठे और तट पर

Scanned with CamScanner

चला जाए, पर उसे तेज बुखार था। तभी दोनों मछलियां उछलीं और विजय से थोड़ी दूर पर आ गिरीं। वह हड़बड़ा कर उठने लगा, तो मछलियां लोप हो गईं।

सुबह एक विचित्र दृश्य दिखाई दिया। दोनों मछलियां द्वीप पर बने एक छोटे तालाब में तैर रही थीं। तालाब में बाहर से पानी आने का कोई रास्ता नहीं था। मछुआरे यही सोचकर हैरान थे कि मछलियां उस तालाब में कहां से आ गईं?

तालाब में जाल डालकर मछलियों को पकड़ लिया गया। मुखिया ने कहा—"ये विशेष मछलियां हैं। इन्हें मारना नहीं चाहिए। हम इन्हें लेकर शहर चलेंगे। हो सकता है, इनके अच्छे दाम मिल जाएं।"

बस, कार्यक्रम बन गया। दोनों काली-सफेद मछलियों को बड़े-बड़े मिट्टी के गोल पात्रों में रखकर मुंह बंद कर दिया गया। फिर दो-तीन मछुआरे नाव में जा बैठे। उन्होंने विजय को भी साथ ले लिया।

नाव कई घंटे की यात्रा के बाद सागरपुर पहुंच गई। मछुआरे मछली के पात्रों को लेकर बाजार की तरफ चले। तभी विजय को उसकी मां ने देख लिया। वह मंदिर से लौट रही थी। देखते ही दौड़कर बेटे से लिपट गई। हिचकियां भरकर रोने लगी। बात की बात में वहां भीड़ लग गई।

विजय मां को नहीं पहचान सका। बार-बार कह रहा था—"आप कौन हैं? मैं आपको नहीं पहचानता।" तब तक किसी ने विजय के पिता को सूचित कर दिया। वह भी दौड़े-दौड़े चले आए।

उसके मां-बाप ने मछुआरों से बात की। उन्हें काफी धन देने का आश्वासन दिया, फिर कई हजार रुपए दे भी दिए।

मछुआरों को भला क्या आपत्ति होती? वे प्रसन्न थे कि एक खोया बेटा, अपने मां-बाप से मिल गया। उन्होंने कहा—"यह सब इन मछलियों के कारण सम्भव हुआ। ये आपको हमारी भेंट हैं।" कहकर मछुआरों ने पात्रों पर बंधा कपड़ा हटाया, तो चौंक पड़े। दोनों काली-सफेद मछलियां लोप हो गई थीं। वे चकित खड़े रहे। यह चमत्कार उनकी समझ में नहीं आ रहा था।

कुछ देर बाद मछुआरे नौका में बैठकर द्वीप की ओर चल दिए। विजय अपने माता-पिता के साथ चला गया। रास्ते भर मछुआरे आपस में इसी विचित्र घटना की चर्चा करते रहे। मुखिया ने कहा—"वे मछलियां इसीलिए आई थीं कि मां-बाप को उनका खोया बेटा मिल जाए। काम होते ही मछलियां गायब हो गईं। अब भला क्यों दिखाई देंगी।"

इलाज के बाद विजय की स्मरण शक्ति लौट आई। इसके साथ ही वह द्वीप पर मछुआरों के बीच बिताए गए दिन भूल गया। पर द्वीपवासी इस विचित्र घटना को कभी नहीं भूल सके। एक मछुआरे ने चट्टान पर मछली का चित्र बनाया, हू-बहू वैसा ही चित्र। द्वीप की ओर बढ़ने वाले को वह चित्र दूर से दिखाई देता था। द्वीपवासी उसे शुभ शकुन मानते थे।

Scanned with CamScanner

कुलदेवी

—रामपाली भाटी

बहुत पहले की बात है । राजस्थान के सीकर जिले में एक गांव था घांघू । वहां एक बूढ़ी अपने बेटे हर्ष व बेटी जीशा के साथ रहती थी । बेचारी बूढ़ी अधिकतर बीमार रहती थी । हर्ष व जीशा अभी बच्चे ही थे । पिता का साया पहले ही सिर से उठ चुका था । मां की बीमारी ने उन्हें समझदार बना दिया था । जीशा अपने घर का सारा काम व मां की देखभाल बड़ी लगन से करती थी । हर्ष अपनी बहन को बहुत प्यार करता था । एक दिन दोनों भाई-बहन बहुत घबरा उठे । उस दिन उनकी मां की तबियत बहुत बिगड़ गई थी । बच्चे मां के पास चुपचाप बैठे, आंसू बहा रहे थे । अचानक मां ने आंखें खोलीं । बच्चों को प्यार से देखा । वह हर्ष को जीशा का हाथ पकड़ा कर बोलीं—"हर्ष बेटे ! मेरे सिर पर हाथ रख, मुझे वचन दे, तू अपनी बहन को इसी तरह से प्यार करता रहेगा । सदा इसका ध्यान रखेगा । इसे कभी दुखी नहीं होने देगा ।"

हर्ष ने मां के सिर पर हाथ रखकर उसे वचन दिया । कुछ दिन बाद मां का स्वर्गवास हो गया । हर्ष व जीशा अनाथ हो गए । जीशा मां की याद कर रोती, तो भाई बहन के आंसू पोंछता । दोनों एक-दूसरे को धीरज बंधाते । किसी प्रकार दिन कटने लगे । उनका एक खेत था । हर्ष ने उसकी ओर ध्यान दिया । जीशा घर की देखभाल करने लगी । एक दिन भरी दोपहरी में जीशा अपने भाई के लिए खाना लेकर खेत पर पहुंची । उसके धूप में तमतमाए मुख को देख, हर्ष की आंखों में आंसू छलछला आए । भाई की आंखों में आंसू देखकर जीशा ने समझा—शायद भैया बाजरे की रूखी रोटी देखकर दुखी हो रहे हैं । उसने कहा—"भैया, अब तुम बड़े हो गए हो । घर में भाभी ले आओ । वह हम दोनों की खूब देखभाल करेगी ।"

हर्ष ने बहन की बात ध्यान से सुनी । उसने सोचा—'पत्नी घर में आ जाने से बहन को आराम मिलेगा । इसका अकेलापन भी मिट जाएगा ।' जीशा ने भाई के विवाह के लिए रात-दिन एक कर, लड़की पसंद कर ही ली । कुछ ही दिनों में 'लावणी' गांव की लड़की सुगना से हर्ष का विवाह हो गया । जीशा का मन खुशी से नाच उठा । उसने सोचा—'भाभी अब मुझे मां के समान ही प्यार करेगी ।'

कुछ दिन सब ठीक-ठाक चलता रहा । हर्ष का अपनी बहन पर बहुत स्नेह देख, एक दिन सुगना ने उसके विवाह की बात कही । हर्ष ने उत्तर दिया—"सुगना, जीशा का विवाह तो करना ही है, पर मैं उसे अपने घर से कभी दूर नहीं कर सकता । हम जीशा का विवाह कर, उसके पति को अपने पास ही रख लेंगे ।"

हर्ष की बात सुनकर सुगना चकित रह गई । जीशा के लिए उसके मन में कटुता बढ़ने लगी । एक दिन जीशा ने सुना । उसकी भाभी पड़ोसिन से कह रही

Scanned with CamScanner

थी—"मेरे पति दिन-रात जीशा के सुख की बात सोचते हैं। इस लड़की ने तो मुझे बरबाद ही कर दिया। पता नहीं, कब पराए घर जाएगी।"

सुनते ही जीशा का सिर चकरा गया। वह चुपचाप घर से चल पड़ी। गांव पर गांव पीछे छूटते गए। जीशा के पांव नहीं रुके। अंत में सीकर की पहाड़ियों में पहुंच, तपस्या करने के विचार से जीशा वहीं ठहर गई।

घर लौटने पर जब हर्ष ने जीशा को नहीं देखा, तो वह व्याकुल हो उठा। सुगना से पूछने पर उसने बताया—"ननद जी तो इसी प्रकार गांव में घूमती फिरती रहती हैं। घर के काम में तो उनका मन लगता ही नहीं।" पत्नी के स्वर की कटुता हर्ष की समझ में आई। उसने तीखी नजर से सुगना को देखकर कहा—"तू ने मेरी भोली-भाली बहन को घर से निकाला है। मेरी स्वर्गीया मां की आत्मा दुखाई है। अब संभाल अपना घर। मैं जीशा को ढूंढ़ने जा रहा हूं। लौटूंगा, तो उसे साथ लेकर ही। वरना अब कभी तेरा मुंह नहीं देखूंगा।"

सुगना रोती रही। हर्ष अपनी बहन को ढूंढ़ने चल पड़ा। सात दिन लगातार चलकर वह भी सीकर जा पहुंचा। वहां उसने सुना—सीकर के पहाड़ों में कोई देवी प्रकट हुई है। हर्ष देवी के दर्शन के लिए पहाड़ी पर पहुंचा। उसने देखा, जीशा आंखें बंद किए पहाड़ी की चोटी पर बैठी थी। बहन को देखते ही हर्ष अपनी भूख-प्यास व थकान भूल गया। पास जाकर बोला—"जीशा ! मेरी प्यारी बहन, मुझे क्षमा कर दे। चल, घर चलें।" जीशा के मन में तो भाभी के बोल भाले के समान गड़े हुए थे। उसने भाई की ओर स्नेह से देखकर कहा—"भैया, वह सुगना भाभी का घर है। मेरा नहीं। ईश्वर ने मेरे माता-पिता छीन लिए और भाभी ने मेरा सगा भाई छीन लिया। अब इस संसार में ईश्वर के सिवा मेरा कोई भी नहीं है। तुम घर लौट जाओ भैया ! मैं तो यहीं रहकर तपस्या करूंगी।"

हर्ष ने बहुत कहा, मगर जीशा न मानी। फिर उसने बहन से कहा—"मैंने मां को वचन दिया था, कि तुम्हारी रक्षा करूंगा। तुम घर नहीं लौटती हो, तो मेरा भी लौटना व्यर्थ है। मैं भी यहीं तपस्या करूंगा।"

जीशा ने हर्ष का निर्णय सुना। स्नेह पूर्वक भाई की ओर देखकर वह बोली—"जैसी तुम्हारी इच्छा ! पर तुम यहां मेरे पास बैठकर तपस्या करोगे, तो भाभी नाराज होगी। लो, मैं अपना मुंह दूसरी ओर फेर लेती हूं। तुम भी मेरी ओर अपनी पीठ कर लो। यदि मैं सच्चे मन से अपने भाई को प्यार करती हूं, तो यह पहाड़ी ही हमारी इस दूरी की साक्षी बने।" जीशा के इतना कहते ही वह पहाड़ी बीच से अचानक फट गई। जीशा व हर्ष उसके दो शिखरों पर एक दूसरे की ओर पीठ किए तपस्या में लीन हो गए। समय बीतता गया। आसपास जीशा की घोर तपस्या की चर्चा फैल गई। लोग उसे देवी समझ, उसकी पूजा करने लगे। दोनों भाई-बहन तपस्या करते-करते ईश्वर से जा मिले। पर उनकी यह गाथा आज भी अमर है। जीशा माता आज भी राजस्थान के शेखावटी में देवी के रूप में पूजी जाती है।

Scanned with CamScanner

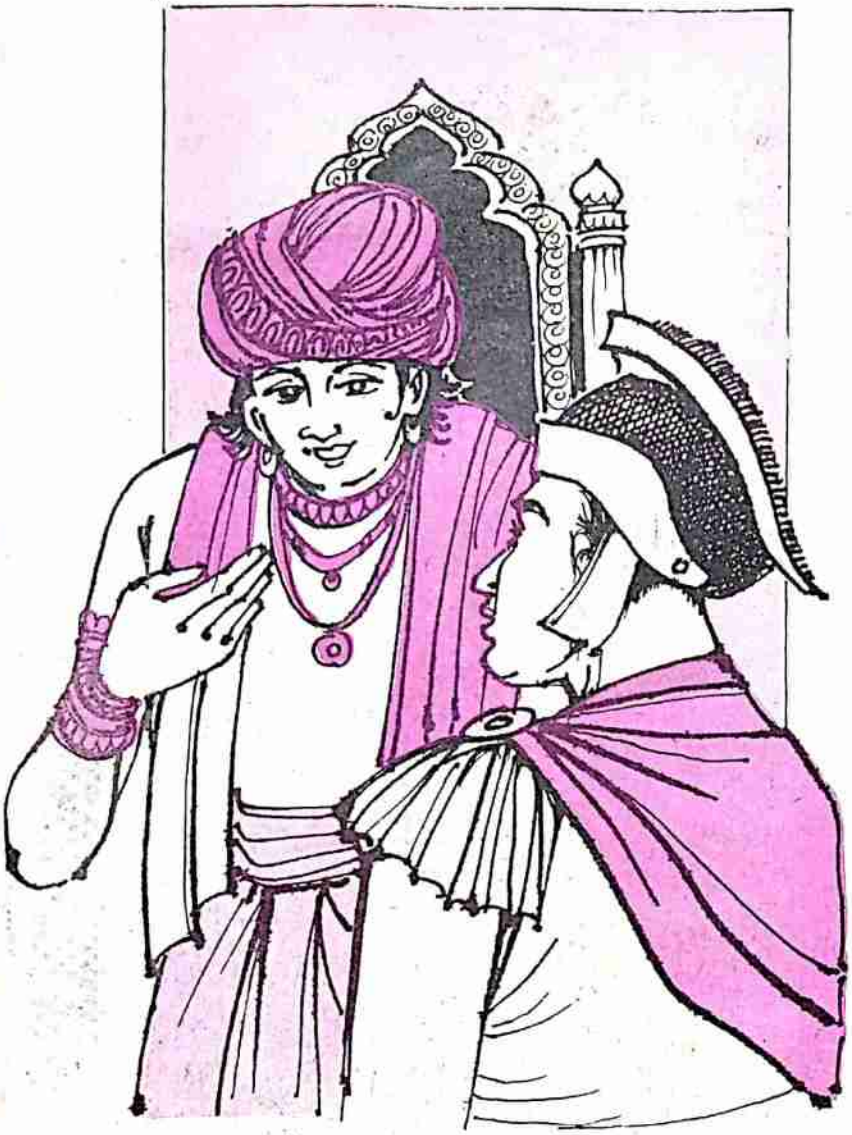

चलो मिलने

—डा. रणवीर रांग्रा

सिकंदर की मृत्यु हो चुकी थी । सेनापति सेल्युकस ने जैसे-तैसे अपना सिक्का जमा रखा था । भारत में तब चंद्रगुप्त मौर्य का शासन था । पाटलीपुत्र से लेकर तक्षशिला तक फैला हुआ साम्राज्य । अपना राज्य बचाने के लिए सेल्युकस ने चंद्रगुप्त से संधि कर ली थी । सम्राट से अपनी बेटी का विवाह कर दिया ।

इस प्रकार सम्बंध बन जाने के कारण सेल्युकस का भारत में आना-जाना बना रहता था । पर महामात्य चाणक्य से उसकी कभी मुलाकात नहीं हो पाई थी । वह कई बार उनसे मिलने की इच्छा प्रकट कर चुका था । हर बार सम्राट हामी भी भर लेते थे, पर मुलाकात न हो पाती । सेल्युकस को आशंका होने लगी कि सम्राट कहीं जान-बूझकर तो उसे चाणक्य से दूर नहीं रख रहे ।

इस बार पक्का निश्चय करके भारत आया था कि चाणक्य से मिलकर ही लौटेगा । उसने महामात्य के दर्शनों की बात कही,तो सम्राट सहर्ष मान गए । पर इतने से ही सेल्युकस को संतोष न हुआ । उसने उलाहने के स्वर में पूछा—"क्या आप मुझे उनके दर्शनों का पात्र नहीं मानते, जो हर बार टाल जाते हैं ?"

सम्राट चंद्रगुप्त उसे क्या बताते कि आचार्य चाणक्य इस विशाल साम्राज्य के निर्माता ही नहीं, समूचे राजतंत्र के सूत्रधार भी हैं । वह दिन-रात राष्ट्र के काम में लीन रहते हैं । उनका एक-एक क्षण अनमोल है । उससे मिलना सरल काम नहीं । स्वयं सम्राट तक उनसे अकारण नहीं मिलते थे । लेकिन चंद्रगुप्त समझ गए कि इस बार सेल्युकस को टालना ठीक न होगा । अतः आश्वासन देते हुए बोले—"निश्चिंत रहें । इस बार महामात्य से आपकी भेंट की व्यवस्था जरूर हो जाएगी ।"

आचार्य चाणक्य से बात करके सम्राट ने एक दिन सेल्युकस को सूचना भिजवा दी कि वह कल महामात्य से मिलने के लिए तैयार रहें । चाणक्य से मिलने को सेल्युकस इतना उत्कंठित था कि उसे रात भर नींद नहीं आई । अगले दिन जल्दी तैयार होकर वह समय से कुछ पहले ही सम्राट के पास पहुंच गया । सम्राट एक सुसज्जित रथ में उसे लेकर चल दिए । भीड़-भाड़ भरी सड़कों पर दौड़ता हुआ रथ, नगर से बाहर निकल आया । फिर एक बस्ती के बाहर रुक गया ।

चंद्रगुप्त एक कुटिया में घुसे । उनके पीछे-पीछे सेल्युकस भी था ।

सेल्युकस ने देखा, सामने कुछ ऊंचे आसन पर फकीर जैसा एक श्यामवर्ण व्यक्ति आंखें मूंदे बैठा है । सम्राट ने भीतर घुसते ही उसे प्रणाम किया । उसके

Scanned with CamScanner

सामने पड़े आसन पर चुपचाप बैठ गए। उनके पीछे वाले आसन पर सेल्युकस बैठ गया। कुटिया में सामान न के बराबर ही था। उस व्यक्ति ने आशीर्वाद के रूप में अपना दायां हाथ उठा दिया। क्षण भर को लगा कि आंखों ही आंखों में उनमें कुछ बात हुई। फिर सम्राट आज्ञा लेकर उठ खड़े हुए, सम्मान पूर्वक पीछे हटते हुए कुटिया से बाहर निकल आए। सेल्युकस सोच रहा था—'न जाने चाणक्य कहां मिलेंगे ?' थोड़ी देर में देखता क्या है कि रथ फिर से राजप्रासाद में लौट आया। वह मन ही मन क्रोधित हो उठा—"महाराज, क्या इस बार भी आपके महामात्य से मुलाकात नहीं होगी ?"

सम्राट चकित होकर बोले—"क्या कहते हैं आप ! अभी हम आ कहां से रहे हैं ? वही तो हैं महामात्य चाणक्य।"

सेल्युकस हक्का-बक्का रह गया। उसने आज तक मंत्रियों को सम्राटों से भी अधिक ठाठ-बाट से रहते देखा था। और चाणक्य थे, जो जंगल में फकीर की तरह अकेले थे। उसने आश्चर्य से पूछा—"क्या इनका कोई संगी-साथी, बंधु-बांधव नहीं है जो वन में अकेले ही पड़े हैं ?"

सम्राट बोले—"आचार्य चाणक्य का नीति वचन है— सत्य मेरी माता है। ज्ञान मेरा पिता है। धर्म मेरा भाई है। दया मेरी बहन है। शांति मेरी पत्नी है और क्षमा मेरी संतान है। ये छह मेरे बंधु हैं, जिन्हें पाकर मैं संतुष्ट हूं।"

सेल्युकस कुछ कह न सका। श्रद्धा से वह नत मस्तक हो गया।

Scanned with CamScanner

बिन गर्मी के गर्मी के दिन

चित्र राजेंद्र कुमार वधवा ; प्रमोद कुमार आंग्रा ;
विजय शर्मा ; रामकृष्ण शर्मा ; देवव्रत बनर्जी

विवेकानंद स्मारक (कन्याकुमारी)

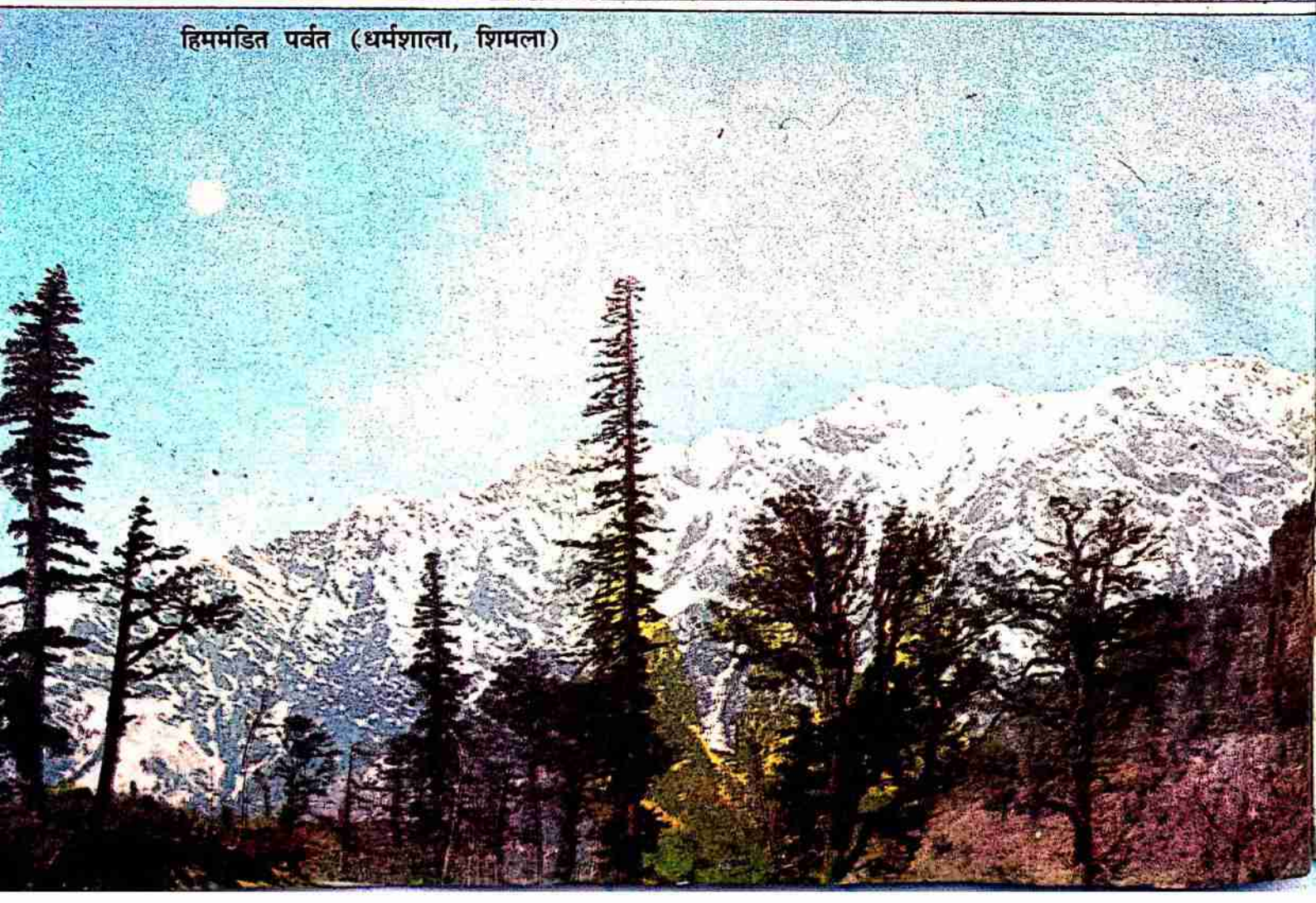

हिममंडित पर्वत (धर्मशाला, शिमला)

Scanned with CamScanner

कैम्पटी फाल (मसूरी)

बर्फ से ढंकी चट्टानें (कुफरी, शिमला)

कोवलम का सागर तट (केरल)

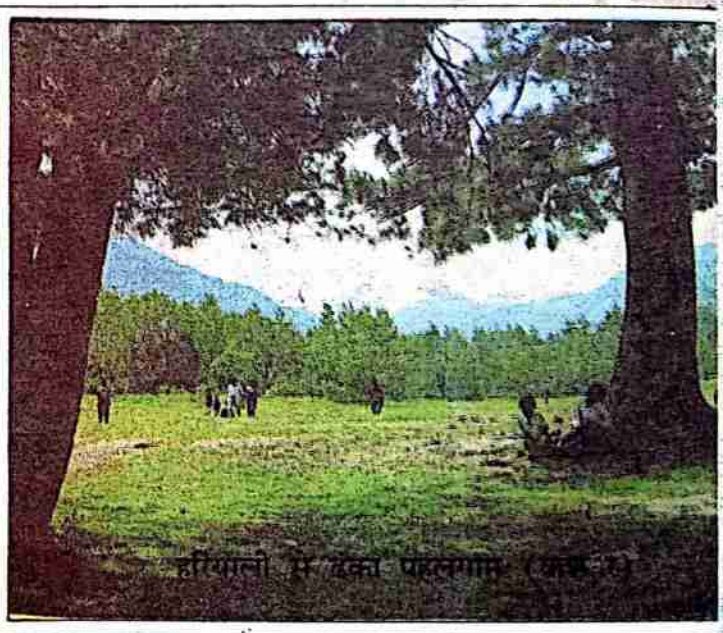

हरियाली में ढका पहलगाम (जम्मू)

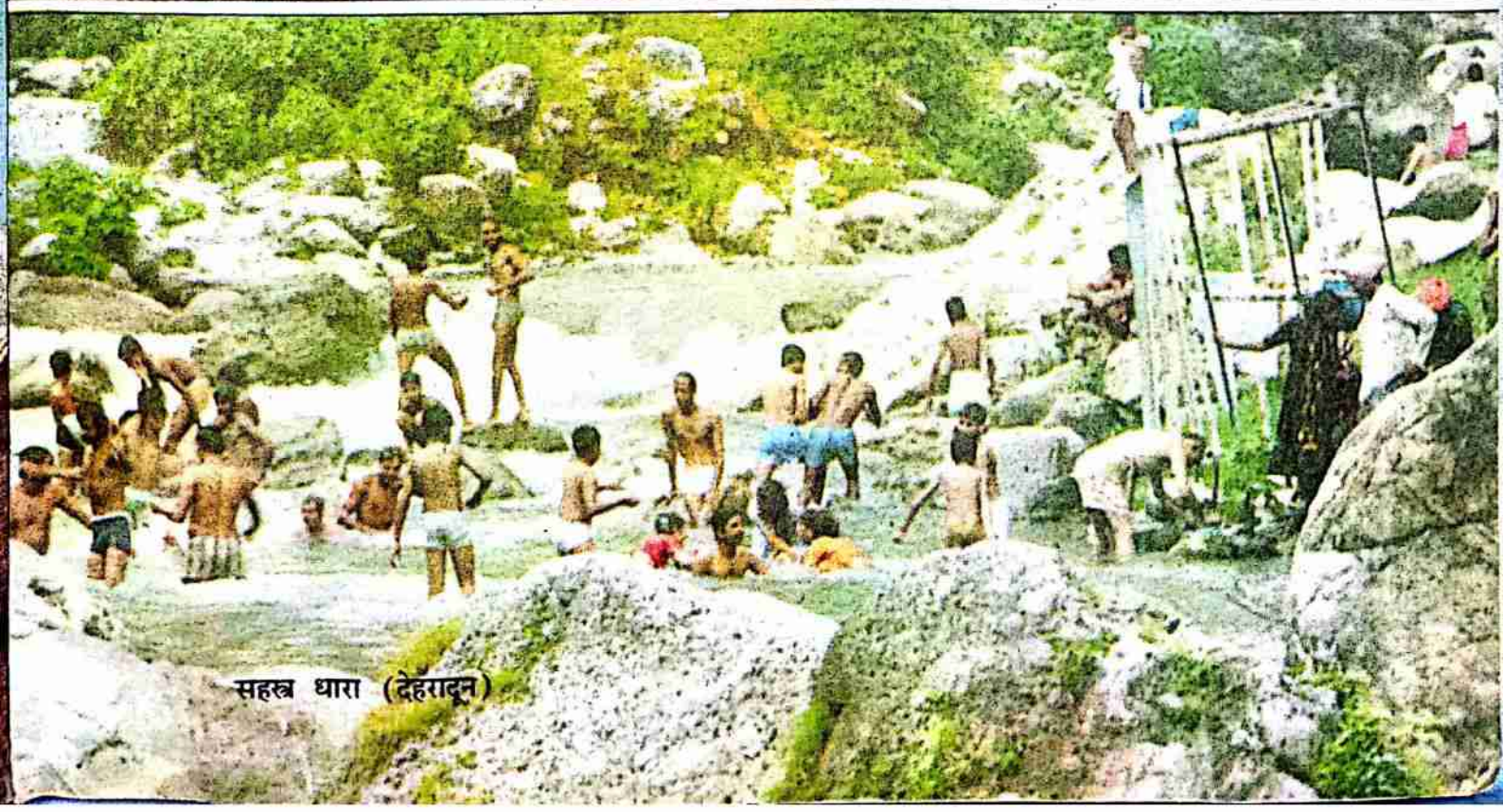

सहस्त्र धारा (देहरादून)

Scanned with CamScanner

बन जा बौना

—जी. ई. फैरो

वे तीनों भाई बहन थे—मार्जोरी, डिक और फिज।

एक रात सब सो रहे थे, तो मार्जोरी की नींद टूट गई। उनका कमरा ऊपर की मंजिल में था। उसे लगा, जैसे मकान के नीचे वाले भाग में पानी भर गया हो। उसने डिक और फिज को भी जगा दिया। तीनों बच्चे नीचे उतरे, तो चौंक उठे। सब तरफ पानी ही पानी भरा था।

पानी पर एक मेज नाव की तरह तैर रही थी। न जाने क्या सोचकर तीनों मेज पर जा बैठे। उनके बैठते ही मेज पानी पर खिसकने लगी। लगता था, जैसे कोई नाव तेजी से बही चली जा रही हो। जब तक वे कुछ कर पाते, मेज घर से दूर चली गई। जहां तक नजर जाती थी, पानी ही पानी दिखाई देता था। शायद समुद्र में भयंकर ज्वार आने से दूर-दूर तक पानी भर गया था।

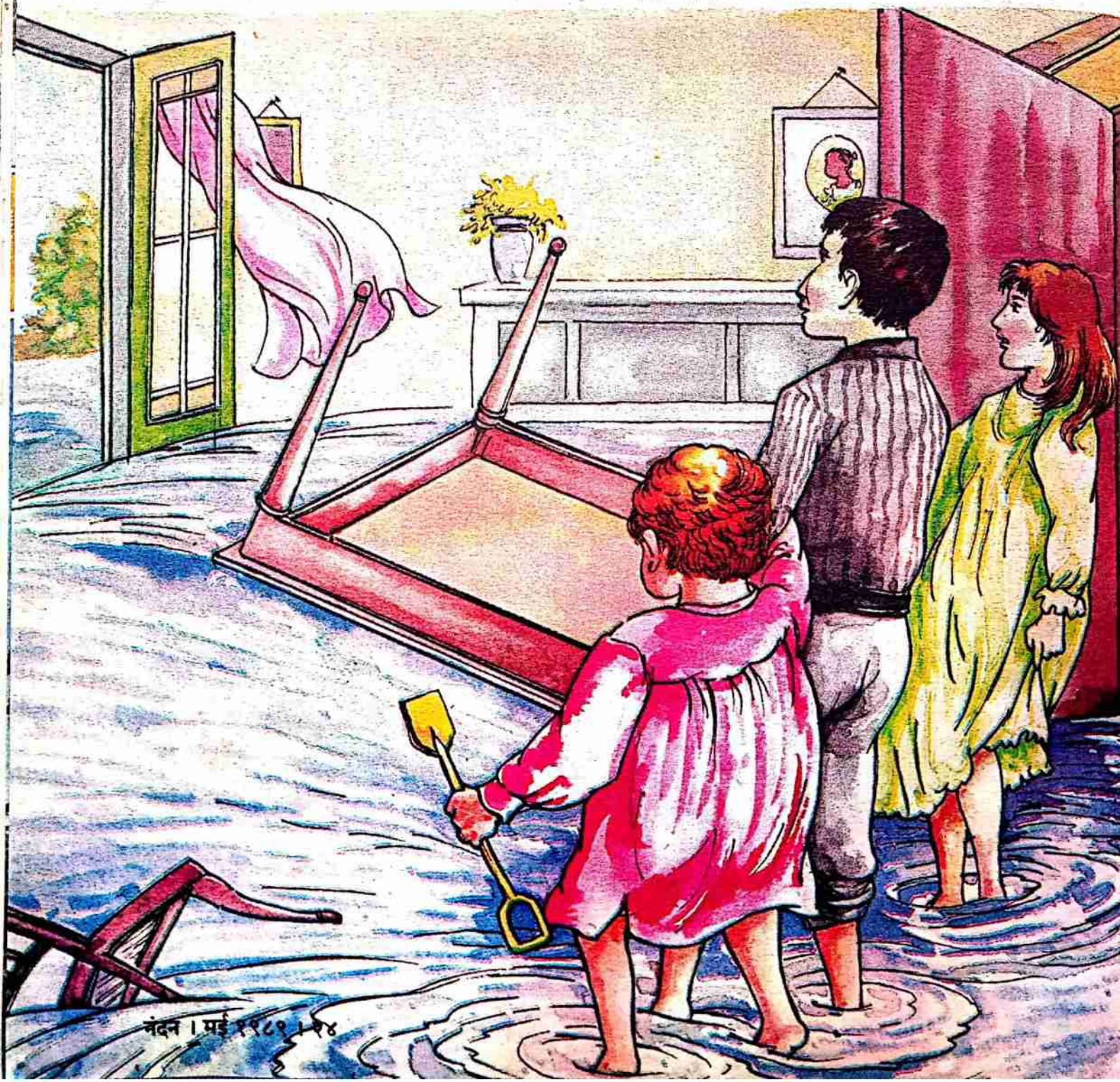

Scanned with CamScanner

तभी पानी पर तैरता हुआ एक विचित्र जीव नजर आया। उसने दूर से ही पुकारा— "कहो बच्चो, कहां जा रहे हो ?"

"अरे, यह तो हमारी तरह बोल रहा है।"— डिक ने फिज से कहा। फिर पूछा— "कौन हो तुम ?"

"मैं डोडो हूं। कहते हैं, पृथ्वी पर मेरी जाति के पक्षी समाप्त हो गए हैं। मैं न जाने कैसे बच गया हूं। पर इस समय मैं जल्दी में हूं। मुझे बहुत दूर जाकर इथियो सारस से मिलना है। और हां, अगर तुम्हें पानजानद्रम मिले, तो उसे मेरे बारे में न बताना। अच्छा, दोस्तों, मैं चला।" और अगले ही पल डोडो अदृश्य हो गया।

"यह पानजानद्रम क्या बला है ?"— डिक ने धीरे-से कहा— "न जाने हम कहां फंस गए हैं ?" इतनी ही देर में मेज पानी पर बहती हुई पहाड़ियों के पास जा पहुंची। वहां उन्होंने एक चट्टान पर कुछ बौनों को खड़े देखा। बौनों ने रस्सी की एक सीढ़ी नीचे लटका दी। तीनों बच्चे बारी-बारी से उस पर चढ़ गए।

चट्टान पर बहुत सारे बौने मौजूद थे। उन्होंने बच्चों को घेर लिया। तरह-तरह के सवाल पूछने लगे। "यह पानजानद्रम कौन है ?"— डिक ने पूछा।

"हमें उससे डर लगता है। हम कुछ नहीं बता सकते।"— बौनों ने कहा। उसी समय सामने की गुफा में रोशनी हो गई। एक शुतुरमुर्ग बाहर आया। उसकी पीठ पर एक आदमी बैठा हुआ था। उस आदमी ने कहा— "बौनो, क्या तुमने डोडो को देखा है ? वह पानजानद्रम के महल से भाग गया है।"

बौने कुछ कहते, इससे पहले ही मार्जोरी बोल उठी— "हां, हमने देखा था डोडो को। वह इथियो सारस से मिलने गया है।"

शुतुरमुर्ग पर बैठे व्यक्ति ने कहा— "मैं पानजानद्रम का राजदूत हूं। तुम्हें डोडो को खोजकर लाना होगा। मैं एक सप्ताह का समय देता हूं।" फिर उसने एक कागज पर कुछ लिखा। और बोला— "मैं तुम्हें एक विचित्र शक्ति देता हूं। इस जादुई कागज को हाथ में लेकर जो इच्छा करोगे, पूरी होगी। पर यह शक्ति तुम्हें डोडो को पकड़ कर लाने के लिए ही मिली है। धोखा देने की कोशिश मत करना।" कहकर शुतुरमुर्ग पर बैठा आदमी न जाने कहां चला गया।

"हम तो पिता जी जितने बड़े होना चाहते हैं।"—फिज और डिक ने कागज छूकर कहा। "और मैं हवा में तैरना चाहती हूं।"— मार्जोरी बोली। अगले ही पल चमत्कार हुआ। फिज और डिक का आकार बड़ा हो गया।, मार्जोरी हवा में तैरने लगी। तीनों बच्चे हंसने लगे। फिर उन्होंने बौनों जितने होने की इच्छा प्रकट की। देखते-ही-देखते तीनों का आकार छोटा होने लगा।

अब उन्हें बौनों ने घेर लिया। वे हंस रहे थे। इन तीनों की परेशानी देखकर खुश थे। तभी एक बौना जादुई कागज उठाकर भाग गया। वह कह रहा था— "अब तुम तीनों को हमेशा इसी रूप में रहना होगा, क्योंकि जादुई शक्ति वाला कागज अब मैं तुम्हें नहीं दूंगा।"

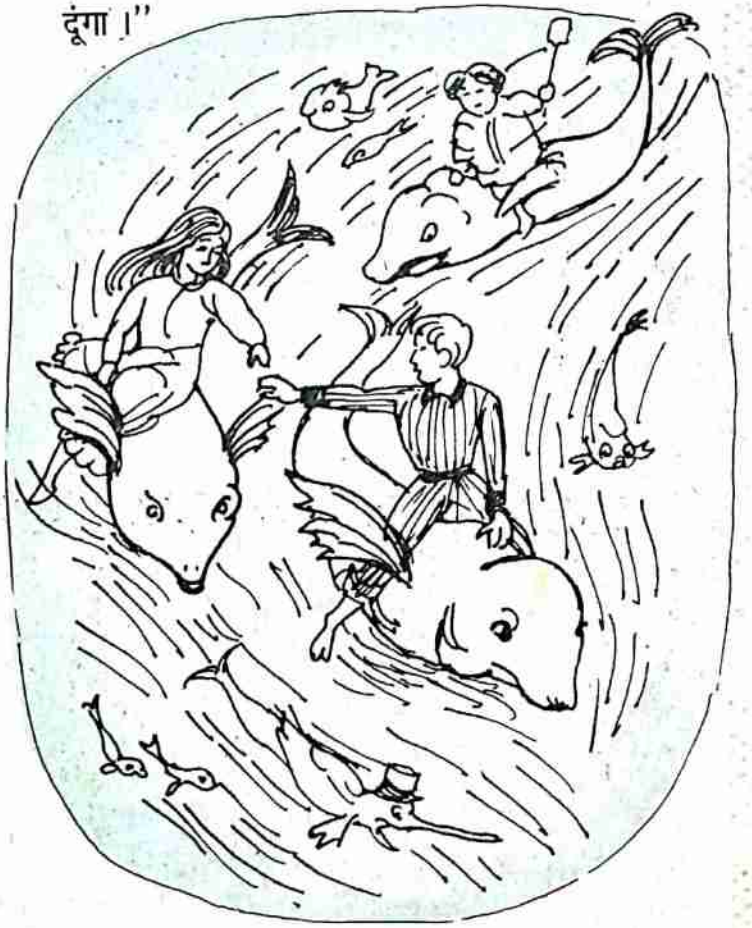

Scanned with CamScanner

बौने की बात सच थी। तीनों भाई-बहनों ने अपने सामान्य रूप में आने की इच्छा की, पर वे बौने ही रहे। डिक सोच रहा था— 'क्या हमें हमेशा इसी रूप में रहना पड़ेगा ?'

इतनी ही देर में सारे बौने इन तीनों को अकेला छोड़कर दूर चले गए। पहले तो उनके हंसने-खिलखिलाने की आवाजें आती रहीं, फिर रुदन सुनाई देने लगा। ये सुनते रहे। हैरान थे कि बौने हंसते-हंसते एकाएक रोने क्यों लगे ?

थोड़ी देर बाद ही बौनों का झुंड उनकी तरफ आता दिखाई दिया। वे चीख-चिल्ला रहे थे।

मार्जोरी ने बौनों की हालत देखी, तो हंस पड़ी। न जाने क्या हुआ था, बौनों के आकार बदल गए थे। कोई एकदम लम्बा हो गया था, तो कोई बहुत मोटा। दो-तीन बौने रोते हुए हवा में कलाबाजियां खा रहे थे। और कह रहे थे— "हम फिर से बौना बनना चाहते हैं, पर बन नहीं पा रहे हैं।"

तभी एक चिड़िया उड़ती हुई वहां आई। उसने कहा— "ये बौने तो मूर्ख हैं। यह जादुई कागज इन तीनों बच्चों के लिए था। बौनों ने जादू का दुरुपयोग करना चाहा, इसीलिए इनकी यह दशा हुई है।" उसने बौनों को वह कागज लौटाने की सलाह दी।

बौनों को मानना पड़ा। उन्होंने जादुई कागज डिक को दिया। कागज हाथ में लेकर डिक ने कहा— "हम तीनों तथा बौने अपने असली रूप में आ जाएं।" उसके इतना कहते ही ये तीनों भाई-बहन और सभी बौने सभी अपने असली रूप में आ गए।

लेकिन बौनों की शरारत समाप्त नहीं हुई थी। उन्होंने मौका देखकर तीनों भाई-बहनों को पहाड़ से समुद्र में धक्का दे दिया। उनकी जगह कोई और होता, तो पानी में डूब ही जाता। पर जादुई कागज से उन्हें विचित्र शक्ति मिल गई थी। वे पानी में उतरते हुए समुद्र की तली तक जा पहुंचे।

चारों ओर बड़ी-बड़ी मछलियां तैर रही थीं। थोड़ी दूर पर एक महल नजर आया। उससे विचित्र प्रकाश फूट रहा था। तभी एक बड़ी मछली उनके पास आई। उसने कहा— "मैं समुद्र में सैनिक हूं। चलिए, आपको सागर की रानी के पास ले चलूं।"

मछली के पीछे-पीछे तीनों उस विचित्र महल की ओर चल दिए। महल में एक विशाल मछली सिंहासन पर बैठी थी। उसके सिर पर मुकुट था। वह सागर की रानी थी। डिक ने बता दिया कि वे तीनों वहां कैसे पहुंचे थे।

रानी ने ध्यान से इनकी बातें सुनीं। फिर कहा— "मैं आपको सवारी के लिए तीन मछलियां देती हूं। पहले सागर की सैर कीजिए। फिर जहां इच्छा हो चले जाना।"

डिक, मार्जोरी और फिज तीनों मछलियों की पीठ पर जा बैठे। मछलियां तेजी से बढ़ चलीं। वे चारों ओर के दृश्य देखते हुए मंत्रमुग्ध हो गए।

थोड़ा आगे जाने पर उन्हें एक बूढ़ा नजर आया। डिक ने मछली से कहा— "हम उस आदमी से बात करना चाहेंगे।" मछली बूढ़े के पास रुक गई। डिक

Scanned with CamScanner

को देखकर बूढ़ा चकित रह गया। मार्जोरी ने पूछा— "आप तो मनुष्य हैं। समुद्र के अंदर क्या कर रहे हैं ?"

"मैं समुद्र का खजांची हूं। संसार का सबसे धनी आदमी। समुद्र की सारी दौलत मेरी है।" और उसने कंधे पर लटकी बोरी को तली पर उलट दिया। चमकदार मोती चमकीली बूंदों की तरह चारों ओर बिखर गए।

मार्जोरी बोली— "हम फिर आएंगे। अभी हमें एक जरूरी काम से जाना है।" उसने मछली को आगे बढ़ने का संकेत किया।

समुद्र का बूढ़ा खजांची पीछे रह गया। मछलियां पानी में दौड़ी चलीं जा रही थीं। बहुत लम्बा सफर था। आखिर मछलियों ने इन तीनों को एक तट पर छोड़ दिया। फिर जैसे आईं थीं, उसी तरह वापस भी चली गईं। ये तीनों निर्जन स्थान पर खड़े-खड़े सोचने लगे कि अब क्या करें। तभी इन्हें सामने से डोडो आता दिखाई दिया। तीनों ने लपककर उसे पकड़ लिया। डोडो ने एक हाथ में दस्ताना पहन रखा था। वह चीखने लगा— "बचाओ, बचाओ।"

— "हम तुम्हें नहीं छोड़ेंगे। पहले यह बताओ, तुम क्यों भागे-भागे फिर रहे हो ? पानजानद्रम कौन है ? और वह तुम्हें क्यों ढूंढ़ रहा है ? सच-सच बताओ।"

डोडो कुछ देर चुप रहा। फिर बोला— "बात तो कुछ नहीं। मैं गलती से उसके महल से एक दस्ताना ले आया हूं। उसका ख्याल है, मैं चोर हूं।"

"तो पानजानद्रम कौन है ?"— मार्जोरी ने पूछा।

वह एक जादूगर है। उसका ख्याल है, दस्ताने में जादुई शक्ति है, इसीलिए वह मेरे पीछे पड़ा है।"—कहकर डोडो फिर छूटने के लिए जोर लगाने लगा।"

डिक ने दस्ताना देखने के लिए लिया और अपने हाथ में पहन लिया। फिर मन में न जाने क्या आया, वह बुदबुदाया— "मैं एक दैत्य जितना बड़ा होना चाहता हूं।" और उसका आकार बढ़ने लगा। उसका सिर ऊंचा होकर जैसे बादलों से जा लगा। डिक का शरीर बड़ा हुआ, तो हाथ के साथ-साथ दस्ताने का आकार भी बढ़ने लगा।

डिक ने ऊपर से दस्ताना फेंक दिया। जोर की आवाज हुई। कुछ देर बाद डिक ने फिर छोटे होने की इच्छा की। उसका आकार तो छोटा हो गया, पर जमीन पर पड़ा दस्ताना छोटा नहीं हुआ, उतना ही बड़ा रहा।

डोडो ने बार-बार कहा— "इस दस्ताने को पहले जितना बना दो। मैं इसे पहनना चाहता हूं।" पर डिक ने मना कर दिया। उसने कहा— "ऐसा करने पर पानजानद्रम नाराज हो सकता है। अब उसके दस्ताने से पीछा छुड़ाना ही अच्छा रहेगा।"

पानजानद्रम का दैत्याकार दस्ताना वहीं पड़ा रहा। डोडो ने कहा— "अब मैं कहां जा सकता हूं ?"

"तुम हमारे साथ चलो।"— डिक ने कहा।

मार्जोरी बोली— "इधर-उधर भटकने से क्या फायदा ? अब हमें घर जाना चाहिए।"

फिज ने जादुई कागज हाथ में लेकर कहा— "हम लंदन जाना चाहते हैं।"

थोड़ी देर बाद ही उन्होंने अपने को लंदन की सड़कों पर खड़े पाया। डोडो तो उछल-कूद मचाने लगा। वह खुश था कि अब उसे पानजानद्रम से मुक्ति मिल गई है। जहां डोडो जाता, उसे देखने वालों की भीड़ लग जाती।

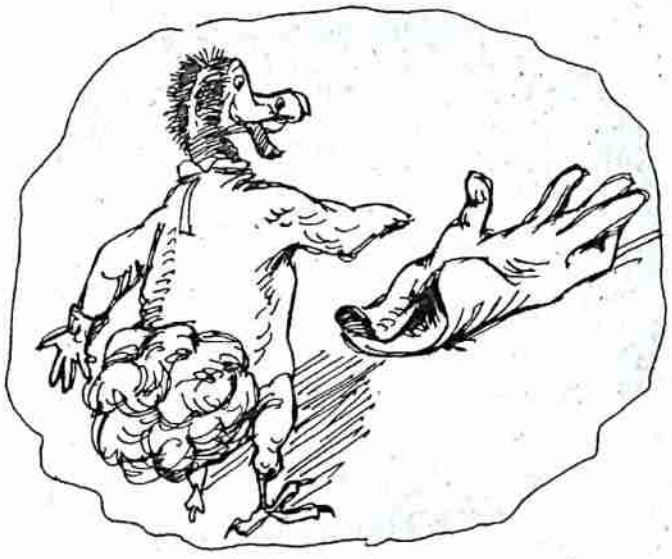

Scanned with CamScanner

चोर कौन था ?

—कल्पना गहलौत

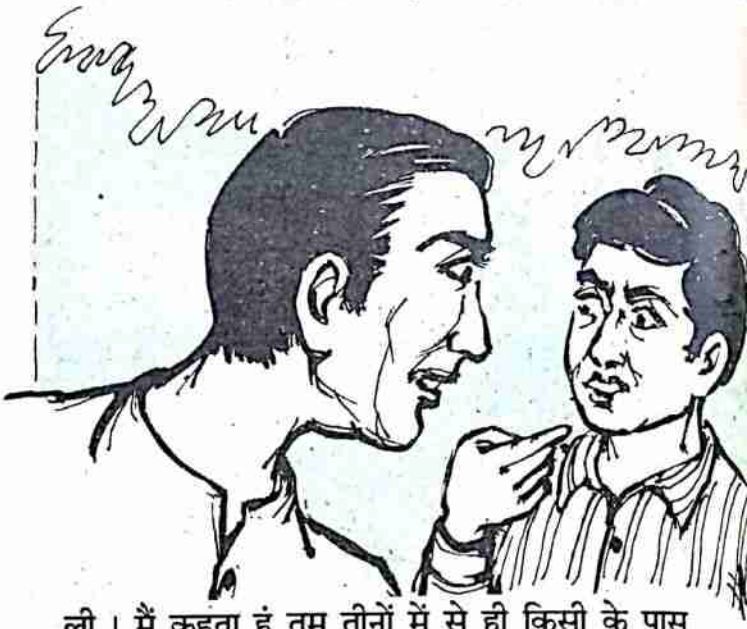

सूरजगढ़ गांव के ठाकुर कुरकंदासिंह मशहूर निशानेबाज थे। निशानेबाजी में कुरकंदासिंह ने एक से बढ़कर एक शानदार पुरस्कार प्राप्त किए थे।

उनके पास अपने स्वर्गीय पिता की एक मात्र निशानी, हीरे की अंगूठी थी। वह उस अंगूठी को हमेशा संभालकर रखते थे। एक दिन जरा-सी लापरवाही से वह अंगूठी चोरी हो गई। घटना कुछ इस प्रकार घटी—बालीबाल खेलते समय कुरकंदासिंह के दाएं हाथ के पंजे में हल्का झटका लग गया, जिसके कारण पंजे में दर्द होने लगा। वह अपने घर आंगन में बैठकर हाथ के पंजे की मालिश करने लगे। उनका घर और आंगन, दोनों ही बड़े लम्बे-चौड़े थे। आंगन के अंदर नीम का पुराना पेड़ था। नीम के नीचे बैठ, कुरकंदासिंह हाथ की मालिश कर रहे थे। अंगूठी उतारकर उन्होंने पास ही एक मेज पर रख दी थी। तभी अचानक उनके मित्र रणजीतसिंह ने बाहर से उन्हें पुकारा। कुरकंदासिंह तुरंत घर के मुख्य द्वार पर पहुंचे। फिर कमरे में अपने दोस्त के साथ जाकर बैठ गए। अंगूठी को मेज से उठाने का ध्यान न रहा।

कुछ देर बाद दोस्त को विदा कर, आंगन में पहुंचे। मेज पर अंगूठी नहीं थी। इस बीच बाहर का कोई व्यक्ति उनके घर में आया-गया नहीं था। घर के अंदर उनकी पत्नी चौमादेवी, उनके छोटे भाई की पत्नी तथा उनकी एक विवाहिता बहन बेरीवती थी।

कुरकंदासिंह चिंतित हो उठे। उन्होंने फौरन ही अपनी पत्नी, छोटे भाई की पत्नी और बहन से पूछताछ की। तीनों ने एक ही उत्तर दिया—"हमने अंगूठी नहीं ली।"

सुनते ही कुरकंदासिंह क्रोध से चीखे—"तो फिर अंगूठी गई कहां ? बाहर से कोई व्यक्ति आया नहीं है, अंगूठी, आसमान में उड़ गई क्या ? या इस मेज ने खा ली। मैं कहता हूं तुम तीनों में से ही किसी के पास अंगूठी है। मुझे अंगूठी की कीमत की परवाह नहीं, लेकिन वह मेरे पिता जी की निशानी है, इसलिए मेरे लिए एक अनमोल अंगूठी है। मैं उसे अपनी जान से भी ज्यादा चाहता हूं। सोच-समझकर चुपचाप वह अंगूठी उसी जगह वापस रख दो, वरना अच्छा नहीं होगा। मुझे गुस्सा मत दिलाओ।"

तभी कुरकंदासिंह का छोटा भाई परखमसिंह आया। परखमसिंह की शादी को अभी थोड़े ही दिन हुए थे। उसकी पत्नी तरौलीदेवी, शादी के बाद विदा होकर सूरजगढ़ में पहली बार आई थी। अंगूठी गायब होने की बात सुन, परखमसिंह को भी बड़ी हैरानी हुई। अंत में पड़ोसियों की सलाह पर कुरकंदासिंह चोर का नाम बताने वाले एक तांत्रिक के पास पहुंचे। तांत्रिक ने अपनी दक्षिणा लेकर उन्हें बताया—"आपकी अंगूठी आपके घर में ही मौजूद है। जाकर ढूंढ़िए।"

फिर क्या था ? कुरकंदासिंह को पक्का विश्वास हो गया, अंगूठी घर में ही किसी ने चुराई है। कुरकंदासिंह की पत्नी चौमादेवी ने अपनी ननद और देवरानी पर शक करना शुरू कर दिया। इस कारण उन तीनों के बीच झगड़ा होने लगा।

परखमसिंह भी अपनी पत्नी की तरफदारी लेकर भाभी से झगड़ा करने लगा। कुरकंदासिंह को मालूम हुआ, तो वह परखमसिंह पर बरस पड़े—"एक तो चोरी, ऊपर से सीनाजोरी !"

इतना सुनते ही आवेश में आकर, परखमसिंह अपने भाई से अकड़ गया। अब कुरकंदासिंह का

Scanned with CamScanner

गुस्सा चरम सीमा पार कर गया। क्रोध में उन्होंने उसे बुरी तरह पीटना शुरू कर दिया। शोरशराबा सुनकर पड़ोसी बीच-बचाव करने आए। चोट के कारण परखमसिंह के सिर से खून बहने लगा था। किसी प्रकार परखमसिंह को अस्पताल पहुंचाया गया।

सूरजगढ़ गांव के चौकीदार ने इस घटना की सूचना पुलिस थाने में पहुंचा दी। पुलिस ने आकर कुरकंदासिंह को गिरफ़्तार कर लिया। परखमसिंह के सिर में लाठी की चोट बहुत गहरी लगी थी। बड़ी मुश्किल से कुरकंदासिंह जमानत पर रिहा हुए। चार महीने परखमसिंह का इलाज चलता रहा। अस्पताल से आते ही दोनों भाइयों का बंटवारा हो गया। वे अलग-अलग रहकर मुकदमा लड़ते रहे। अंत में कुरकंदासिंह को अदालत ने एक वर्ष के कठोर कारावास का दंड दिया। उनकी बहन फिर ससुराल से अपने भाई के पास नहीं आई।

यह सब तो हो गया, लेकिन अंगूठी का कुछ भी पता न चला। ननद के पति सिहानासिंह ने एक कार खरीद ली। जब यह खबर सूरजगढ़ पहुंची, तो कुरकंदासिंह की पत्नी कहने लगी—"अब तो केवल शक ही नहीं, पक्का यकीन हो गया ! अंगूठी बेरीवती ही चुराकर ले गई थी। यह कार अंगूठी बेचकर ही खरीदी है।"

इस तरह शक ने आपसी प्यार और रिश्तेदारी को तोड़कर रख दिया। इसी बीच सजा काटकर कुरकंदासिंह घर लौट आए। दोनों भाई एक-दूसरे से बोलते नहीं थे।

एक दिन कुरकंदासिंह आंगन में बैठे, बंदूक की सफाई कर रहे थे ! तभी उनका एक पड़ोसी बरारीलाल वहां आया। कहने लगा— "कुरकंदा जी, बुरा न मानो तो एक बात कहूं।"

कुरकंदासिंह बोले—"हां-हां, कहो। क्या कहना चाहते हो ? मैं बुरा नहीं मानूंगा।"

बरारीलाल ने कहा—"हमने आपके अचूक निशाने की तारीफ बहुत सुनी है, लेकिन निशाना लगाते कभी नहीं देखा। सुना है, कौवा बहुत ही चालाक पक्षी होता है। उसे आसानी से मार पाना असम्भव है। आज आप इस असम्भव को सम्भव करके दिखाइए। वह देखिए, इस नीम के पेड़ पर घोंसले में कौवा बैठा है।"

कुरकंदासिंह ने मुसकराते हुए बंदूक में गोली भर ली। फिर ऊपर की ओर निशाना लगाकर गोली चला दी। धांय की आवाज के साथ कौवा घोंसले सहित आंगन में आ गिरा। कोई चमकती हुई चीज भी गिरी। उस चीज के पास पहुंचते ही कुरकंदासिंह चौंक पड़े। यह चमकती हुई चीज कुछ और नहीं, वही अनमोल अंगूठी थी, जिसके लिए सारे परिवार पर कहर छा गया था।

पड़ोसी मरे पड़े कौवे की ओर घूरकर बोला—"ओह ! तो चोर यह था। जालिम ने अंगूठी चुराकर अपने घोंसले में छिपा दी थी।"

कुरकंदासिंह ने अपने बहनोई को उसी दिन खत लिख दिया। लिखा—"अंगूठी चुराने वाला चोर अंगूठी के साथ पकड़ा गया है। उसे मौत की सजा दी जा चुकी है। बहन बेरीवती पर झूठा शक किया गया, इसके लिए मैं और उसकी भाभी माफी मांगते हैं।"

कौन था वह चोर, जिसे मौत की सजा दी गई है। यह जानने के लिए सिहानासिंह और बेरीवती, दोनों तुरंत ही सूरजगढ़ की ओर दौड़ पड़े। उनके बीच का संदेह, मनमुटाव सदैव के लिए दूर हो गया। कुरकंदासिंह और परखमसिंह दोनों भाई फिर एक होकर प्रेम से गले मिल गए। ●

Scanned with CamScanner

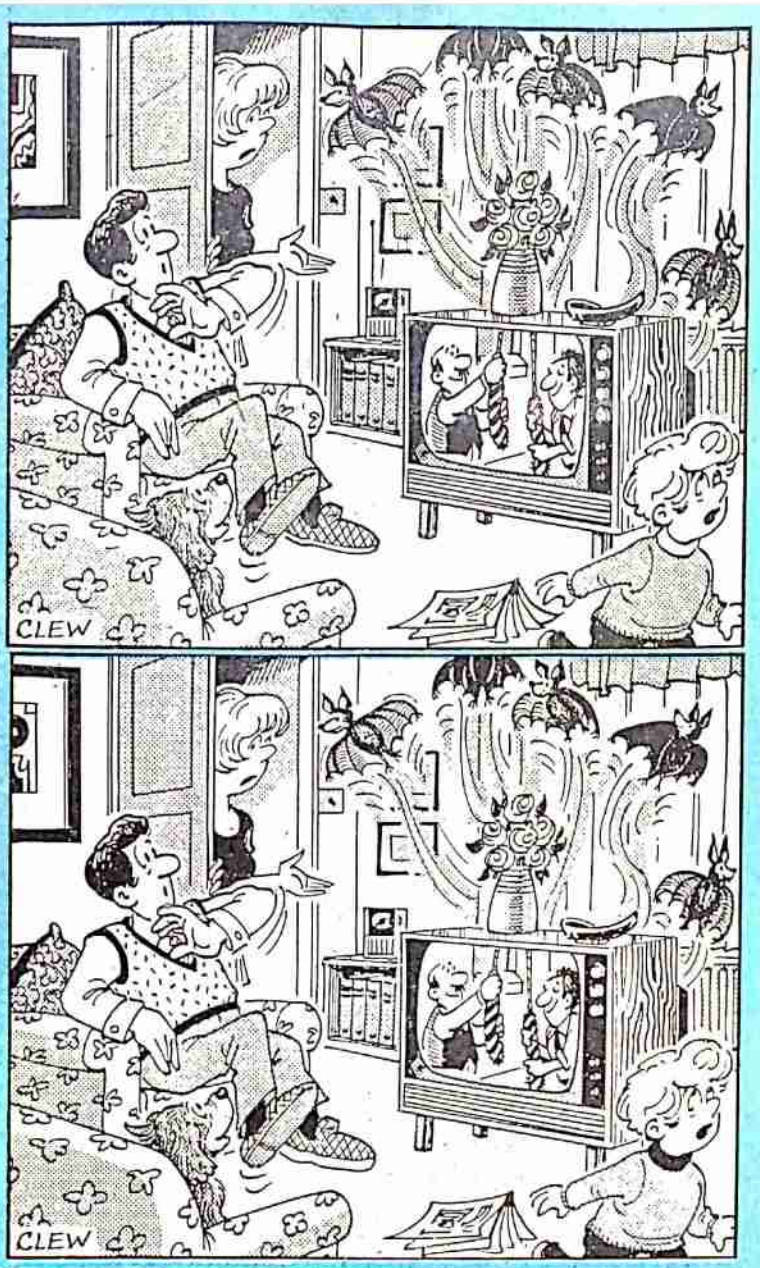

आप कितने बुद्धिमान हैं ?

यहां दो चित्र बने हुए हैं। ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है। नीचे इसी चित्र की नकल है। नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया। उसने कुछ गलतियां कर दीं। आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए। क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं ? इसमें दस ग़लतियां हैं। सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है। १० गलतियां ढूंढ़ने वाला: **जीनियस;** ६ से ९ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **बुद्धिमान;** ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **औसत बुद्धि;** ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला : **स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए ?**

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं। आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए। आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित समय— **१५ मिनट।**

कहानी लिखो : ६६

सामने बने चित्र के आधार पर एक कहानी लिखिए। उसे १० मई'८९ तक **सम्पादक 'नंदन', हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१** के पते पर भेज दीजिए। चुनी गई कहानी पुरस्कृत कर प्रकाशित की जाएगी।
परिणाम : जुलाई'८९ अंक

चित्र पहेली : ६६

'आओ चलें चांद की ओर' विषय पर रंगीन चित्र बनाइए। उसे १० मई '८९ तक 'नंदन' कार्यालय में भेज दीजिए। चुना गया चित्र 'नंदन' में प्रकाशित किया जाएगा। पुरस्कार भी मिलेगा।
परिणाम : अगस्त '८९ अंक

Scanned with CamScanner

लोभ की हार

—श्रीनिवास वत्स

वत्स नामक एक राजा थे। उनके दो पुत्र थे—वीतहव्य और तालजंघ। वीतहव्य शूरवीर था, पर उसके मन में हमेशा लोभ छाया रहता। जब भी किसी पड़ोसी राजा के विषय में सुनता, तुरंत युद्ध करके उसका सब कुछ छीन लेता।

उन्हीं दिनों काशी में हर्यश्व नामक राजा राज्य करता था। वह बहुत धनवान था। उसके पास नाना प्रकार के हीरे-जवाहरात थे। उन्हें पाने के लिए वीतहव्य के पुत्रों ने हर्यश्व के राज्य पर चढ़ाई कर दी। उन्हें मारकर अपार धन लूट ले गए।

हर्यश्व का पुत्र सुदेव अत्यंत धर्मात्मा एवं शांत स्वभाव का व्यक्ति था। पिता के बाद उसने राजपाट संभाला। वह बहुत लगन और ईमानदारी से शासन चलाता था।

वीतहव्य के पुत्रों ने यह सुना, तो वे फिर युद्ध के लिए तैयार हो गए। उनके धर्मगुरु भृगु ने उन्हें रोका, पर वे शक्ति के नशे में चूर थे। उन्होंने फिर से काशी पर चढ़ाई कर दी। बेचारा सुदेव उन्हें समझाता रहा, पर वे नहीं माने और उसे मारकर फिर नगर को उजाड़ दिया।

इसके बाद सुदेव के पुत्र दिवोदास का काशीराज के पद पर अभिषेक किया गया। दिवोदास बड़ा तेजस्वी था। उसने कुलगुरु भरद्वाज की आज्ञा से काशी को पुनः बसाया। इस नगरी की सीमाएं काफी फैली हुई थीं। वीतहव्य के पुत्र तो दुष्ट और घमंडी थे। उन्होंने दिवोदास के नगर पर भी हमला कर दिया। महाबली राजा दिवोदास ने पुरी से बाहर निकलकर उनके साथ युद्ध किया।

काशी नरेश ने हजार दिन तक शत्रुओं का मुकाबला किया। इस युद्ध में दिवोदास के बहुत-से सिपाही और हाथी-घोड़े मारे गए। उनका खजाना खाली हो गया। अंत में वह अपनी राजधानी छोड़कर चल दिए। वहां से दिवोदास भरद्वाज ऋषि के आश्रम में पहुंचे। भरद्वाज जी दिवोदास के पुरोहित थे।

दिवोदास ने कहा—"गुरु जी, संग्राम में वीतहव्य के पुत्रों ने मेरे कुल का विनाश कर डाला।"

यह सुनकर महर्षि भरद्वाज ने कहा—"तुम डरो मत। मैंने बहुत सहन कर लिया। अब मैं तुम्हारे लिए पुत्र देने वाला यज्ञ करूंगा, जिसकी सहायता से तुम दुष्ट वीतहव्य के पुत्रों को मार सकोगे।"

तब ऋषि ने राजा से पुत्रेष्टि यज्ञ कराया। उससे उनके प्रतर्दन नाम से विख्यात पुत्र हुआ। वह पैदा होते ही इतना बढ़ गया कि तुरंत तेरह वर्ष के किशोर जैसा दिखाई देने लगा। भरद्वाज मुनि ने उसे योग शक्ति से सम्पन्न कर दिया। कुछ दिनों बाद राजकुमार प्रतर्दन ने अपने शरीर पर कवच धारण किया और हाथ में धनुष उठा लिया।

दिवोदास ने प्रतर्दन को युवराज के पद पर बैठाया। फिर सेना सहित वीतहव्य के पुत्रों का वध करने के लिए भेजा।

पिता की आज्ञा मान, प्रतर्दन शत्रु नगरी की ओर चल दिया।

घमासान युद्ध हुआ। प्रतर्दन ने अपने अस्त्रों द्वारा शत्रुओं के अस्त्रों को काटकर तेजस्वी बाणों से उन सबको मार डाला। अपने पुत्रों को मरा देख, वीतहव्य नगर छोड़कर महर्षि भृगु के आश्रम में भाग गया। प्राण बचाने की प्रार्थना की।

इतने में प्रतर्दन भी उसका पीछा करता हुआ वहां पहुंच गया। उसने ऋषि को प्रणाम किया।

वीतहव्य भय से कांप रहा था। भृगु मुनि को दया आ गई। उन्होंने कहा—"पुत्र! इसे क्षमा करो। अब इसकी सजा यही है कि यह कभी धन को देख भी नहीं सकेगा। शासन भी नहीं करेगा। यहां आश्रम में रहकर शिष्यों को धनुर्विद्या सिखाएगा। तुम इसके राज्य को अपने अधीन कर लो।"

ऋषि की बात मान, प्रतर्दन वहां से लौट गया। वीतहव्य सोचने लगा—'लोभ के कारण मेरा राज्य छिना और पुत्र भी मरे।' उसने प्रायश्चित करने की सोची। ●

Scanned with CamScanner

भोर हुआ

सूरज-मुंह लाल-लाल
गाल पर मला गुलाल,
आंगन में शोर हुआ
भोर हुआ, भोर हुआ !

तितली ने थिरक-थिरक
सपने रंगीन बुने,
डलिया भर बगिया में
माली ने फूल चुने।
मालिन ने हंस पहने
गजरों वाले गहने,
भंवरों में शोर हुआ
भोर हुआ, भोर हुआ !

गहरे से पानी में
नाविक खे नाव चला,
पानी है सिंदूरी
जैसे सिंदूर गला।
मछली पर आंख गड़ा
बगुला चुपचाप खड़ा,
नदिया तट शोर हुआ
भोर हुआ, भोर हुआ !

छत पर ज्यों पंक्ति बना
पढ़ने को छात्र चढ़े,
ऐसे ही चिड़ियों ने
किरनों के पाठ पढ़े।
अंधियारा भागा है
उजियारा जागा है,
घर-घर में शोर हुआ
भोर हुआ, भोर हुआ !

— रामसेवक शर्मा

भालू और चंदा

भालू और भालू का बच्चा
घूम रहे थे झील किनारे,
जल के ऊपर चमक रहे थे
चंचल चंदा, झिलमिल तारे।
भालू के बच्चे ने समझा
चंदा है सोने की थाली,
जल के ऊपर तैर रही है
जैसे कोई नौका खाली।
बच्चे ने भालू से जिद की—
'पापा, मैं बैठूंगा इस पर,
जो देखेगा वही कहेगा
राजकुंवर है कितना सुंदर !'
भालू बोला-'इसके ऊपर
बैठ न पाया कोई थलचर,
इस सोने के सिंहासन पर
बैठा करते केवल जलचर।'
बच्चा भालू का जिद्दी था
बात नहीं पापा की मानी,
'बैठूंगा इस सिंहासन पर'
कहकर कूदा गहरे पानी।
नहीं तैरना आया उस पर
डूब गया वह पानी में,
बात नहीं मानी पापा की
करता खत्म कहानी मैं !

— रमेश कौशिक

फूलों का रस

ज्यों ही मैंने
आंखें खोलीं,
प्रातः मुझसे
चिड़िया बोली—
चूं-चूं चीं-चीं
चूं-चूं चीं-चीं
मैं खाती हूं
मीठी लीची।

गुन-गुन करते
भंवरे आए,
चुन-चुन फूलों
पर वे छाए।
छक-छक पीते
फूलों का रस,
बातें करते
सबसे हंस-हंस।

— गोपीचंद श्रीनागर

चल देंगे ननिहाल

पढ़ने को मत बोलो मम्मी,
अब गरमी की छुट्टी है।

खेलेंगे, कूदेंगे सब दिन,
चित्र बनाकर रंग भरेंगे,
दीदी से हलवा बनवाकर
दावत सबकी आज करेंगे।
बस्ते की क्यों फिकर करें हम
उससे अपनी कुट्टी है !

नानी का न्योता आते ही
चल देंगे अपनी ननिहाल,
घूम-घामकर मौज उड़ाकर
घर लौटेंगे मालामाल।
नानी से दंगा करने की
पा ली पूरी छुट्टी है !

— नवीन जैन

उड़े धूल

उड़े भले कितनी ही धूल,
कुछ दिन जाना नहीं स्कूल !

लस्सी, शर्बत, ठंडाई—
पियो खूब गरमी आई।
सड़कों पर है सन्नाटा,
लू सबको मारे चांटा।
दुबके रहो घरों में यार,
शाम ढले, घूमो बाजार।
कहता कौन सजा है बंधु ?
गरमी ? बड़ा मजा है बंधु !

— डा. देवव्रत जोशी

Scanned with CamScanner

लाला हरदयाल

दिल्ली की कचहरी में पेशकार थे गौरीदयाल माथुर। १४ अक्तूबर, १८८४ के दिन उनके घर पुत्र जन्मा। नाम रखा हरदयाल। कुछ बड़े हुए तो...

हरदयाल बड़े मेधावी थे। जो एक बार सुनते, याद हो जाता। पांचवीं कक्षा में थे, उन दिनों की बात....

बी. ए. तक हर कक्षा में प्रथम आते रहे। देश भक्त युवकों का एक दल बनाया। मास्टर अमीरचंद, भाई बाल मुकुंद, हनुमंत सहाय जैसे देश भक्त उस दल में थे।

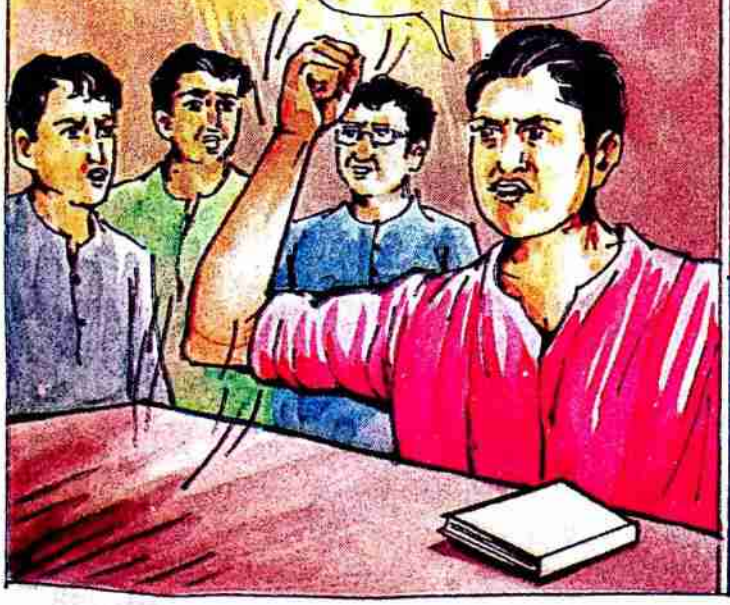

उच्च शिक्षा के लिए लाहौर गए। वहां भी लाला लाजपत राय और अजीतसिंह आदि के साथ....

Scanned with CamScanner

हरदयाल ने विश्वविद्यालय परीक्षाओं में सर्वोच्च अंक प्राप्त किए। सरकार ने आगे की पढ़ाई के लिए उन्हें विदेश भेजने की घोषणा की....

जाने से पहले ही विवाह हो गया था। पत्नी को भी साथ ले जाना चाहते थे, किंतु विरोध होने पर नहीं ले गए।

इंग्लैंड के सेंट जोन्स कालेज में प्रवेश मिला उन्हें। एक दिन...

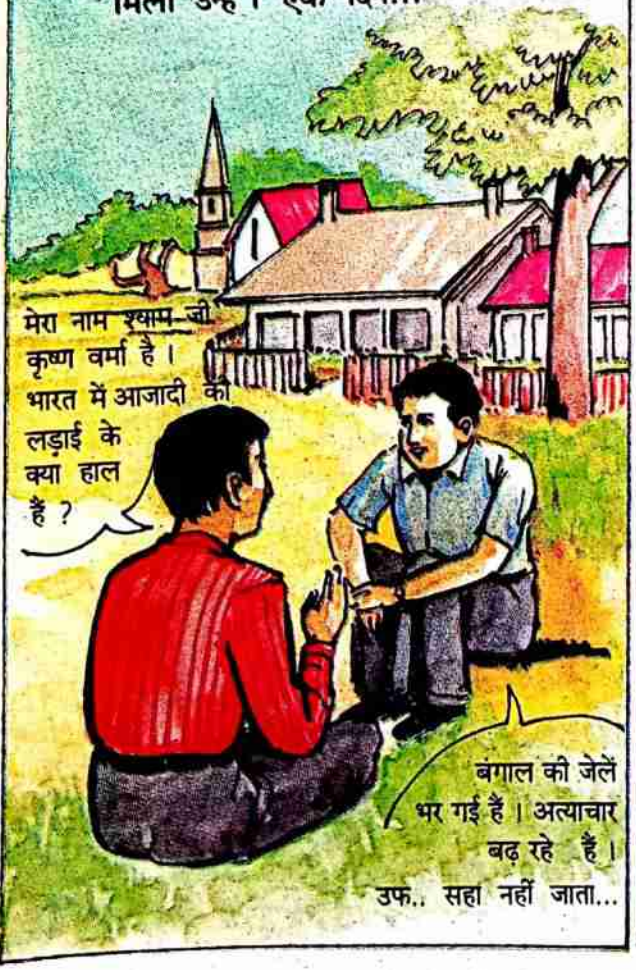

पूरे समय देश के लिए काम करने की ठान ली। सरकारी छात्रवृत्ति के साथ-साथ पढ़ाई भी छोड़ दी। श्याम जी के साथ देश भक्तों की एक संस्था बनाई। अखबारों में भी....

Scanned with CamScanner

भारत आए, तो पुरुष-वेश में पत्नी को भी इंग्लैंड ले गए। उसे भी देश भक्ति के रंग में रंग दिया।

जब तक विदेशों में भी अंग्रेजी सरकार के अत्याचारों की आलोचना नहीं होगी, तब तक....

आलोचना ही नहीं, हमें देश की आजादी के लिए विदेशी सरकारों की सहायता भी लेनी चाहिए....

कुछ समय बाद एक विवाह में शामिल होने पत्नी सहित पटियाला आए। वहीं एक दिन...

देश के लिए मैं पूरा जीवन देना चाहता हूं, पर परिवार के बंधन रास्ता रोकते हैं।

आप पिता बनने वाले हैं। कुछ दिन तसल्ली रखो।

देश प्रेम में मतवाले हरदयाल को चैन कहां ! पत्नी को किसी प्रकार मनाया। फिर घर से निकल पड़े। दिल्ली आए। मगर मां के घर...

अभी बाहर नहीं। अभी तो आए हो।

बात भी नहीं की कुछ और चलने को तैयार हो गया...

उफ, ममता के ये बंधन.... काटने पड़ेंगे

हरदयाल ने घर छोड़ दिया। चुपचाप कानपुर चले गए। युवकों का संगठन बनाया। गंगा के किनारे एकांत में रोज...

प्राण दे कर भी गोरी सरकार को भगाना है। आज ही से व्रत लो— स्वदेशी बाना धारण करेंगे।

अंग्रेज पुलिस हमारे पीछे पड़ी है।

ठिकाना बदलना होगा। लाहौर कैसा रहेगा ?

Scanned with CamScanner

लाहौर जाने के लिए रेलवे स्टेशन पहुंचे। इलाहाबाद कांग्रेस से लौट रहे लाला लाजपत राय से भेंट हुई....

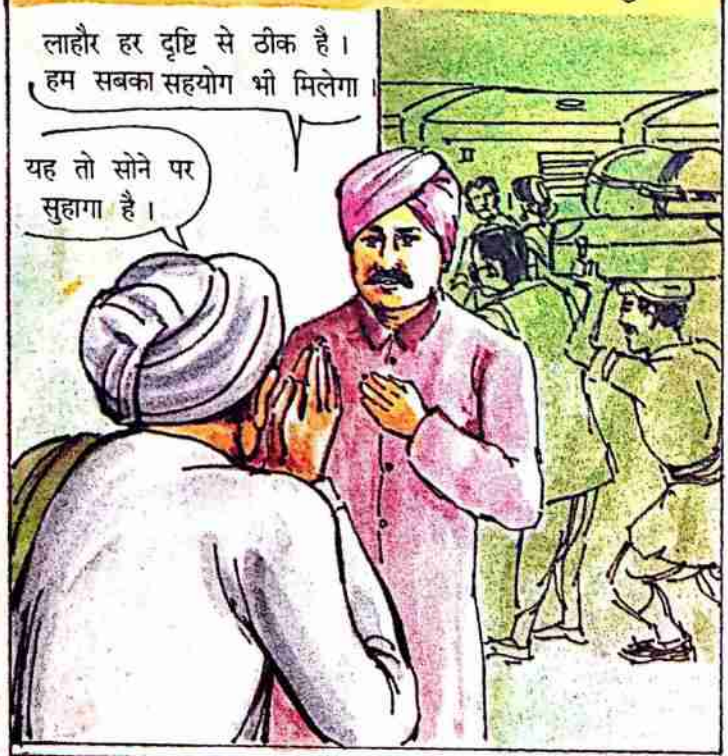

लाहौर से निकलने वाले पत्र 'पंजाब' के वह प्रधान सम्पादक बने। गोरी सरकार के दमन चक्र के खिलाफ जोशीले लेख लिखे। सरकारी शिक्षा संस्थाओं के बहिष्कार का आंदोलन चलाया....

कांगड़ा में भयंकर अकाल पड़ा, तो वह युवकों को लेकर निकल पड़े....

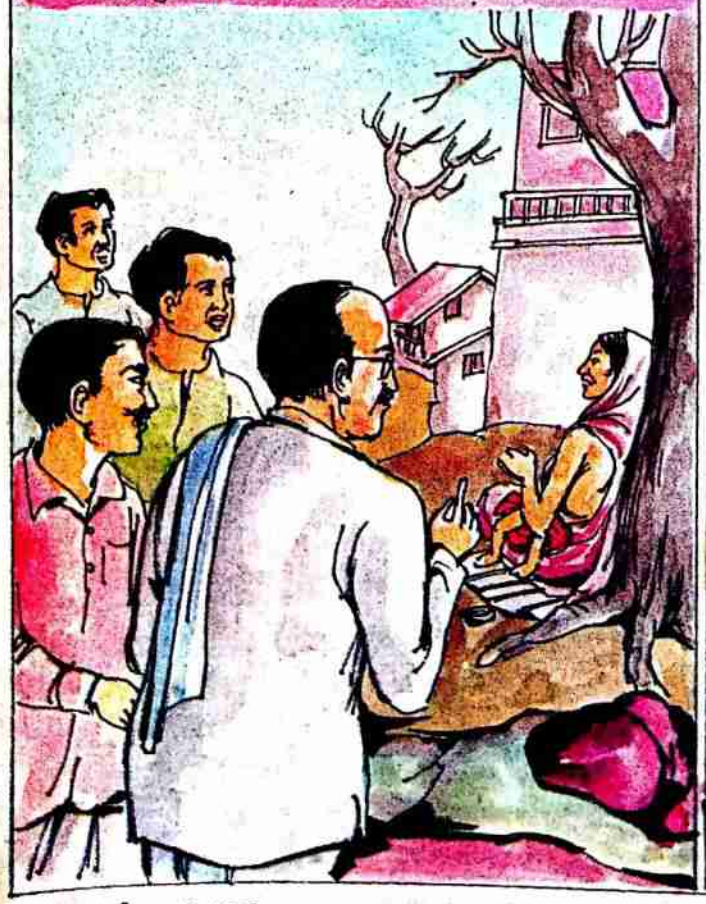

पूरे पंजाब में उनका यश छा गया। अंग्रेजी सरकार की आंखों में वह खटकने लगे। छोटे लाट की काउंसिल में एक दिन....

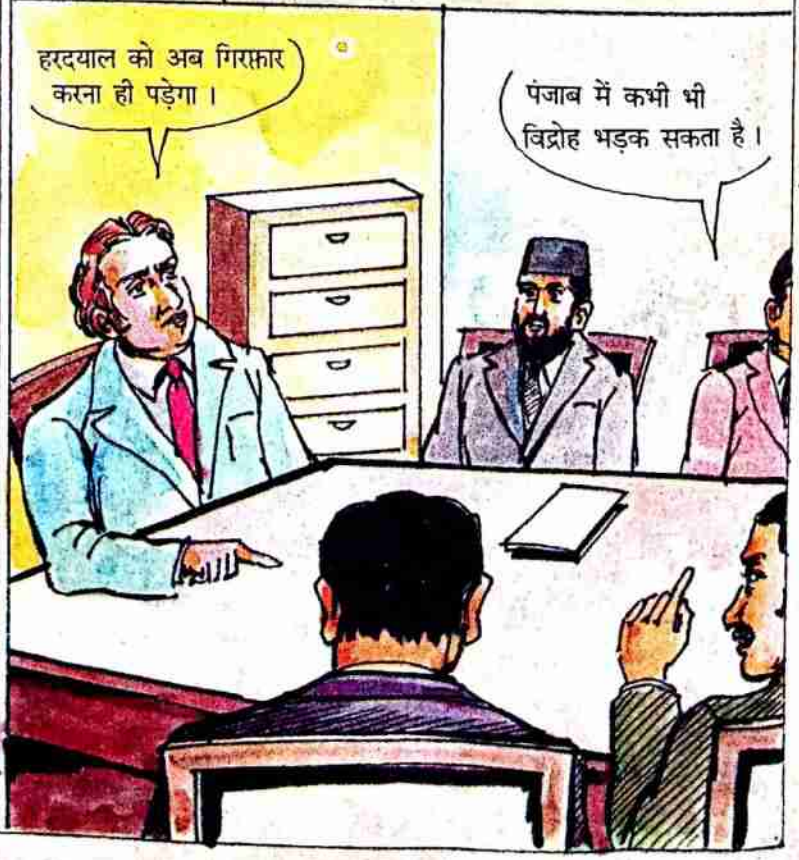

Scanned with CamScanner

हिंदुस्तान टाइम्स का प्रकाशन

-बच्चों का अखबार-

नंदन बाल समाचार

नंदन का शुल्क :
एक वर्ष : ३५ रुपए
दो वर्ष : ६५ रुपए

वर्ष २५, अंक ७, नई दिल्ली; मई '८९, चैत्र-वैशाख; शक सं. १९११

बालक के बोलने पर रोक-टोक

नई दिल्ली। 'माना जाता है कि बालक यदि बात कर रहा है, तो ठीक से पढ़ाई नहीं कर रहा। अध्यापक बच्चों को बात करते देखता है, तो उन्हें रोकता-टोकता है। लेकिन बात करने से सीखने-समझने में मदद होती है। बच्चे यह महसूस करें कि वे जो कहेंगे, उसे सुना जाएगा। अध्यापक बच्चों की बातें सुनें। बच्चों को महसूस हो कि स्कूल या कक्षा में वे अपनी बात कह सकते हैं। बच्चे यदि उलटा-सीधा भी बोलें, तब भी उन्हें नहीं टोकना चाहिए। भाषा बच्चों के लिए खिलौने की तरह है।'—ये विचार हैं शिक्षा शास्त्री प्रो. कृष्णकुमार के।

वह कहते हैं कि दुनिया में हो रही हर घटना, हर चीज के बारे में बच्चा सवाल करता है। उसके लिए यह रंग-बिरंगी दुनिया करिश्मों से भरी हुई है। यदि बच्चा हर चीज के बारे में 'क्यों' पूछे तो जान लेना चाहिए कि वह बहुत-कुछ सीख रहा है। बच्चे को सिखाने में सीधी-सादी कहानियां, रंग-बिरंगी तसवीरें भी बहुत सहायक हैं। पाठ्य पुस्तकों में छपी कविताएं घटिया होती हैं। बालक की कविता ऐसी होनी चाहिए, जिसे वह गा सके, उसे याद हो जाए। बच्चे सुनकर बहुत जल्दी सीखते हैं। हमारे देश में तो नानी-दादी की कहानियां बहुत पहले से चली आ रही हैं।

प्रो. कृष्णकुमार दिल्ली विश्वविद्यालय में शिक्षा विभाग के अध्यक्ष हैं। उन्होंने बच्चों को भाषा सिखाने के लिए एक निर्देशिका तैयार की है। इसे 'युनिसेफ' ने छापा है।

बालकों के लिए पुस्तकालय

नौएडा। आशारानी व्होरा के निवास जी-३०२ सेक्टर-२२, नौएडा में बाल संस्था केंद्र पुस्तकालय का उद्घाटन प्रख्यात साहित्यकार श्री राधेश्याम प्रगल्भ ने किया। अभी पुस्तकालय में बच्चों की दो सौ पुस्तकें रखी गई हैं। इस क्षेत्र में बच्चों का यह पहला पुस्तकालय है।

इसी अवसर पर बच्चों ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए। एक काव्य गोष्ठी भी हुई जिसमें सर्वश्री राधेश्याम प्रगल्भ, दिविक रमेश, दिशा शर्मा और शेरजंग गर्ग ने कविता पाठ किया।

न. बा. स. ३६ अ

गोलियों से बेअसर

स्टाकहोम। स्वीडन की एक कम्पनी ने ऐसे दरवाजे बनाए हैं, जो देखने में तो साधारण दरवाजे नजर आते हैं। लेकिन हैं ये ऐसे, जिन्हें चोर आसानी से नहीं तोड़ सकते। इन पर गोलियों का भी कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

भारतीय रेल और दूरी

कानपुर। भारतीय रेलें एक दिन में जितनी दूरी तय करती हैं, वह पृथ्वी की पच्चीस परिक्रमाओं के बराबर है। पूरे पश्चिम जर्मनी में जितने आरक्षण एक दिन में होते हैं, उतने आरक्षण तो अकेले दिल्ली में ही होते हैं। प. जर्मनी में हर रोज चालीस हजार और दिल्ली में पैंतालीस हजार आरक्षण होते हैं।

हनुमान जी की प्रतिमा

नई दिल्ली। पालम के नजदीक बसंत गांव में हनुमान जी की विशाल प्रतिमा लगाई जाएगी। इस प्रतिमा को एक पत्थर से तराशा गया है। इसकी ऊंचाई है चालीस फुट और वजन डेढ़ सौ टन। उत्तर भारत में यह अब तक की सबसे विशाल प्रतिमा होगी। कर्नाटक के कारकल स्थान से यहां तक लाने में ही किराए के रूप में लाखों रुपए खर्च होंगे। इस मूर्ति को बनाने में तीन साल लगे हैं। हनुमान जी की प्रतिमा को लेकर विशेष रेलगाड़ी विशेष रास्ते से आएगी।

कृत्रिम अंग

गांधीग्राम। यहां एक नया केंद्र खोला गया है। इसमें कृत्रिम अंगों का निर्माण और विकास हुआ करेगा। ये अंग और अधिक अच्छे ढंग से काम करें, इसके लिए नए-नए प्रयोग भी किए जाएंगे।

विज्ञान की सस्ती पुस्तकें

नई दिल्ली। वैज्ञानिकों को विज्ञान सम्बंधी किताबें भारतीय भाषाओं में लिखनी चाहिएं न कि अंग्रेजी में। ये किताबें सस्ती हों, जिससे कि ज्यादा लोगों तक पहुंच सकें। यह बात उप राष्ट्रपति डा. शंकर दयाल शर्मा ने कही। वह विज्ञान की दो पुस्तकों का विमोचन कर रहे थे।

भालू खत्म हो रहे हैं

विक्टोरिया। भालुओं की संख्या पूरी दुनिया में कम हो रही है। इसका कारण जंगलों की तेजी से कटाई और शिकारी हैं। ग्यारह देशों के विशेषज्ञों ने मिलकर 'भालू बचाओ' दल बनाया है।

पाठक अपने अखबार को खींचकर अलग निकाल लें।

Scanned with CamScanner

बच्चों का अखबार -
नंदन बाल समाचार

परोपकार सज्जनों का आभूषण है। —भागवत

हंसोड़ घर

दुनिया कायम है, क्योंकि यहां लोग हंसना जानते हैं। पर आज से सौ दो सौ साल पहले कौन कैसे हंसता था, यह नहीं मालूम। कहीं भी हंसी की सामग्री को किसी ने सहेजा नहीं। बलगारिया में गबरोवो नगर में सत्रह बरस पहले इस बारे में सोचा गया।

वहां हास्य-व्यंग्य का एक संग्रहालय शुरू किया गया। मूर्तियां, पेंटिंग, फोटो, पुस्तकें, बच्चों के बनाए चित्र, कार्टून आदि सभी वस्तुएं जुटाई जाने लगीं। हर दो बरस में हास्य फिल्म, कार्टून, नाटक तथा पुस्तकों की प्रतियोगिताएं भी की जाने लगीं। दुनिया के डेढ़ सौ देशों ने तरह-तरह की सामग्री गबरोवो हंसोड़ घर को दी है।

हंसना-हंसाना हर तरह से अच्छा है। हम हंसें और दूसरों को हंसाएं भी।

भाई ने बचाया

मेरठ। अग्रहेड़ा गांव में दस वर्ष के पिंटू को बिजली ने पकड़ लिया। पिंटू के बड़े भाई बारह वर्ष के देवेंद्र ने यह देखा। उसने बिना समय गंवाए, अपने गले में पड़ा तौलिया टिकू के गले में डाला और जोर से खींच लिया। झटके के कारण पिंटू बिजली के तार से अलग हो गया। उसकी जान बच गई।

भीड़ भरी सड़कें

रोम। आज हमें लगता है कि वाहनों के शोर-शराबे और तेज गति के कारण, पैदल चलने वालों का जीवन खतरे में पड़ गया है। लेकिन रोम में ईसा पूर्व भी भारी भरकम बैलगाड़ियां और रथ सड़कों पर तेजी से दौड़ते थे। तब भी यातायात की हालत देखते हुए, दुर्घटनाओं को रोकने के लिए उचित कदम उठाए गए थे।

कूड़े पर गिरकर बचा

कुआलालम्पुर। एक बच्चा अपनी बहन के साथ, इमारत की पंद्रहवीं मंजिल पर खेल रहा था। अचानक खेलते-खेलते वह ऐसे स्थान पर आ गया, जहां कोई दीवार नहीं थीं। वहां से वह नीचे कूड़े के ढेर पर गिर पड़ा। इतनी ऊंचाई से गिरने पर भी बच्चे को मामूली चोट आई है।

सरकारी कार

नई दिल्ली। राष्ट्रपति भवन की एक मर्सिडीज कार दस लाख, एक हजार रुपए में नीलाम हुई। १९६० में यह कार पैंतालीस हजार रुपए में खरीदी गई थी। दुबई में रहने वाले भारतीय व्यापारी विनोद अरोड़ा ने इसे खरीदा है। इस मॉडल की कोई भी कार दुनिया भर में चालू हालत में नहीं है। डा. राजेंद्रप्रसाद से लेकर आज तक भारत के सभी राष्ट्रपतियों ने इसे इस्तेमाल किया।

कौआ पर्चा लाया

ढाका। यहां परीक्षा के दिनों में बड़ी संख्या में छात्र नकल करते पकड़े गए हैं। एक निरीक्षक ने एक दिन पाया कि एक कौआ उड़ता हुआ आया और एक पर्चा गिरा गया। उसमें गणित के सवालों के जवाब लिखे थे।

घायल जानवरों की देखभाल

नई दिल्ली। घायल जानवरों की देखभाल के लिए एक चलता-फिरता अस्पताल बनाया गया है। यह अस्पताल जगह-जगह जाकर घायल जानवरों की मदद करेगा। इसके लिए दिल्ली के उप राज्यपाल रोमेश भंडारी ने पंद्रह हजार रुपए दिए हैं।

नई बस

नई दिल्ली। बच्चों के मनोरंजन के लिए नेहरू बाल समिति ने एक 'प्ले बस' तैयार की है। इसमें टी. वी., वीडियो, पुस्तकालय तथा दूसरे खेलों का सामान रखा है। बच्चों द्वारा इकट्ठे किए गए चंदे से यह बस खरीदी है। कुछ धन सरकार ने दिया है। सबसे अधिक चंदा इकट्ठा करने वाले बच्चों और स्कूलों को एक समारोह में पुरस्कार भी दिए गए। पुरस्कार वितरण दिल्ली के डिप्टी कमिश्नर श्री डी. एस. नेगी और श्रीमती मोहिनी गिरि ने किया। समारोह बाल विकास विद्यालय त्रिलोकपुरी में किया गया। अतिथियों का स्वागत नन्हे बच्चों ने बैंड बाजों और सलामी से किया। रंगारंग कार्यक्रम भी हुए।

कटा हाथ जुड़ा

मास्को। दो साल के एक बच्चे का हाथ कपड़े धोने की मशीन से कट गया। घर वालों ने कटे हाथ को प्लास्टिक की थैली में डाला और बच्चे को अस्पताल ले गए। डाक्टरों ने आपरेशन करके बच्चे का हाथ जोड़ दिया। इस आपरेशन में नौ घंटे लगे।

अंतरिक्ष में चूजे

लुईविले। अंतरिक्ष शटल यान डिस्कवरी में पहली बार चूजे पैदा हुए हैं। अंतरिक्ष यान में जान-बूझकर अंडे रखे गए थे, जिससे पता चले कि वहां पैदा होने वाले जीव-जंतुओं पर क्या असर पड़ता है?

कंप्यूटर डिक्शनरी

नई दिल्ली। संपूर्ण अंग्रेजी डिक्शनरी की कंप्यूटर किताब तैयार की गई है। इसके जरिए कंप्यूटर पर कोई भी सही शब्द और उसका मतलब देखा जा सकता है। इसे तैयार करने में डेढ़ वर्ष लगा है, जबकि आक्सफोर्ड की बारह खंडों में छपी डिक्शनरी को तैयार करने में पूरे पचास वर्ष लगे थे।

Scanned with CamScanner

दरियाई घोड़ा मिला

ढाका । गत वर्ष आई बाढ़ में भारत के छह दरियाई घोड़े भाग निकले थे । उनमें चार तो पकड़ लिए गए थे । बाकी बचे दो में से एक बंगला देश जा पहुंचा । अब बंगला देश ने उसे भारत को वापस कर दिया है ।

प्राचीन काल के हिंदू

हैदराबाद । वैदिक और उपनिषद् काल के हिंदू चिंतक ज्यादा बुद्धिमान, अंधविश्वासों से मुक्त और वैज्ञानिक सोच से जुड़े थे । बी. एम. बिरला तारांघर के निदेशक डा. सिद्धार्थ ने यह बात कही । उन्होंने आगे कहा— चूंकि यूनानियों की अंकगणितीय तकनीक दोषपूर्ण थी, इसलिए उन्होंने नक्षत्रविद्या को बहुत नुकसान पहुंचाया ।

जमीन के नीचे

कार्लस्बेड (अमरीका) । अंतरिक्ष में यदि कोई लम्बे समय तक अकेला रहे, तो उस पर क्या प्रभाव पड़ता है ? यह जानने के लिए जमीन के दस मीटर अंदर बनी गुफा में एक महिला को रखा गया है । स्टेफेनिया नाम की यह महिला इस गुफा में पांच महीने रहेगी । यह महिला खाती-पीती है, योग करती है और पढ़ती है । अपने वैज्ञानिक साथियों से वह सिर्फ कंप्यूटर के जरिए ही बातचीत कर सकती है ।

भीम बच्चे

तेहरान । ईरान के तीन भाई-बहनों का वजन विश्व में सबसे अधिक है । साढ़े आठ साल के बच्चे का वजन ६९ कि. ग्रा., उससे छोटे पौने छह साल के बच्चे का ६० कि. ग्रा. और सबसे छोटे साढ़े चार साल के बच्चे का ४० कि. ग्रा. है । ये तीनों प्रतिदिन ७५ रोटी, ६० आलू तथा ६ कि. ग्रा. पनीर खाते हैं । इनके पिता को इनकी जरूरतें पूरी करने के लिए घर में एक बेकरी खोलनी पड़ी है ।

परोपकारी चिड़िया

वाशिंगटन । जो लोग जंगल में शहद लेने जाते हैं, उन्हें एक जंगली चिड़िया रास्ता दिखाती है । इस चिड़िया का नाम ही 'ग्रेटर हनी गाइड' रखा गया है । यह जंगल में जाने वाले लोगों को उस स्थान पर ले जाती है, जहां शहद के छत्ते लगे होते हैं ।

गुदगुदा उपहार

मांट्रियल । उनका नाम है पापा मरे । वृद्ध पापा हर वर्ष दुनिया के दस हजार गरीब बच्चों को गुदगुदे बिस्तर उपहार में देते हैं । अब तक वह डेढ़ लाख बच्चों को बिस्तर दे चुके हैं । उनका सपना है कि वह कम से कम दस लाख बच्चों को ये बिस्तर दे सकें ।

पुरानी ममी

काहिरा । यहां छियालीस सौ वर्ष पुरानी ममी मिली है । इसके सिर पर सोने का मुकुट और आसपास सोने के आभूषण भी मिले हैं ।

ब्रुश निगल गया

मास्को । मंजन करते हुए वह टूथ ब्रुश को निगल गया था, मगर कोई डाक्टर उसकी बात पर भरोसा नहीं कर रहा था । एक्स-रे में भी प्लास्टिक का ब्रुश दिखाई नहीं देता था । अंत में एक डाक्टर ने उसकी बात मानी । आपरेशन करके ब्रुश को बाहर निकाला गया ।

डाइनोसोर कहां

ब्यूनस आयर्स । कहते हैं कि अर्जेंटाइना की झील में एक दैत्य या डाइनोसोर का कोई वंशज रहता है । इस दैत्य या डाइनोसोर को महुएल हुआई नाम की झील में देखने का दावा बहुत से लोग करते हैं । इस पर फिल्म भी बनाई गई है । इसके नाम से बनाए गए पोस्टर, चित्र व कमीजें धड़ल्ले से बिक रही हैं ।

नन्हे समाचार

- दक्षिणी ध्रुव पर दूसरा स्थायी केंद्र 'मैत्री' बनकर तैयार हो गया है । पहले केंद्र का नाम है दक्षिण गंगोत्री ।
- एक आदमी को इंग्लैंड में ११०० वर्ष पुराना चांदी का सिक्का मिला । वह डेढ़ लाख रुपए में बिका ।
- दक्षिण अफ्रीका में सड़कों पर आपात्कालीन सूचना के लिए यंत्र लगाए गए, तो सारी घंटियां एक साथ बज उठीं । बबूनों ने सब यंत्रों के बटन दबा दिए थे ।
- महाराष्ट्र में अमरावती के पास मेलघाट का सुरक्षित बाघ वन सैलानियों के लिए खोल दिया गया है । १९७३ में यहां ३० बाघ थे, जो आज बढ़कर ८० हो गए हैं ।
- फ्रांस की राजधानी पेरिस की सड़कों पर बहुत भीड़भाड़ रहने लगी है । उसे कम करने के लिए धरती के अंदर सुरंगें बनाई जाएंगी । उनमें सड़कें होंगी ।
- भुवनेश्वर में उड़ीसा का प्रथम प्लेनिटोरियम या तारांघर बनकर तैयार है ।
- दक्षिणी ध्रुव समुद्र में एक विशाल हिम पर्वत देखा गया है, जो आकार में हांगकांग जितना बड़ा है । आजकल धीरे-धीरे पिघल रहा है ।
- भारतीय आभूषणों की विदेशों में भारी मांग है । हर वर्ष पौने चार अरब रुपए के आभूषणों का निर्यात किया जाता है ।
- खबर है कि दिल्ली में पेड़ों की संख्या में कमी होती जा रही है ।
- चंडीगढ़ में तोतों के लिए एक शरण स्थल बनाया गया है ।
- १ जनवरी १९८८ को देश के अस्पतालों में रोगियों के लिए ६,२७,८५९ पलंग मौजूद थे । इनमें से ७८ प्रतिशत शहरों में हैं ।

Scanned with CamScanner

सचित्र समाचार

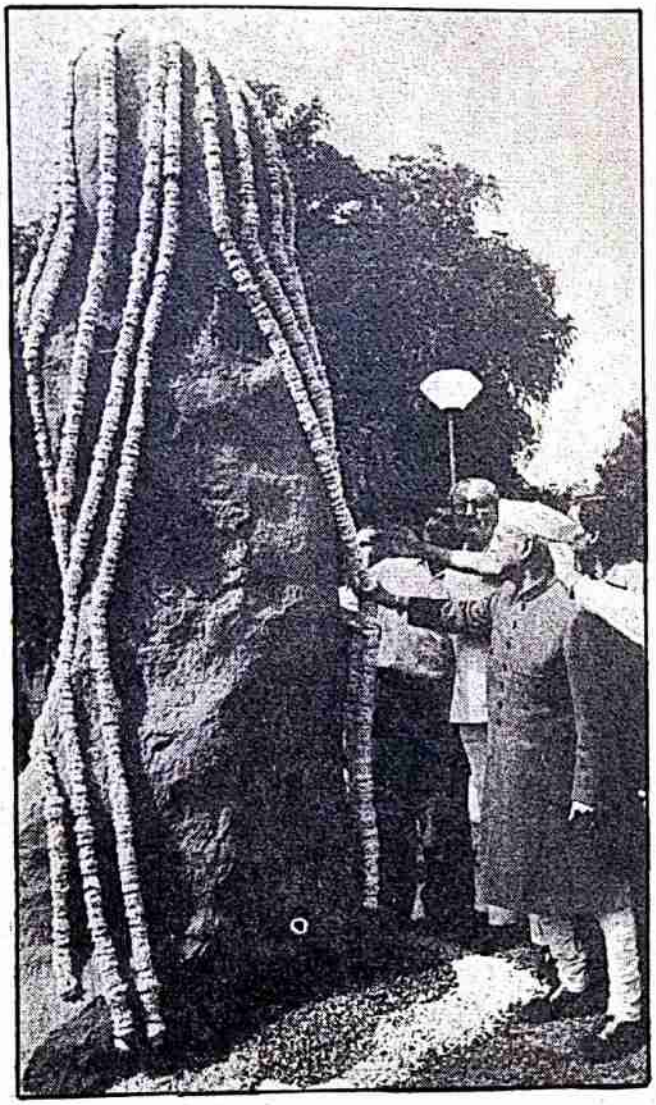

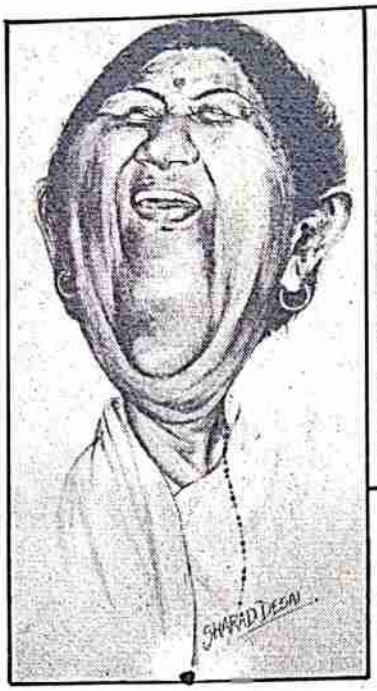

हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन समूह की कार्टून प्रतियोगिता : जानी-मानी गायिका लता मंगेशकर और क्रिकेट खिलाड़ी कपिलदेव के कार्टून बहुत सराहे गए।

दिल्ली में पुराने सचिवालय पर स्वतंत्रता शिला लगाई गई। उद्घाटन उप राष्ट्रपति डा. शंकरदयाल शर्मा ने किया। साथ में उप राज्यपाल श्री रोमेश भंडारी।

डाक विभाग ने शहीद लक्ष्मण नायक पर टिकट जारी किया।

माता जगदम्बा : बालों की कुल लम्बाई इक्कीस फुट।

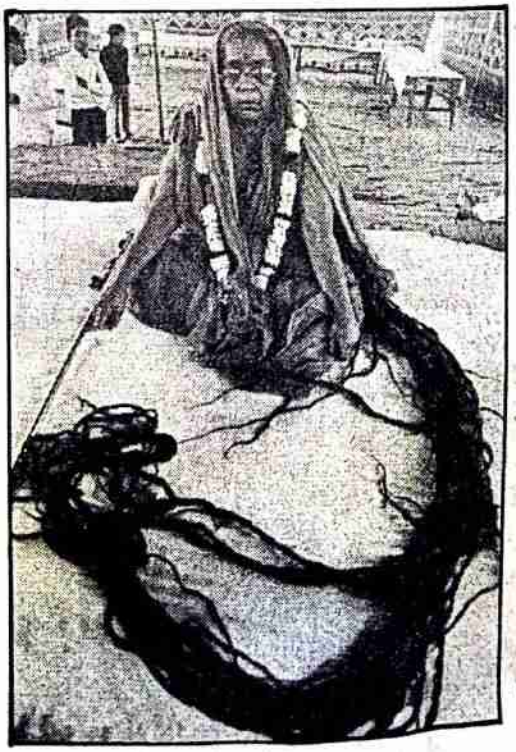

नाक कैसी हो गई, जैसे लड्डू उग आया हो। ऐसी लाखों नाक 'बच्चों को बचाओ फंड' के लिए पैसा जमा करने के लिए ब्रिटेन में बेची गईं।

Scanned with CamScanner

उसी रात को.....

हरदयाल को तुरंत देश से बाहर भेज दो। छोटे लाट की काउंसिल ने उसे गिरफ़्तार करने की ठान ली है।

हां। हरदयाल को गिरफ़्तारी से बचाना ही होगा।

किंतु.....

नहीं, गिरफ़्तारी के डर से मैं अपनी मातृभूमि को नहीं छोड़ सकता।

तुम पढ़े-लिखे हो। विदेश में रह कर देश की अधिक सेवा कर सकोगे। सारी दुनिया का सहयोग चाहिए।

हरदयाल विवश हो पेरिस चले गए। विदेशी नेताओं से मिल कर भारत की आजादी के लिए समर्थन जुटाने लगे। उनके लेखों से अंग्रेजी सरकार की नींद हराम हो गई....

विदेश में रह कर हम मातृभूमि के प्रति अपनी ज़िम्मदारियों से नहीं बच सकते। हर भारतीय को आजादी के लिए कुछ न कुछ करना ही है।

हम तन-मन-धन से तैयार हैं।

दिल्ली में वायसराय लार्ड हार्डिंग पर बम फेंका गया। लाला हरदयाल ने इस बम कांड पर एक पुस्तिका प्रकाशित की। भारत व अन्य देशों में उसे भेजा....

साथियो, तैयार हो जाओ। सेवा और बलिदान का व्रत लो। बम ने अपना संदेश सुना दिया है।

Scanned with CamScanner

अमरीका में देश की आजादी के लिए गदर पार्टी बनाई। गदर नाम का एक अखबार निकाला। अंग्रेजी सरकार किस तरह भारत का दमन कर रही है— सारे संसार को बताया....

ब्रिटिश सरकार के दबाव डालने पर अमरीका ने लाला हरदयाल को गिरफ़्तार कर लिया....

पर वह जमानत पर छूट गए। ब्रिटिश सरकार और कुछ करती, इस से पहले ही वह जिनेवा चले गए। वहां से वह ज्यूरिख गए। बरकतुल्ला, तारकनाथ दास आदि अनेक देश भक्तों से मिले। देश को आजाद कराने की अनेक योजनाएं बनीं....

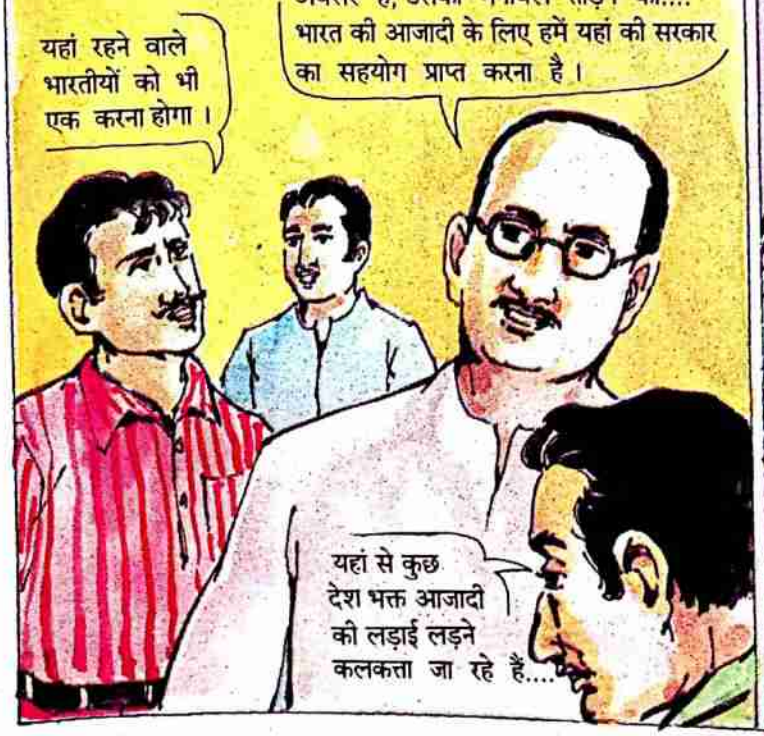
यहां रहने वाले भारतीयों को भी एक करना होगा।
अंग्रेजी सरकार महायुद्ध में फंसी है। यही अवसर है, उसका मनोबल तोड़ने का.... भारत की आजादी के लिए हमें यहां की सरकार का सहयोग प्राप्त करना है।
यहां से कुछ देश भक्त आजादी की लड़ाई लड़ने कलकत्ता जा रहे हैं....

किंतु दुर्भाग्य फिर आड़े आया....

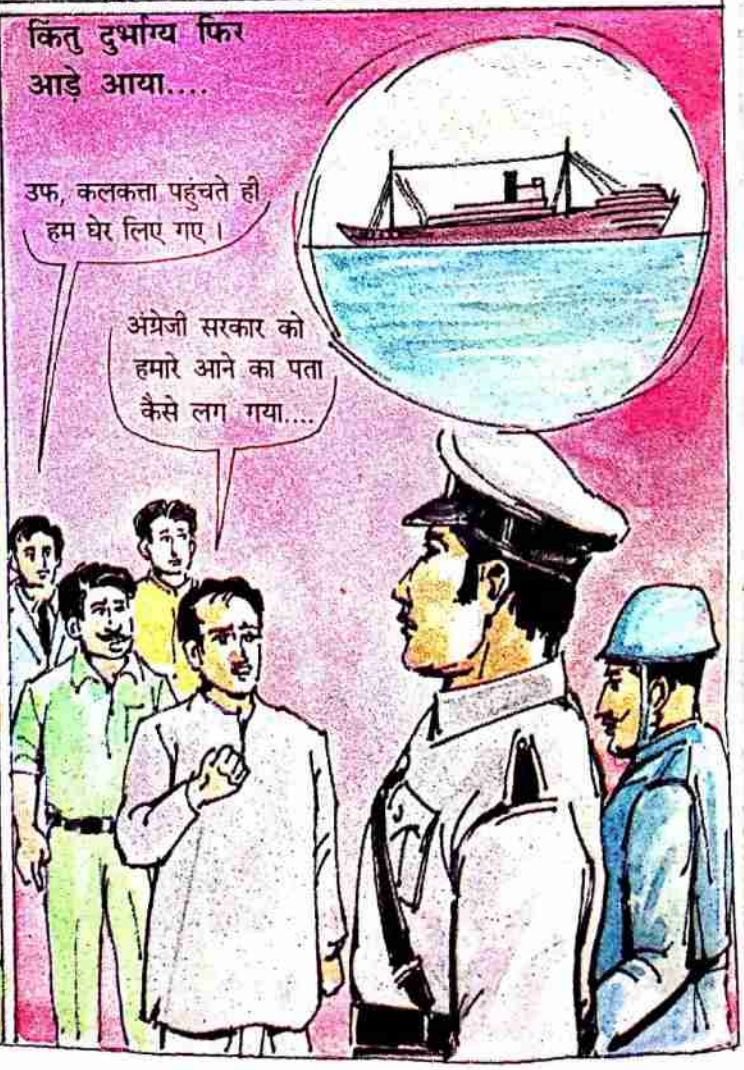

Scanned with CamScanner

अंग्रेजी सरकार से लड़ाई में मुस्लिम देशों का सहयोग प्राप्त करने के लिए लाला हरदयाल इस्ताम्बूल गए। बड़ी चतुराई से एक रेशमी कोट के ऊपर अपील लिख कर उन्हें भिजवाई, किंतु अंग्रेज गुप्तचरों ने उसे बीच ही में पकड़ लिया..

इस रेशमी कोट पर भारत की आजादी में हाथ बटाने की अपील लिखी है। कोट ले जाने वाले को गिरफ़्तार कर लिया है।

पर वह कुछ बोलता ही नहीं।

जर्मन सरकार से आश्वासन पा, लाला हरदयाल जर्मनी पहुंचे। पंजाब और बंगाल में एक साथ सशस्त्र विद्रोह करने की योजना बनी....

दो जहाज भर कर गोला-बारूद बंगाल के लिए भेजा जा रहा है। साथ जाएंगे सत्येन्द्र नाथ सेन और पिंगले....

इन के वहां पहुंचते ही विद्रोह भड़क उठेगा....

किंतु अस्त्र-शस्त्रों से भरे वे दोनों जहाज भारत पहुंचने से पहले ही अंग्रेजों ने पकड़ लिए। सारे देश भक्त गिरफ़्तार कर लिए गए....

ओह, यह योजना भी ठप्प हो गई।

जर्मन सरकार से खुले समर्थन की बात करनी होगी।

Scanned with CamScanner

जर्मन सरकार खुले रूप में सहायता करने के लिए तैयार न थी। लाला हरदयाल के साथ इसी बात पर उसका मन-मुटाव हो गया और....

विदेशों में भारत की आजादी की अलख जगाने वाला वह शेर जब जर्मनी की जेल में बंद था। भारत में आजादी की लड़ाई जोर-शोर से छिड़ चुकी थी.....

एक वर्ष बाद वह छूटे, तो अमेरिका चले गए।

वह भारत लौटना चाहते थे, किंतु उनके भारत प्रवेश पर गोरी सरकार ने प्रतिबंध लगा रखा था। सन १९३९ में उन्हें सूचना मिली कि वह भारत लौट सकते हैं, किंतु तभी ४ मार्च को अमरीका में उनका निधन....

हरदयाल हिंदी, अंगरेजी के अलावा संस्कृत, पारसी, फ्रेंच आदि के ज्ञाता थे। युवकों को स्वतंत्रता के लिए मर मिटने की प्रेरणा दी।

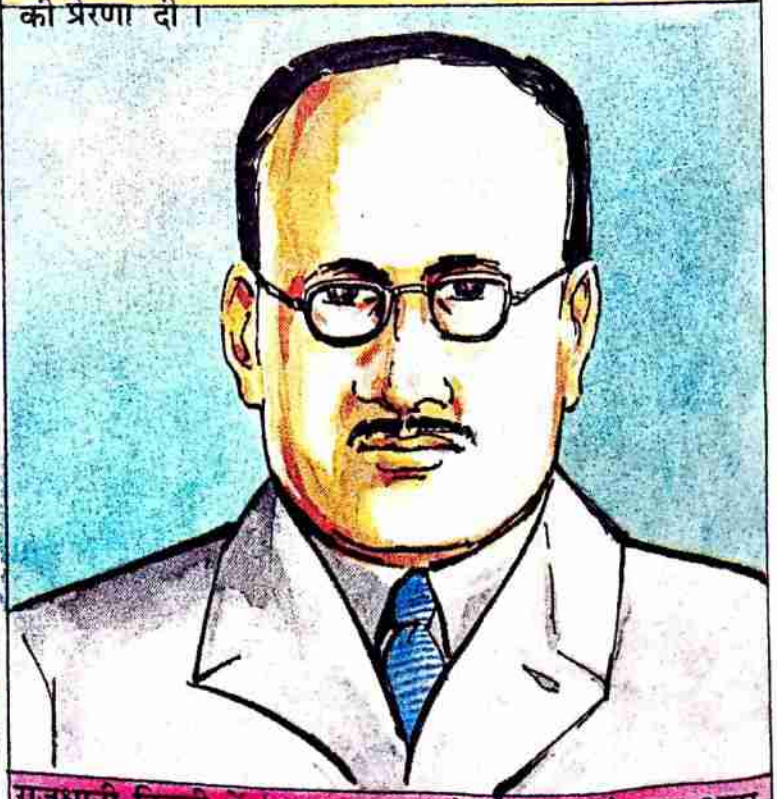

राजधानी दिल्ली में 'हरदयाल लायब्रेरी' भारत के उस अमर सपूत को समर्पित है। ऐसे महापुरुष को शत शत वंदन....

Scanned with CamScanner

बगदाद का बादशाह

— कमला चमोला

बहुत दिनों की बात है। बगदाद में एक क्रूर और निरंकुश बादशाह कयामत खां का राज्य था। अपने नाम के अनुसार ही वह जिस दिशा में निकलता, कयामत ही बरपा देता था। अपनी सल्तनत को बढ़ाने के लिए उसने कई लड़ाइयां लड़ीं और आसपास के छोटे-बड़े सभी राज्यों को बगदाद में मिला दिया। उनके खजाने लूटकर उसने अपने खजाने को खूब भर लिया। सोना-चांदी, हीरे-जवाहरात जमा करने का उसे बहुत लालच था। जब भी किसी राज्य को जीतता, तो उसके सैनिक घर-घर जाकर लूटपाट मचा देते। जो जरा भी आनाकानी करता, उसे तुरंत मौत के घाट उतार दिया जाता। लड़ाइयों में हजारों सैनिकों के सिर वह तलवार से काट चुका था। फिर भी उसकी हवस अभी पूरी नहीं हुई थी। वह दुनिया की सारी दौलत अपने अधिकार में लेने के सपने देखा करता था।

एक दिन उसे खबर मिली थी, अबादीन राज्य का सुलतान सुलेमान बहुत ही धनवान है। उसके पास हीरे-जवाहरातों का अनमोल खजाना है। कयामत खां ने अपने वजीर आदिलजुबां को बुलाया। कहा— "हम अबादीन राज्य को भी फतह करना चाहते हैं, तुरंत कूच की तैयारी की जाए।"

"लेकिन हुजूर, बगदाद और अबादीन के बीच में सौ कोस लम्बा रेगिस्तान है। रास्ते में पानी या रसद का कोई इंतजाम नहीं है। सूरज दिन भर आग उगलता है। चारों ओर तपती रेत है। ऐसे में हम रास्ता भी भटक सकते हैं। वहां कई काफिले यूं ही रेगिस्तान में भटक-भटककर मौत के मुंह में समा चुके हैं। फौज को लेकर उस रेगिस्तान को पार करना मुश्किल काम है।"— वजीर ने बताया।

"हमें डराने की कोशिश मत करो आदिलजुंबा।"— कयामत खां कठोर आवाज में बोला— "हम अबादीन तक पहुंच कर ही दम लेंगे। हमने सुना है सुलेमान के पास हीरे-मोतियों का अनमोल खजाना है। हम उसे भी अपने कब्जे में करेंगे। फौज को तैयार होने का हुक्म दो। दो माह के लिए रसद और पानी का इंतजाम कर, ऊंटों पर लदवा दो।"— बादशाह ने हुक्म दिया।

वजीर समझ गया कि इस लालची बादशाह पर समझाने का कोई असर नहीं होगा, इसलिए वह बादशाह का हुक्म पूरा करने चल पड़ा। फौज तैयारियों में जुट गई। लगभग डेढ़ सौ ऊंटों पर रसद और मशकों में भरा पानी लाद दिया गया। इस तरह अपनी फौज और वजीर के साथ बादशाह कयामत खां बगदाद से रवाना हो गया।

धीरे-धीरे काफिला आगे बढ़ता जा रहा था। भयंकर गर्मी थी। दिन भर सूरज जैसे अंगारे बरसाता, पर उन सबकी परवाह किए बिना काफिला बढ़ता जा रहा था। फौज को लगभग पंद्रह दिन हो गए थे इस सफर पर निकले। अचानक एक दिन जोर की आंधी चली। तूफानी हवा रेत के टीले उड़ाकर इधर-उधर बिखेर रही थी। लग रहा था, जैसे प्रलय हो रही है। उस भयंकर रेत के अंधड़ में कुछ नजर नहीं आ रहा था।

तूफान से बिदककर अचानक बादशाह कयामत खां का ऊंट भागने लगा। कयामत खां ने उसकी

Scanned with CamScanner

बगदाद का बादशाह

— कमला चमोला

बहुत दिनों की बात है। बगदाद में एक क्रूर और निरंकुश बादशाह कयामत खां का राज्य था। अपने नाम के अनुसार ही वह जिस दिशा में निकलता, कयामत ही बरपा देता था। अपनी सल्तनत को बढ़ाने के लिए उसने कई लड़ाइयां लड़ीं और आसपास के छोटे-बड़े सभी राज्यों को बगदाद में मिला दिया। उनके खजाने लूटकर उसने अपने खजाने को खूब भर लिया। सोना-चांदी, हीरे-जवाहरात जमा करने का उसे बहुत लालच था। जब भी किसी राज्य को जीतता, तो उसके सैनिक घर-घर जाकर लूटपाट मचा देते। जो जरा भी आनाकानी करता, उसे तुरंत मौत के घाट उतार दिया जाता। लड़ाइयों में हजारों सैनिकों के सिर वह तलवार से काट चुका था। फिर भी उसकी हवस अभी पूरी नहीं हुई थी। वह दुनिया की सारी दौलत अपने अधिकार में लेने के सपने देखा करता था।

एक दिन उसे खबर मिली थी, अबादीन राज्य का सुलतान सुलेमान बहुत ही धनवान है। उसके पास हीरे-जवाहरातों का अनमोल खजाना है। कयामत खां ने अपने वजीर आदिलजुबां को बुलाया। कहा— "हम अबादीन राज्य को भी फतह करना चाहते हैं, तुरंत कूच की तैयारी की जाए।"

"लेकिन हुजूर, बगदाद और अबादीन के बीच में सौ कोस लम्बा रेगिस्तान है। रास्ते में पानी या रसद का कोई इंतजाम नहीं है। सूरज दिन भर आग उगलता है। चारों ओर तपती रेत है। ऐसे में हम रास्ता भी भटक सकते हैं। वहां कई काफिले यूं ही रेगिस्तान में भटक-भटककर मौत के मुंह में समा चुके हैं। फौज को लेकर उस रेगिस्तान को पार करना मुश्किल काम है।"— वजीर ने बताया।

"हमें डराने की कोशिश मत करो आदिलजुंबा।"— कयामत खां कठोर आवाज में बोला— "हम अबादीन तक पहुंच कर ही दम लेंगे। हमने सुना है सुलेमान के पास हीरे-मोतियों का अनमोल खजाना है। हम उसे भी अपने कब्जे में करेंगे। फौज को तैयार होने का हुक्म दो। दो माह के लिए रसद और पानी का इंतजाम कर, ऊंटों पर लदवा दो।"— बादशाह ने हुक्म दिया।

वजीर समझ गया कि इस लालची बादशाह पर समझाने का कोई असर नहीं होगा, इसलिए वह बादशाह का हुक्म पूरा करने चल पड़ा। फौज तैयारियों में जुट गई। लगभग डेढ़ सौ ऊंटों पर रसद और मशकों में भरा पानी लाद दिया गया। इस तरह अपनी फौज और वजीर के साथ बादशाह कयामत खां बगदाद से रवाना हो गया।

धीरे-धीरे काफिला आगे बढ़ता जा रहा था। भयंकर गर्मी थी। दिन भर सूरज जैसे अंगारे बरसाता, पर उन सबकी परवाह किए बिना काफिला बढ़ता जा रहा था। फौज को लगभग पंद्रह दिन हो गए थे इस सफर पर निकले। अचानक एक दिन जोर की आंधी चली। तूफानी हवा रेत के टीले उड़ाकर इधर-उधर बिखेर रही थी। लग रहा था, जैसे प्रलय हो रही है। उस भयंकर रेत के अंधड़ में कुछ नजर नहीं आ रहा था।

तूफान से बिदककर अचानक बादशाह कयामत खां का ऊंट भागने लगा। कयामत खां ने उसकी

Scanned with CamScanner

लगाम खींचकर रोकने का बहुत प्रयास किया, पर वह भागता ही रहा। दो-तीन घंटे वह इसी तरह भागता रहा। जब तूफान कुछ थमा, तब वह भी रुक गया। कयामत खां ने राहत भरी सांस ली। अब उसने चारों ओर देखा, दूर-दूर तक रेत ही रेत नजर आ रहा था। फौज भी उससे छूट गई थी। बादशाह को दिशा भ्रम हो गया। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह ऊंट को किस दिशा में हांके ?

उसने एक दिशा में ऊंट मोड़ा और चलने लगा। चलते-चलते उसे सारा दिन गुजर गया, पर कहीं भी अपनी फौज नजर नहीं आई। रात वह रेत पर ही पसर कर सो गया। सुबह होते ही उसने फिर चलना शुरू कर दिया। भूख और प्यास से वह बेहाल हो रहा था। जैसे-जैसे सूरज चढ़ रहा था, उसकी प्यास बढ़ती जा रही थी। चिलचिलाती धूप में उसका गला सूख रहा था। तालू में कांटे से चुभ रहे थे। उसे लगा, यदि कुछ देर उसे पानी न मिला, तो प्यास से तड़प-तड़पकर मर जाएगा। कई बार धूप में चमकती रेत से उसे तालाब का भ्रम होता। वह तेजी से उसी दिशा में ऊंट दौड़ाता, पर वहां मिलती तपती रेत। यह सब नजर का धोखा ही था।

अब बादशाह बेदम हो गया था। प्यास के कारण

उसकी सांस धौंकनी की तरह चलने लगी। अपनी मौत उसे नजदीक नजर आ रही थी। औंधे मुंह वह ऊंट की काठी में लेटकर अपनी मौत का इंतजार करने लगा। तभी उसे किसी के पांवों की आहट सुनाई दी। उसने चौंककर सिर उठाया। मुड़कर पीछे देखा, एक फकीर कंधे पर झोला और हाथ में छोटी मशक लिए चला आ रहा था। कयामत खां के मन में आशा का संचार हुआ। वह तुरंत ऊंट से उतरा। फिर उस फकीर से बोला— "बाबा, मैं बगदाद का बादशाह कयामत खां हूं। इस रेगिस्तान में रास्ता भटक गया हूं।"

—"वही बादशाह, जिसकी धन-दौलत और जमीन की भूख कभी नहीं मिटती ?"

"जी, हां।"— बादशाह शर्मिंदगी भरे स्वर में बोला—"पर इस समय मैं बहुत मुसीबत में हूं। प्यास से मेरा गला सूखा जा रहा है। दम निकलने वाला है। क्या आप मुझे ऐसी जगह बता सकते हैं, जहां मुझे पीने को पानी मिल जाए ?"

"पानी तो मेरी मशक में ही है। वैसे यहां कोसों दूर तक पानी का नाम-निशान नहीं है।"— फकीर ने कहा।

—"मेहरबानी करके आप मुझे थोड़ा पानी पिलाकर मेरी जान बचाएं। मैं आपका अहसान कभी नहीं भूलूंगा।"

बादशाह की गिड़गिड़ाहट सुन, फकीर मुस्कराकर बोला— "इस रेगिस्तान में पानी की एक-एक बूंद कीमती है। यह पानी मैं तुम्हें यूं ही नहीं पिला सकता। पहले बताओ, इसके बदले में तुम मुझे दोगे क्या ?"

—"इस समय मेरे पास यह ऊंट और कुछ हीरे-मोती के आभूषण ही हैं। ये सब मैं आपको दे दूंगा। बस, आप जल्दी से पानी पिलाकर मेरी जान बचा दीजिए।"

"बस, इतनी ही कीमत दोगे इस पानी की ?"— फकीर बोला।

"इस समय मेरे पास और कुछ नहीं है। हां,

Scanned with CamScanner

बगदाद पहुंचकर आप जो कहेंगे, वह दे दूंगा।"

— "तो सुनो, मुझे इस प्यास बुझाने के बदले तुम्हारा सारा राज्य और खजाना चाहिए। कहो, मंजूर है यह सौदा ?"

फकीर की बात पर बादशाह एक दो पल सोचकर बोला— "ठीक है, मैं सब कुछ आपको सौंपने को तैयार हूं। अब जल्दी से मुझे पानी पिला दीजिए। मैं वायदा करता हूं मैं सब कुछ आपको दे दूंगा। अब देर न कीजिए।" अब फकीर ने मुसकराकर मशक बादशाह को दे दी। बादशाह गटागट पानी पीने लगा। पानी बहुत ही ठंडा और मीठा था। बादशाह ने तृप्ति भरी सांस ली। बोला— "पानी नहीं आबहयात है। अब मेरी जान में जान आई है। बहुत-बहुत शुक्रिया फकीर बाबा।"

एकाएक फकीर क्रोध भरे स्वर में बोला— "फकीर अब मैं नहीं तुम हो। बगदाद के बादशाह को फकीर कहने की गुस्ताखी कैसे की तुमने। फकीर तुम हो, एक भी कौड़ी नहीं रही तुम्हारे पास इस सौदे के बाद।"

"जी, हां।"— कयामत खां सिर झुकाकर बोला— "सचमुच मुझसे गलती हो गई। आप ठीक फरमाते हैं। मैं सचमुच फकीर और आप बादशाह हैं।"

एकाएक फकीर जोर-जोर से हंसने लगा। यह देख, हैरानी से कयामत खां बोला— "इस उजाड़ रेगिरस्तान में आपको हंसने के लिए भला कौन-सी बात मिल गई ?

— "मैं तो तुम पर हंस रहा हूं।"

"मुझ पर ?"— कयामत खां हैरानी से बोला।

—"हां, तुम पर। तुमने धन-दौलत, सोना-चांदी, महल, जमीन के पीछे अपना दीन-ईमान सब छोड़ दिया था। हजारों लोगों का लहू बहाया। अपनी प्रजा पर जुल्म ढाए और तब जाकर यह दौलत इकट्ठी हुई। पर इस सब दौलत की कीमत आखिर क्या निकली, दो चुल्लू पानी। क्या इसीलिए तुमने लूट-पाट मचाई ? क्या इसी के लिए अपनी प्रजा पर जुल्म ढाए ?"

फकीर की बात सुनकर कयामत खां पत्थर के बुत की तरह खड़ा रह गया। उसका दिमाग चक्कर खाने लगा। सच तो कहा फकीर ने। कयामत खां का मन पश्चात्ताप से भर उठा।

वह फकीर के कदमों में गिर पड़ा। रोते हुए बोला— "आपने मेरी आंखें खोल दीं। अब मैं आगे नहीं जाऊंगा।" फकीर ने बादशाह को प्यार से समझाया— "तुम अब भी बगदाद के बादशाह हो। जाओ, वापस जाकर अपनी प्रजा का दुःख-दर्द जानने की कोशिश करो। उनके घावों पर मरहम लगाओ। लोगों की भलाई में बाकी दिन गुजारो। उस बेशुमार दौलत को अंधेरी कोठरी में बंद न रख कर, नेक कामों में लगाओ। यही तुम्हारा प्रायश्चित होगा।"

इसके बाद फकीर ने बादशाह को सही रास्ता दिखाया। वह शीघ्र ही अपने काफिले से जा मिला। उसे देखकर वजीर ने राहत भरी सांस ली। बोला— "कहां चले गए थे आप ! हमने आपको बहुत खोजा। अब हम आगे बढ़ते हैं।"

"आगे नहीं, वापस बगदाद चलो।" बादशाह के हुक्म पर काफिला वापस बगदाद की ओर मुड़ चला।

Scanned with CamScanner

नींद आ गई

—रवि दिवाकर

मुनिवर शुक्राचार्य बड़े दयालु पुरुष थे। दैत्यों को देवताओं के हाथों पराजय मिली थी। वे अपना राज्य छिन जाने से इधर-उधर भटक रहे थे। वे शुक्राचार्य के पास पहुंचे। दैत्यों के कहने पर उन्होंने उत्तर दिया— "तुम डरो मत। मैं अपने तेज से तुम्हारे लिए यहां रहने की व्यवस्था कर दूंगा।" शुक्राचार्य मंत्र बल से सब कुछ कर सकते थे। शुक्राचार्य का सहारा पाकर दैत्य निर्भय हो गए। गुप्तचरों ने यह खबर देवताओं के पास पहुंचा दी। यह सुनकर सभी देवता इंद्र के साथ विचार करने लगे। शुक्राचार्य के मंत्र में महान शक्ति है, यह समझकर उनमें घबराहट पैदा हो गई। वे सोचने लगे— 'जब तक दैत्य मंत्र का बल पाकर हमसे शक्तिशाली बनें, उससे पहले ही उनको नष्ट कर देना अच्छा है। वे हार जाएंगे, तो भय से पाताल लोक में जाकर छिप जाएंगे।'

ऐसा निश्चय करने के बाद देवताओं ने शस्त्र उठा लिए और दैत्यों पर चढ़ाई कर दी। भीषण युद्ध हुआ। देवताओं के पास उत्तम श्रेणी के शस्त्र थे। उनकी मार से दैत्य घबरा उठे। उन्होंने पुनः शुक्राचार्य की शरण ली। शुक्राचार्य बोले— "जान पड़ता है, तुम लोगों को अजेय करने वाला मंत्र बल अभी मेरे पास नहीं है। उसी मंत्र से तुम देवताओं को जीतने में समर्थ हो सकोगे। कुछ दिन प्रतीक्षा करो। मैं मंत्र की प्राप्ति के लिए भगवान शंकर के पास जाता हूं। वहां से मत्र की सिद्धि लेकर शीघ्र लौटूंगा।"

शुक्राचार्य की बात सुनकर दैत्य बोले— "मुनिवर, देवताओं की शक्ति हमसे ज्यादा है। वे हम पर कभी भी आक्रमण कर सकते हैं। ऐसी दशा में हम कब तक आपका इंतजार करेंगे ?"

शुक्राचार्य बोले— "मैं जब तक शंकरजी के पास से मंत्र लेकर आऊं, तब तक तुम्हें किसी तरह देवताओं से बचकर रहना जरूरी है। और कुछ न बन पड़े, तो तपस्वी बनकर समय की प्रतीक्षा करो। यदि छल-बल से भी काम चले, तो चलाओ। अपने प्राणों की रक्षा के लिए मनुष्य को सोच-विचारकर साम, दाम, दंड, भेद से कार्य लेना चाहिए। मैं भगवान शंकर से मंत्र लेकर शीघ्र ही लौटूंगा। उसकी शक्ति का सहारा ले, हम पुनः देवताओं को पराजित करेंगे।"

शुक्राचार्य मंत्रसिद्धि के लिए चले गए। अपने गुरु की बात मान, दैत्यों ने देवताओं के साथ मैत्री दर्शानी शुरू कर दी। वे कहने लगे— "देवताओ, युद्ध से किसी का लाभ नहीं। हम सभी अपने हथियारों को त्याग कर, युद्ध से दूर हो गए हैं। हम युद्ध से ऊब गए हैं। हमें अब राज-पाट भी नहीं चाहिए। बस, हम तपस्वी जीवन बिताएंगे।"

देवता दैत्यों के इस छल में आ गए। उनकी चिंताएं दूर हो गईं। दैत्य तपस्वी का स्वांग बनाकर, कश्यप जी के आश्रम में रहने लगे।

शुक्राचार्य भगवान शंकर के पास कैलाश पर्वत पर पहुंचे। वहां जाकर उन्होंने भगवान शंकर से प्रार्थना की— "प्रभु, मुझे ऐसा मंत्र बल दो, जिसके सहारे दैत्य देवताओं को पराजित कर सकें।"

शंकरजी समझ गए कि दैत्यों के गुरू शुक्राचार्य का प्रयोजन क्या है। उन्होंने सोचा— 'देवताओं की रक्षा तो मुझे करनी ही है।' यह सोचकर शंकरजी ने मुनि को एक बहुत कठिन व्रत करने का आदेश दिया।

शंकरजी ने शुक्राचार्य से कहा— "पूरे सौ वर्षों तक नीचे सिर कर व्रत करना है। यदि इसमें तुम सफल हो गए, तो मंत्र तुम्हें सिद्ध हो जाएगा।"

शुक्राचार्य शंकरजी के आदेश के अनुसार उस

Scanned with CamScanner

मंत्रसिद्धि के व्रत में लग गए।

दैत्यों ने केवल दिखाने के लिए तपस्वियों का रूप बना लिया है, देवता यह जान गए थे। अब उन्होंने फिर से लड़ाई की तैयारी शुरू कर दी। वे अपनी सेना लेकर दानवों के पास पहुंचे। हथियारों से लैस देवताओं को देखकर दानव भय से कांप उठे। उन्हें चारों ओर से देवताओं ने घेर लिया था। दानवों ने देवताओं से विनती भरे स्वर में कहा— "हमने अपने हथियार त्याग दिए। हमारे गुरुदेव कठिन व्रत करने में लगे हैं। ऐसे में तुम्हारा युद्ध करना उचित नहीं।"

देवताओं ने कहा— "तुमने शुक्राचार्य को मंत्र प्राप्त करने के लिए भेज दिया और स्वयं हृदय में कपट रखकर तप कर रहे हो। हमने तुम्हारा अभिप्राय जान लिया है। इसलिए हम लड़ाई को तैयार हुए हैं। तुम भी हथियार उठा लो। हम तुम्हें छोड़ेंगे नहीं।"

देवताओं के वचन सुनकर दानवों ने कुछ देर तक आपस में विचार किया। बाद में वे सब वहां से निकलकर भाग खड़े हुए। डर के मारे वे शुक्राचार्य की माता के पास गए।

दानवों को बहुत अधिक डरे हुए देख, शुक्राचार्य की माता ने उन्हें अभय करने का वचन दिया। वह बोलीं— "डरो नहीं, निर्भय हो जाओ। मेरे पास रहने पर देवता तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ पाएंगे।"

माता की बात सुनकर दानवों का मन शांत हो गया। वे संदेह रहित हो, समय बिताने लगे।

दानवों को भागते हुए देवताओं ने देख लिया था। वे उनका पीछा करते हुए शुक्राचार्य की माता के घर पहुंच गए। वहां देवताओं के सैन्य बल को देख, शुक्राचार्य की माता हंसीं। बोली— "मैं अभी इंद्र सहित सभी देवताओं को नींद के चंगुल में फंसा देती हूं।" यह कहकर उन्होंने निद्रा को आज्ञा दी। वह देवताओं के पास गई। उन पर तुरंत नींद का प्रभाव हो गया। सभी देवता लेटकर खर्राटें भरने लगे। वे कई दिन तक सोते ही रहे। इस बीच दानव भागकर किसी सुरक्षित जगह में जा छिपे।●

लोरी

—कैलाश जैन

मारिलिना दियात्रिच अंग्रेजी और फ्रांसीसी फिल्मों की प्रख्यात पार्श्व गायिका थीं। एक बार वह अपना कार्यक्रम प्रस्तुत करने पेरिस गईं। एक बहुत बड़े हाल में उनका कार्यक्रम था।

संक्षिप्त भूमिका के बाद मारिलिना ने गाना प्रारम्भ किया, तभी हाल में किसी बच्चे के रोने के स्वर गूंज उठे। श्रोताओं को बड़ी झुंझलाहट हुई। स्वयं मारिलिना ने भी गाना बंद कर दिया। बच्चे की मां उसे चुप कराने का प्रयास करती, बड़ी शर्मिंदगी के साथ हाल से उठकर बाहर चली गई।

कुछ क्षणों के बाद जैसे ही मारिलिना ने गाना प्रारम्भ किया कि एक अन्य महिला की गोद का बच्चा रोने लगा। पहले तो महिला ने अपने बच्चे को चुप कराने के लिए उसे थपथपाने का प्रयास किया, पर जब वह चुप नहीं हुआ, तो वह महिला भी उठकर हाल से बाहर जाने लगी।

वह महिला अभी आधी दूरी भी तय नहीं कर पाई थी कि माइक पर मारिलिना की मधुर आवाज गूंजी—"कृपया बाहर मत जाइए। बच्चा रोता है, तो उसे रोने दीजिए। मैं प्रार्थना करती हूं कि अभी जो बहन अपने बच्चे को लेकर हाल से बाहर चली गई हैं, उन्हें भी वापस बुलवा लिया जाए।"

बाहर खड़ी महिला को उसे बच्चे के साथ वापस हाल में बुलाया गया। दोनों महिलाओं को वापस आया देख, मारिलिना ने मधुर आवाज में माइक पर जो गीत प्रारम्भ किया, वह एक अत्यंत भावपूर्ण मीठी लोरी थी। हाल के सन्नाटे में मारिलिना के कंठ से मधुर स्वर फूट रहे थे और माताएं अपने बच्चों को थपकियां देकर सुला रही थीं। उस जादुई लोरी के पूरा होते न होते, सभी बच्चे अपनी माताओं की गोद में मीठी नींद सो चुके थे।

जब हाल में पूरी तरह सन्नाटा छा गया, मारिलिना ने एक से एक खूबसूरत गीत सुनाकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। ●

Scanned with CamScanner

गंगा मिल गई

— डा. मधु धर

हजारों वर्ष पहले पर्वत की तलहटी में एक छोटा-सा गांव था। उसमें चारुशील नामक एक भोला-भाला ब्राह्मण रहता था। एक रात उसका बड़ा पुत्र अचानक बीमार पड़ा। अनेक उपचार और मनौतियों के बाद भी वह ठीक नहीं हुआ। और एक दिन वह इस दुनिया से चल बसा।

पुत्र शोक से दुखी चारुशील अपने गुरू के आश्रम में पहुंचा। निवेदन किया — "भगवन, मैंने ऐसा कौन-सा बुरा कर्म किया, जिनके फलस्वरूप मेरा प्रिय पुत्र अकाल मृत्यु को प्राप्त हुआ ?"

गुरू बोले — "वत्स, मनुष्य को सुख अच्छे कार्यों से मिलता है। पूर्वजन्म के पापों के कारण तुम्हारे इस जन्म के पुण्य नष्ट हो गए हैं, इसीलिए तुम्हें पुत्र शोक हुआ। अब तुम्हें शेष जीवन गंगास्नान व प्रभु भक्ति में बिताना चाहिए। इसी से तुम्हारा अगला जन्म सुधर सकता है।"

अपनी समस्त सम्पत्ति छोटे पुत्र और पत्नी को सौंप, चारुशील साधु वेश में गंगातट की ओर चल दिया। गंगा वहां से काफी दूर थी। उससे पहले उसने कभी गंगा नदी देखी नहीं थी। केवल गंगा के पुण्य प्रताप के बारे में पढ़ा और जाना था।

कुछ दिन की कठिन यात्रा के पश्चात् वह एक पहाड़ी नदी के पास पहुंचा। उसने जलधारा को देखकर सोचा — 'निश्चय ही यही गंगा है।' हर्ष से गद्‌गद् होकर उसने नदी के जल को मस्तक से लगाया। फिर वह उसी नदी तट पर रहने लगा। प्रतिदिन उसमें स्नान कर, भगवान का ध्यान करता। इस प्रकार पांच वर्ष बीत गए।

एक दिन तीर्थाटन के लिए निकला एक संन्यासी संयोगवश वहां आ पहुंचा। उसने ब्राह्मण से पूछा — "तपस्वी, तुम यहां क्या कर रहे हो ?"

प्रणाम करते हुए चारुशील ने उत्तर दिया — "प्रभु, मैं गंगा स्नान करके पूर्वजन्म के पापों का प्रायश्चित्त कर रहा हूं।"

संन्यासी ने कहा — "अभागे, तुम्हें किसने बताया कि यह गंगा है ? गंगा तो यहां से सैकड़ों कोस दूर है। यह तो एक साधारण पहाड़ी नदी है।"

ब्राह्मण ने संन्यासी से अपनी भूल के लिए क्षमा मांगी। उसने तुरंत उस स्थान को छोड़, गंगातट की ओर प्रस्थान किया। चलते-चलते वह एक विशाल नदी के तट पर पहुंचा। उसके विशाल पाट को देखकर वह सोचने लगा — 'पतित पावनी गंगा अवश्य यही होगी।' इसी विश्वास से प्रेरित हो, अब वह उसी नदी के तट पर रहने लगा। श्रद्धा पूर्वक स्नान करके तपस्या करने लगा। ऐसा करते-करते पांच वर्ष और व्यतीत हो गए।

एक दिन उसकी भेंट दूर से आए एक तीर्थ यात्री से हो गई। अभिवादन के पश्चात् तीर्थ यात्री बोला — "चारों धामों की यात्रा कर, अब मैं अपने गुरू के पास लौट रहा हूं। परंतु तुम यहां क्या कर रहे हो ? यहां आसपास न तो कोई तीर्थ है, और न कोई धाम।"

ब्राह्मण बोला — "महाभाग, मैं यहां गंगा स्नान करके पूर्वजन्म के पापों का प्रायश्चित कर रहा हूं।"

तीर्थ यात्री ने कहा — "यह गंगा नहीं है। इस साधारण नदी में स्नान कर, अपना अमूल्य जीवन अकारथ गंवा रहे हो।"

ब्राह्मण ने अत्यंत विस्मय से पूछा — "तो गंगा कहां है। कैसी है ?"

तीर्थ यात्री बोला — "गंगा तो गंगा है। वह अभी बहुत दूर है।"

नतमस्तक होते हुए ब्राह्मण ने कहा — "भगवन्, मेरा अहोभाग्य कि आपसे भेंट हुई। मैं बेकार ही इसे गंगा समझे था।" — ऐसा कहकर वह तुरंत गंगातट की ओर चल दिया।

घने जंगलों व दुर्गम पर्वतों को पारकर कई महीने पश्चात् वह चंद्रभागा नदी के तट पर पहुंचा। लम्बी

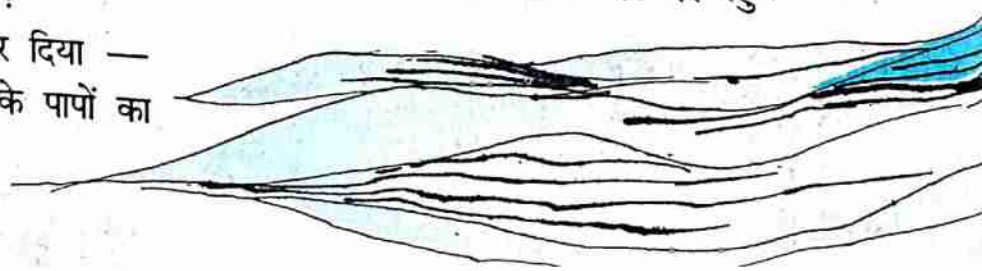

Scanned with CamScanner

यात्रा करने से उसका शरीर थक गया था। परंतु उसका मन अत्यंत आह्लादित था। नदी के तट पर यात्रियों की भीड़ देखकर सोचने लगा — 'चाहे देर से ही सही, परंतु मैं गंगा तट पर आ ही पहुंचा।' ब्राह्मण ने नदी तट पर स्नान-ध्यान करके फिर पांच वर्ष और बिता दिए।

एक दिन उसने स्नान करने वाले को नदी की स्तुति करते सुना। उसे लगा, वह गंगा की नहीं, किसी अन्य नदी की स्तुति कर रहा था। सकुचाते हुए उसने यात्री से पूछा — "श्रीमन्, इस नदी का क्या नाम है ?"

यात्री बोला — "महान् आश्चर्य ! क्या आपको यह भी नहीं मालूम। यह चंद्रभागा है, जिसके पवित्र जल में स्नान कर, समस्त जम्बूद्वीप के नर-नारी अपने को धन्य मानते हैं।"

दीर्घ निःश्वास छोड़ते हुए ब्राह्मण ने कहा — "श्रीमन्, आपने मेरी भूल का ज्ञान करा कर, मुझ पर बहुत बड़ा उपकार किया है।" इसके बाद ब्राह्मण तुरंत उस नदी का तट छोड़, गंगा की खोज में निकल पड़ा।

कठोर तपस्या व ढलती आयु से उसकी देह अत्यंत जर्जर हो गई थी। गरमी-वर्षा और भीषण ठंड सहकर भी उसने हार न मानी। वह गंगातट की ओर चलता गया। एक बार चलते-चलते वह गिर पड़ा और मूर्च्छित हो गया। पीछे से आने वाले किसी घुड़सवार ने उसे उठाया। कुछ उपचार किया, तो उसकी मूर्च्छा टूटी। निकट ग्राम के ग्रामीणों ने उससे प्रार्थना की — "महाराज, आप कुछ दिन यहां ठहर कर स्वास्थ्य लाभ करें। हमें कुछ सेवा करने का अवसर प्रदान करें।"

परंतु ब्राह्मण का मन तो अब गंगा तट पर पहुंचने के लिए तड़प रहा था। दीपक की अंतिम लौ के समान अपनी रही-सही शक्ति को एकत्र कर, वह उस टीले पर पहुंच गया, जहां से उसे महिमामयी गंगा की पावन जलधारा दिखाई दे रही थी। उसे लग रहा था अब मैं गंगातट तक नहीं पहुंच पाऊंगा।

अतः करुण स्वर में विलाप करने लगा — "मां गंगा, मैंने पूरा जीवन अकारथ ही गंवा दिया। आज तेरे तट के निकट आकर भी, तेरा स्पर्श नहीं कर सकता। मुझे क्षमा करना मां।"

विलाप करता हुआ ब्राह्मण मूर्च्छित हो गया। कुछ देर बाद शीतल स्पर्श पाकर उसकी मूर्च्छा टूटी। देखा, वह गंगा तट के निकट है। बार-बार गंगा की लहरें उसे भिगो-भिगोकर जा रही हैं। गंगा के पावन स्पर्श से उसके शरीर में नई चेतना आ गई थी। उसने उठकर गंगा की स्तुति की। कहा — "मां, तुम्हारी गोद पाकर मैं धन्य हुआ।" उसने गंगा जल पिया। फिर गंगा रज मस्तक पर मली और हर-हर गंगे कहकर डुबकियां लगाने लगा।

गंगा स्नान के बाद वह पुनः प्रार्थना करने लगा — "हे गंगे ! मैंने अज्ञानवश दूसरी नदियों को गंगा समझा, इतना जीवन व्यर्थ ही गंवाया। मुझे क्षमा करना मां !"

तभी उसे आवाज सुनाई दी — "तुमने भक्ति के साथ उन नदियों को भी गंगा ही समझा था, इसीलिए वहां स्नान का भी पुण्य गंगा स्नान के रूप में तुमने प्राप्त किया। अब तुम्हारे सारे पाप धुल गए।"

यह अदृश्य वाणी सुन, ब्राह्मण ने गंगा जल लिया और गंगा रज भी साथ की थैली में भर ली। ●

Scanned with CamScanner

चटपट

- पत्नी— क्या देखते नहीं । बच्चा रो रहा है !
  पति— मैं देख नहीं, सुन रहा हूं ।
- एक मित्र— इस महंगाई ने कमर तोड़कर रख दी ।
  दूसरा मित्र— गनीमत है कमर ही टूटी, कहीं सिर टूट जाता तो क्या होता ?
- अजय— बताओ, आज मैंने क्या खाया था ?
  विजय— अभी तो तुम मेरा सिर खा रहे हो ।
- पिता— दिन में सोना हानिकारक है ।
  पुत्र— तब तो रात होते ही सो जाना चाहिए ।
- दुकानदार— ठंडी आइसक्रीम खाइए ।
  ग्राहक— क्या आप गरम आइसक्रीम भी खिला सकते हैं ?
- पुलिस वाला— तुम्हें डंडे लगाते मुझे दया आती है ।
  चोर— हर दयावान यही सोचता है दीवान जी ! तो मैं जाऊं ?
- रमेश— मैंने उपहार में उसे एक घूंसा दिया ।
  सुरेश— कंजूस कहीं के ! ऐसे उपहार तो मैं तुम्हें एक क्या,पचासों दे सकता हूं ।
- परीक्षक— अरे, तुम परीक्षा में नकल क्यों कर रहे हो ?
  विद्यार्थी— गुरु जी ने बताया था कि अच्छी बातों की नकल करनी चाहिए ।
- तुमने एक दिन के भीतर दस चोरियां कीं, इसलिए तुम्हें सजा दी जाती है ।
  चोर—दुःख तो यही है, मेहनती आदमी को हमेशा सजा ही मिलती है ।
- डाक्टर—आपकी चोट गहरी है, टांके लगाने पड़ेंगे । लाइए, दो सौ रुपए ।
  कंजूस—डाक्टर साहब, आप चोट पर कढ़ाई न करके कच्चे टांके लगाइए, फिर बताइए, कितने रुपए दूं ?
- पत्नी—बाहर के लोग मेरे बनाए खाने की कितनी तारीफ करते हैं । एक तुम हो. . . ।
  पति—हां, उन्हें रोज जो नहीं खाना पड़ता ।
- पत्नी—तुम अक्सर चश्मा ले जाना भूल जाते हो ।
  पति—उसके न होने से मुझे दूर बैठे बॉस की सूरत दिखाई नहीं पड़ती ।
- भाई—तुम पैसे मांग रही हो । दुनिया में पैसे से नहीं, अक्ल से काम चलता है ।
  बहन—तुम्हारे पास जो है, वही मांगा जा सकता है ।
- जज—तुमने उसके सिर पर चप्पल मारी, तुम पर सौ रुपए का जुर्माना किया जाता है ।
  अपराधी—ठहरिए, जज साहब ! थोड़ी देर बाद मैं आपको दो सौ रुपए दूंगा ।

Scanned with CamScanner

अब सेरेलॅक®
सब्ज़ियों की ख़ूबियों के साथ

आपके शिशु के लिए सेरेलॅक का एक और अनूठा लाभ

पेश है नया सेरेलॅक वेजिटेबल–गाजरों और टमाटरों के गुणों से भरपूर। आपके लिए–अपने शिशु के आहार में विविधता लाने के लिए–जैसे जैसे वो नए स्वाद चखता है।

सेरेलॅक वेजिटेबल में सेरेलॅक के सभी गुण मौजूद हैं–प्रत्येक आहार में संपूर्ण पोषाहार, मनभावन स्वाद और झटपट तैयार।

४ महीने की आयु से आपके शिशु को दुग्ध आहार के साथ-साथ ठोस आहार की भी ज़रूरत होती है। उसे सेरेलॅक का लाभ दीजिए। उसे ४ महीने की आयु से सेरेलॅक व्हीट देना शुरू कीजिए। ६ महीने की आयु से नया सेरेलॅक वेजिटेबल या सेरेलॅक ऐपॅल या सेरेलॅक ऑरेन्ज दीजिए–जो भी आपको पसंद हो।

कृपया डिब्बे पर दिए गए निर्देशों का सावधानीपूर्वक पालन कीजिए ताकि इसके बनाने में स्वच्छता रहे और आपके शिशु को मिले स्वस्थ और संतुलित पोषाहार।

RK SWAMY/FSL/5463 HIN

सेरेलॅक का वादा: स्वाद भरा संपूर्ण पोषाहार

Nestlé

Scanned with CamScanner

अपने शिशु को दीजिए सेरेलॅक का अनूठा लाभ

कीजिए ठोस आहार की आदर्श शुरुआत

४ महीने की उम्र से आपके शिशु को दूध के साथ-साथ ठोस आहार की भी ज़रूरत होती है. उसे सेरेलॅक का अनूठा लाभ दीजिए.

पौष्टिकता का लाभ : सेरेलॅक का प्रत्येक आहार आपके शिशु की आवश्यकता के अनुसार सारे पौष्टिक तत्व प्रदान करता है — प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, फ़ैट, विटामिन तथा मिनरल. सभी पूरी तरह संतुलित.

स्वाद का लाभ : शिशुओं को सेरेलॅक का स्वाद बहुत भाता है.

समय का लाभ : सेरेलॅक पहले से ही पकाया हुआ है और इसमें दूध और चीनी मौजूद है. केवल इसे उबाले हुए गुनगुने पानी में मिला दीजिए.

पसंद का लाभ : तीन तरह के सेरेलॅक में से आप अपनी पसंद का चुन सकती हैं.

कृपया डिब्बे पर दिए गए निर्देशों का सावधानी से पालन कीजिए ताकि इसके बनाने में स्वच्छता रहे और आपके शिशु को संतुलित पोषाहार मिले.

6 महीने से

4 महीने से

6 महीने से

मुफ़्त
सेरेलॅक बेबी केयर बुक
लिखिये : सेरेलॅक
पोस्ट बॉक्स नं. 3
नई दिल्ली-110 008

Nestlé

सेरेलॅक का वादा: स्वाद भरा संपूर्ण पोषाहार

RK SWAMY/FSL/5112/HIN

Scanned with CamScanner

तेनालीराम २५४

जल का खेल

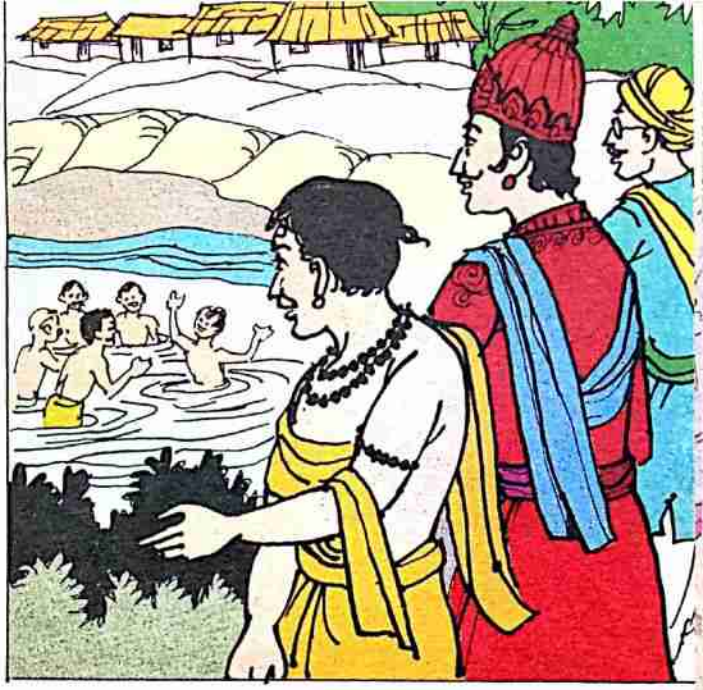

गरमियों के दिन थे। राजा कृष्णदेव राय सुबह-सुबह राजपुरोहित और मंत्री के साथ घूमने निकले। घूमते-घूमते वह एक गांव के पास पहुंचे। गांव के बाहर तालाब था। उसमें बच्चे नहा रहे थे। कुछ बच्चे एक-दूसरे पर पानी उछालते हुए खेल रहे थे।

बच्चों को आनंद मग्न देखा, तो राजा कृष्णदेव राय के मुंह से निकला — "आहा, बचपन का चहकना भी खूब है। मुझे बचपन याद आ गया। जी करता है, इन बच्चों के साथ-साथ पानी में इसी तरह खेलता रहूं।"

मंत्री ने कहा—"महाराज, इसमें क्या हर्ज है ?"

दरबारी बोले—"महाराज, हम भी आपके साथ-साथ कुछ देर पानी में उछल-कूद कर बचपन को याद कर लेंगे।"

लेकिन तेनालीराम बोला—"महाराज, आप और दरबारी नहाएंगे, तो बेकार बच्चों के खेल में विघ्न पड़ेगा। इसलिए राजउद्यान के सरोवर में जल क्रीड़ा का आनंद लिया जाए।"

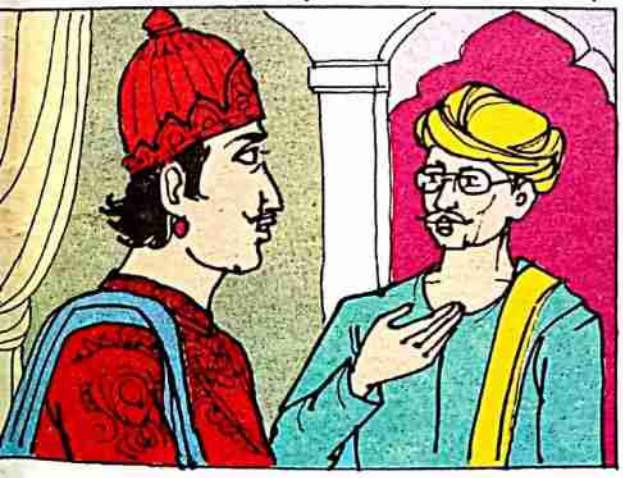

राजा को बात जंच गई। उन्होंने स्वीकृति दे दी। अगले दिन राजउद्यान के सरोवर में जल क्रीड़ा का कार्यक्रम था। लेकिन राजा कृष्णदेव राय सुबह से ही चिंतित थे। कुछ सोच-विचार कर रहे थे। तेनालीराम ने पूछा—"महाराज, आप कुछ चिंतित लग रहे हैं।"

राजा कृष्णदेव राय बोले—"तेनालीराम, राजउद्यान के सरोवर में केवल राजपरिवार का व्यक्ति ही स्नान कर सकता है। यह परम्परा है। लेकिन मैं दरबारियों को वचन दे चुका हूं। अब क्या हो ? एक ओर परम्परा है, दूसरी ओर वचन !"

तेनालीराम हंसकर बोला—"महाराज, राजसरोवर में बाहरी व्यक्ति स्नान नहीं कर सकता। लेकिन बात जल क्रीड़ा की तय हुई थी, स्नान की नहीं। आप केवल एक-दूसरे पर पानी उछालकर जल क्रीड़ा करने का आदेश दें, स्नान का नहीं। जो इसका उल्लंघन करे, उसे दंड दिया जाए। इस तरह आपकी बात भी रहेगी, परम्परा भी नहीं टूटेगी।"

यही हुआ। राजा ने अपनी घोषणा सुना दी।

इसके बाद जल क्रीड़ा शुरू हुई। सब एक-दूसरे पर पानी उछालने लगे। मंत्री और पुरोहित की योजना थी, तेनालीराम को पानी में खींचा जाए। उन्होंने एक -दूसरे की ओर इशारा किया। लेकिन तेनालीराम सतर्क था। जैसे ही वे तेनालीराम की ओर बढ़े, उसने इतनी जोर का पानी उछाला कि दोनों की आंखों में गया। अचकचाकर दोनों पानी में गिर पड़े। गहरी डुबकी लगाकर उठे। तेनालीराम हंसता हुआ बोला—"महाराज, इन्होंने नियम भंग किया है। अब इन्हें दंड मिलना चाहिए।"

राजा सब देख रहे थे। पुरोहित और मंत्री की चाल उलटी पड़ी, यह देख, उन्हें हंसी आ गई। मंत्री और पुरोहित सिर झुकाए खड़े थे। राजा बोले—"मेरा ख्याल है, इस आनंद के मौके पर अपराध तो क्षमा कर देना चाहिए। हां, अब इन्हें खेल से बाहर जरूर हो जाना चाहिए।"

जब तक खेल चला, दोनों सरोवर के निकट भीगे कपड़ों में चुपचाप खड़े रहे।

Scanned with CamScanner

माखन खिलाऊंगी

—डा. भगवतीशरण मिश्र

कन्हैया की माखन चोरी से ब्रज की सारी गोपियां तंग आ गई थीं। वे मइया यशोदा के पास शिकायत लेकर जातीं, तो वह एक ही बात कह देतीं — "कन्हैया को रंगे हाथों पकड़वा दो, तो तुम्हारी बात मान लूं।"

गोपियों ने बहुत सोचा। कन्हैया को किसी तरह यशोदा के पास माखन चोर के रूप में पहुंचाना ही था। इस कार्य को पूरा करने का दायित्व संभाला श्रीदामा की माता प्रभामति ने। पूरे गोकुल में यही एक गोपी थी, जो श्रीकृष्ण को चाहकर भी नहीं चाहती थी। मन के किसी कोने में ईर्ष्या की एक नन्ही चिनगारी सुलग रही थी।

यह ईर्ष्या श्रीकृष्ण से कम, यशोदा से ज्यादा थी।

नंदन। मई १९८९। ५२

उसका अपना लड़का श्रीदामा विकलांग था। जब एक पैर को घसीटते हुए भागता, तो देखने वाले को उस पर दया आए बिना नहीं रहती। अगर गोपियों को इन नटखटों की टोली में से किसी को पकड़ना होता, तो श्रीदामा सबसे पहले पकड़ में आ जाता। लेकिन उन्हें तो श्रीकृष्ण को रंगे हाथों पकड़ना था।

"मैं पकड़वाऊंगी कन्हैया को। बहुत अहंकार है इसकी मइया को। मैं चूर करूंगी उसे।" — प्रभामति ने सभी गोपियों के सामने कह दिया।

"उल्लू बना देगा वह तुम्हें।" — एक गोपी ने कहा। वह नहीं चाहती थी कि कन्हैया किसी तरह भी पकड़ा जाए।

"अब देखना, कौन उल्लू बनता है ? वह कल का छोकरा या सबको अपनी बुद्धि से चमत्कृत कर देने वाली प्रभामति।"

"नहीं बहन, तुम अपनी योजना में लग जाओ। कान्हा ने सचमुच हम सबकी नाक में दम कर रखा है। अगर तुम उसे मइया के सामने रंगे हाथों पहुंचा सको, तो बात बन जाएगी।" — एक प्रौढ़ा गोपी ने ढांढ़स बंधाया प्रभामति को। और प्रभामति ने बिछाया अपना जाल। गोधूलि से थोड़ा पूर्व कन्हैया आंगन से बाहर आया, तो वह उसे बहला ले गई अपने घर।

"कान्हा, मैंने अच्छा माखन निकालने का प्रबंध किया है। केशर डालकर दूध तैयार किया है। ताल-मिश्री भी डाली है। कल का माखन तो बस माखन ही होगा। एक बार उसे अपनी जीभ पर रख लो, तो फिर और घरों का चक्कर ही बंद।"

"तो कल आ जाऊं अपनी वानरी सेना के साथ ?" — कान्हा ने मुसकराते हुए कहा।

"ना, ना, ना।" — प्रभामति ने प्रतिवाद किया — "वानरी सेना के साथ नहीं। उन उचक्के ग्वाल बालों के साथ भी नहीं। अकेले आना, अकेले। इतना अच्छा माखन क्या मैंने मन दो मन बना रखा है कि सबमें लुटाऊंगी ? वह तो केवल कान्हा के लिए।"

"और श्रीदामा ? मेरा सखा ! — उसे भी नहीं

Scanned with CamScanner

दोगी !''

श्रीकृष्ण की इस बात पर प्रभामति की आंखों में पानी भर आया । जो कुछ हो, जान छिड़कता है कान्हा उसके पुत्र पर । यह न होता,तो श्रीदामा तो पंगु ही रह जाता ।

''नहीं, श्रीदामा भी नहीं रहेगा । तुम मुंह अंधेरे ही आ जाना । इतना अच्छा माखन बस एक के लिए ही पर्याप्त है । श्रीदामा सोया रहेगा और तुम ... !''

श्रीकृष्ण ने हामी भर दी ।

पर श्रीदामा उस समय सोया नहीं था । वह प्रभामति और कन्हैया के वार्तालाप को अपने कमरे के किवाड़ों की ओट से पूरी तरह सुन चुका था । उसे दाल में कुछ काला दिखाई पड़ा । नहीं, वह प्रातः सोया नहीं पड़ा रहेगा । माता के उठने से पहले ही उठ जायेगा । अगर कन्हैया को किसी जाल में फंसाया गया, तो वह उसे काट फेंकेगा ।

''तब अकेले आओगे न कल ?'' — प्रभामति ने कन्हैया को पुचकारते हुए पूछा ।

''कहती हो,तो आ जाऊंगा, पर मैं तो चाहता था कि तुम्हारे केशर-पगे माखन के स्वाद का आनंद सभी उठाएं ।''

''नहीं, नहीं, वह किसी और दिन । कल तो केवल तुम और कोई नहीं ।'' — प्रभामति ने फुसलाया ।

''ठीक है, पर श्रीदामा को बाद में मालूम हुआ तो ? मैं अपने मित्र को क्या मुंह दिखाऊंगा ?''

प्रभामति बड़े पशोपेश में पड़ी । बार-बार श्रीदामा का नाम लेकर कन्हैया उसके चित्त को दुर्बल किए जा रहा था । कहां कन्हैया उसके पुत्र से इतना प्रेम कर रहा था और कहां वह है,जो उसे फंसाने के प्रयास में लगी है । पर वह तो वचन दे चुकी थी गोपियों को ।

''मैं उसके लिए दूसरी बार ऐसा ही माखन बना दूंगी ।'' — प्रभामति ने फिर एक झूठ का सहारा लिया । किवाड़ों के पीछे छिपे श्रीदामा के कान और खड़े हो गए ।

प्रातः श्रीदामा की नींद सबसे पहले टूटी । वह रात भर ठीक से सो भी नहीं सका था । आंखें मूंदे पड़ा रहा था । प्रभामति ने जैसे ही शय्या छोड़ी, उसने आंखें खोलीं । आंगन में कन्हैया आ गया था ।

प्रभामति ने जाकर उसे दुलारा । फिर कटोरा भर माखन ले आई । पता नहीं, वह माखन केशर-पगा था अथवा नहीं, पर कन्हैया ने खूब सराह-सराहकर खाया । भरपूर माखन उसके मुंह-हाथ में लिपट गया ।

''यह क्या ?'' — श्रीदामा आश्चर्य से चिल्लाने को हुआ, पर उसने जबर्दस्ती अपने को रोका । प्रभामति ने कन्हैया के दोनों हाथ पकड़ लिए थे और

Scanned with CamScanner

उसे खींचे लिए जा रही थी — "चलो अब अपनी मइया के पास। बड़ा कहती थी कि मेरा कन्हैया माखन की चोरी नहीं करता।"

"पर मैंने चोरी कहां की ? तुम्हीं ने तो मुझे ... ।" आगे की बात श्रीदामा नहीं सुन सका। वह कन्हैया को पकड़े हुए आंगन के पार जा चुकी थी। श्रीदामा एक क्षण का विलम्ब किए बिना आंगन में पहुंचा। कटोरे के माखन पर नजर डाली। नहीं, वह केशर पगा माखन नहीं था। साधारण माखन था। श्रीदामा ने आव देखा न ताव। कटोरे में बचे माखन को पूरी तरह अपने हाथ-मुंह पर लपेट लिया। इसके बाद जैसे धनुष से छूटा तीर भागता है वैसे ही वह आंगन के बाहर भागा। दाहिना पैर यद्यपि पूरी तरह साथ नहीं दे रहा था, पर वह तब तक भागता रहा, जब तक प्रभामति और श्रीकृष्ण के पास तक नहीं पहुंच गया। प्रभामति अपनी चाल सफल होने पर प्रसन्न थी। उसे पीछे देखने की छुट्टी नहीं थी। श्रीदामा दोनों के पीछे तब तक घिसटता रहा, जब तक वे नंद के द्वार तक नहीं पहुंच गए।

द्वार पर धीरे से श्रीदामा ने श्रीकृष्ण का पीताम्बर खींचा। श्रीकृष्ण सब समझ गए। दूसरे क्षण श्रीकृष्ण बंधन से छूट चुके थे और श्रीदामा का हाथ प्रभामति के हाथों में था। प्रसन्नता से भरी प्रभामति को इस फेर-बदल का पता तक नहीं चला था।

"लो, देखो अपने लला की करतूत।" — प्रभामति ने आंगन में जाते ही यशोदा मइया को सम्बोधित किया — "कहती थी चोर नहीं है मेरा लाल। रंगे हाथों पकड़ाओ तब जानें। अब देखो खुद देख लो।"

यशोदा के सौम्य मुख पर हंसी खेल गई। वह श्रीदामा की तरफ प्यार से देखती हुई बोली — "कौन चोर है ?"

"कन्हैया और कौन ?" — प्रभामति ने कहा।

"कन्हैया नहीं श्रीदामा।" — यशोदा ने हंसकर कहा तो प्रभामति ने अपनी अंगुली पकड़े बालक की ओर दृष्टि उठाई और लज्जा से उसका सिर झुक गया।

झूठ-सच

—तनवीर अख्तर 'रूमानी'

एक था राजा। बड़ा उदार और न्यायप्रिय। वह विद्वानों और बुद्धिमानों का बड़ा आदर करता था। उसके दरबार में उसे ही जगह मिलती, जो अपनी बुद्धिमत्ता का सबूत देता था।

एक दिन राज दरबार में एक अजनबी हाजिर हुआ। उसने बताया कि वह बहुत दूर से आया है। वह राजा के दरबार में मंत्री बनकर राज्य की सेवा करना चाहता है। राजा ने कहा—"लेकिन तुम में क्या विशेषता है, जो तुम्हें मंत्रि मंडल में शामिल किया जाए ?"

उस अजनबी ने कहा—"महाराज, मेरा नाम झूठमल है। मैं ऐसा झूठ बोल सकता हूं कि उसे कोई सच प्रमाणित नहीं कर सकता।"

"अच्छा ?"—राजा ने अचरज से कहा। फिर राजा ने उसकी परीक्षा लेने के उद्देश्य से कहा—"ठीक है, यदि तुम कोई ऐसा झूठ बोलो, जिसको हमारे दरबारी सच साबित न कर सकें, तो हम तुम्हें मंत्री बना लेंगे।"

"ठीक है महाराज !"—झूठमल ने कहा। फिर कुछ सोचकर बोला—"महाराज, मैंने एक दिन देखा कि बीस गधों का एक काफिला जा रहा था। अचानक वर्षा होने लगी और सभी गधे जलकर मर गए।"

राजा चौंककर झूठमल की ओर देखने लगा।

Scanned with CamScanner

भला वर्षा से जलकर कोई कैसे मर सकता है ? आग लगने पर उसे पानी से ही बुझाया जाता है,पर यहां तो सभी गधे पानी से ही जलकर मर गए। वाकई इतना बड़ा झूठ कभी न सुना था। फिर राजा ने अपने दरबारियों की ओर इस प्रकार देखा, जैसे पूछ रहे हों—'कोई ऐसा है, जो इस झूठ को सच प्रमाणित कर दे ?'

लेकिन सभी मंत्रियों के मुंह लटके हुए थे।

राजा ने वादे के मुताबिक झूठमल को भी अपने मंत्रि मंडल में शामिल कर लिया। कुछ दिनों के बाद उसकी इच्छा हुई कि झूठमल से कोई और झूठ सुना जाए, इसलिए उन्होंने भरे दरबार में उससे कहा—"झूठमल, आज तुम कोई और झूठ सुनाओ।"

झूठमल ने कहा—"महाराज, कुछ दिनों पहले मैंने जंगल में एक शिकारी देखा, जिसने एक हिरण पर एक तीर चलाया। उस तीर से हिरण की एक टांग और एक कान घायल हो गए।"

"भला, यह कैसे सम्भव है ?" —राजा ने हैरानी से कहा—"एक तीर से हिरण को दो जगह कैसे चोट लगेगी ? एक तीर से तो एक ही जगह चोट लगना सम्भव है।"

—"महाराज ! आप शायद भूल रहे हैं, मैं तो झूठ बोल रहा हूं।"

"अच्छा . . . अच्छा"—महाराजा को अपनी गलती का एहसास हुआ।

इस झूठ को भी कोई सच प्रमाणित नहीं कर सका।

बहुत दिनों के बाद एक और अजनबी राजा के दरबार में नौकरी के उद्देश्य से पहुंचा। राजा ने उसकी भी विशेषताओं के बारे में पूछा। उसने बताया—"मेरा नाम सचसेन है। मैं बड़े से बड़े झूठ को सच बना देता हूं।"

"वाह !"—राजा की खुशी का ठिकाना न रहा। उसके दरबार में ऐसे आदमी की ही कमी थी। राजा ने सोचा,—'बड़े काम का आदमी आया है।' लेकिन बिना परीक्षा के उस आदमी की सच्चाई का पता कैसे चलता ? इसलिए राजा ने झूठमल के पहले झूठ को बताकर सच करने को कहा।

सचसेन ने तुरंत कहा—"यह कौन-सी कठिन बात है महाराज ! उन गधों पर बोरियों में कच्चा चूना लदा था। पानी पड़ते ही खुदखदा गया। इसीलिए गधे जलकर मर गए।"

"वाह . . . वाह ! बहुत खूब"—राजा और सारे दरबारी उसकी प्रशंसा करने लगे।

फिर राजा ने दूसरे झूठ के बारे में बताकर पूछा—"इसके बारे में क्या कहते हो ?"

"यह भी सच बात है महाराज, दरअसल वह हिरण अपनी पिछली टांग से अपना कान खुजला रहा था।"—सचसेन ने दूसरे झूठ को भी सच बना दिया।

राजा इतना प्रसन्न हुआ कि उसने उठकर सचसेन को गले से लगा लिया। उसे भी मंत्रि मंडल में शामिल कर लिया। ●

Scanned with CamScanner

मणि

—रामनारायण उपाध्याय

एक राजा था। उसे शिकार का बहुत शौक था। एक दिन वह शिकार खेलते-खेलते घने जंगल में जा पहुंचा। वहां घनी झाड़ियों से उलझकर उसके मुकुट की मणि रास्ते में कहीं गिर गई।

दूसरे दिन एक गड़रिया अपनी भेड़ों को चराते हुए उस रास्ते से निकला। उसकी निगाह मणि पर पड़ी। उसने सोचा—'ओह ! कितना सुंदर कांच का टुकड़ा है।' उसने उसे उठाकर अपनी एक भेड़ के गले में बांध दिया।

समय बीतता गया। एक दिन गड़रिए को नमक की जरूरत पड़ी। घर में एक भी पैसा नहीं था। उसने भेड़ के गले से कांच का टुकड़ा खोला और सेठ जी के यहां जा पहुंचा। बोला—"सेठ जी, मुझे जंगल में एक दिन बढ़िया कांच का टुकड़ा मिला था। अगर आपके कुछ काम आ सके, तो आप इसे रख लीजिए।"

उसे देखते ही सेठ जी के मुंह में पानी भर आया। फिर भी अपने भावों को छिपाते हुए उन्होंने कहा—"अरे इसे लेकर मैं क्या करूंगा ? इस तरह के तो अनेक पत्थर मेरे पास पड़े हैं। इसके पैसे नहीं मिल सकते। अगर तुम चाहो, मैं तुम्हें इसके तौल का नमक दे सकता हूं।" गड़रिया राजी हो गया। वह मणि के बराबर नमक लेकर घर चला गया।

उसके जाते ही सेठ जी उसे लेकर जौहरी के यहां पहुंचे। बोले—"सर्राफ जी, मैं आपके लिए एक बढ़िया चीज लाया हूं। देखिए तो सही।" कहते हुए सेठ जी ने वह मणि जौहरी को दिखाई। उसे मणि के गुणों की अच्छी परख थी। वह देखते ही मणि को पहचान गया। सोचा—'लाखों की यह मणि राजा को दूंगा। फिर मनचाही कीमत पाई जा सकती है।' बस, उसके मन में पाप समा गया। उसने डांटकर पूछा—"क्यों सेठ जी, यह पत्थर आपको कहां से मिला ?"

बेचारे सेठ जी ने सब बातें सच-सच बता दी। कहा—"एक गड़रिया मुझे नमक के मोल में दे गया था। यदि इसकी कुछ कीमत मिल सकती हो, आप इसे रख सकते हैं।"

जौहरी ने कहा—"क्या तुम इसे कीमती पत्थर समझते हो ? इस तरह के तो सैकड़ों टुकड़े मेरे यहां पड़े हुए हैं। लेकिन जब तुम इसे लाए हो, तो रख लेता हूं।" उसने सेठ को चांदी का एक रुपया दे दिया।

सेठ जी चांदी का रुपया पाकर खुशी-खुशी घर चले गए।

उनके जाते ही, जौहरी ने उस मणि को उठाकर तिजोरी में रखना चाहा। लेकिन यह क्या ? मणि टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर गई।

जौहरी ने कहा—"हे मणि, जब तू धूल में पड़ी थी, तब भी नहीं टूटी। जब तू भेड़ के गले में बंधी थी, तब भी नहीं टूटी। जब तुझे गड़रिए ने नमक के मोल बेचा, तब भी नहीं टूटी और आज जौहरी के हाथों में पहुंचकर तू टूट क्यों गई ?"

मणि ने कहा—"जब मैं राजा के मुकुट से निकलकर धूल में गिरी, तब मुझे विश्वास था कि अगर मैं राजा के मुकुट में पहुंच सकती हूं, तो एक दिन इस धूल से भी मेरी मुक्ति हो सकती है।

"जब गड़रिए ने मुझे अपनी भेड़ के गले में बांध दिया। तब मुझे लगा, गड़रिया होकर भी इसने मुझे धूल से उठाकर, अपनी भेड़ के गले में स्थान दिया है। एक न एक दिन मैं राजा के हाथ में अवश्य पहुंचूंगी। जिस दिन सेठ ने मुझे नमक के दामों तोला व खरीदा, उस दिन भी मुझे बुरा नहीं लगा। मैंने सोचा कि जब जौहरी के हाथों में पहुंचूंगी, तो वही मेरा मूल्य समझेगा। लेकिन जौहरी होकर भी जब तुमने मेरी कीमत केवल चांदी का एक रुपया आंकी, तो मेरा दिल टूट गया और इसके टुकड़े-टुकड़े हो गए।" ●

Scanned with CamScanner

नंदन ज्ञान पहेली

१००० रु. पुरस्कार
कोई शुल्क नहीं

नियम और शर्तें

- पहेली में १७ वर्ष तक के पाठक भाग ले सकते हैं।
- **रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।**
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियां होने पर, पहेली की पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक को होगा।
- पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में बांट दी जाएगी। इसका निर्णय सम्पादक करेंगे। उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा। किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा, कहीं भी दायर नहीं किया जा सकता।
- यहां छपे कूपन को भरकर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली ही स्वीकार की जाएगी। भेजने का पता है—
- **सम्पादक, 'नंदन' (ज्ञान-पहेली), हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१**
- एक नाम से, पांच से अधिक पूर्तियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संकेत

बाएं से दाएं

१. तुमने कब बताया था कि यह———होता है। (ऐसे/कैसे)

२. छूते ही वह———गया। (गल/जल)

४. **उपनिषद और नदी का एक ही नाम।**

५. ———तो नहीं है। कहोगे, तो ले आऊंगा। (अब/अभी)

६. क्या-क्या———गया है, यह भी देखना चाहिए। (बन/बच)

७. रूप बदलने के कारण वह———जैसी लग रही थी। (उसी/दासी)

१०. दोनों मित्र———चले गए। (दूर/पार)

११. वह———नहीं दिखाई देता क्या ? (जाल/थाल)

१२. **देश का सबसे बड़ा ताप बिजलीघर**

ऊपर से नीचे

३. तुरंत एक———लाया गया। (घड़ा/घोड़ा)

८. यह तो सदा———ही रहता है। (भूखा/सूखा)

९. देखते-देखते मकान———गया। (बह/ढह)

चारों ने फावड़े और कुदाली से भूमि को खोदना शुरू कर दिया। थोड़ी देर के परिश्रम के बाद सेठ थक गए। बरगद के पेड़ की छांह में आराम करने लगे।

उस पेड़ पर एक यक्ष रहता था। सेठ और उसके पुत्रों के वहां आने से उसकी शांति में बाधा पहुंची। वह सेठ से बोला— "सुनो, तुम लोग यहां से फौरन चले जाओ।"

"हम क्यों जाएं ? हम तो अपने खेत पर काम कर रहे हैं।"— सेठ ने कहा।

"अगर तुम लोग नहीं जाओगे, तो मैं तुम्हें मार डालूंगा।"— यक्ष ने सेठ को डराया।

"हम इस तरह की धमकियों से नहीं डरते। हमने तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ा है। हमें अपना पेट भरने के लिए अपने खेत पर मेहनत करने का अधिकार है।"— सेठ ने शांति पूर्वक उत्तर दिया।

यक्ष संतुष्ट हो गया। उसने सेठ से आगे कुछ न कहा।

शाम हुई। सेठ दिन भर के काम के बाद चले

Scanned with CamScanner

64 पृष्ठों में

बच्चों के सर्वांगीण विकास की रंगीन बाल पाक्षिक

मई [प्रथम] '89

'जंगल विशेषांक'

पेड़-पौधों और जंगल के जानवरों पर अनोखी-अनूठी सामग्री। दरख्तों को दोस्त बनाओ। जंगलों की कटाई के कारण लुप्त होते जानवर। हाथियों के स्कूल और आश्चर्यजनक पेड़-पौधों पर दुर्लभ सामग्री।

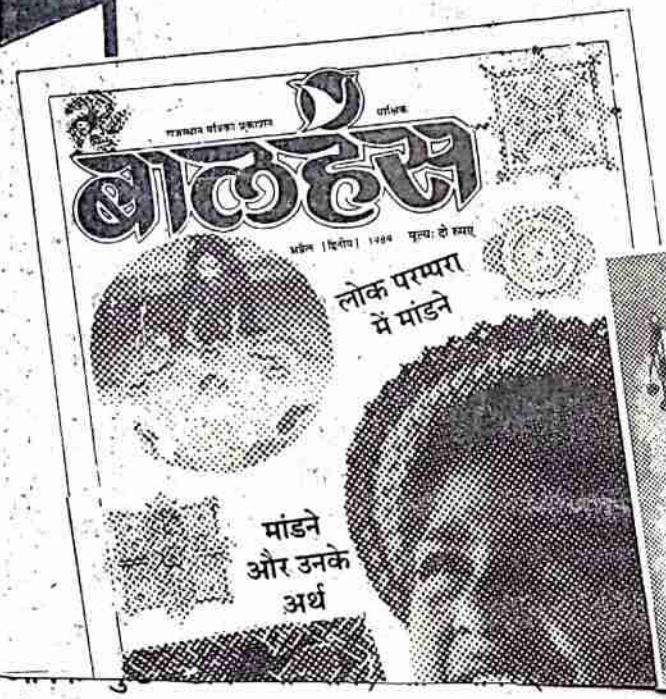

पाक्षिक

अपनी प्रति आज ही सुरक्षित करालें

मूल्य 2 रुपए

लीजिए।"

उसे देखते ही सेठ जी के मुंह में पानी भर आया। फिर भी अपने भावों को छिपाते हुए उन्होंने कहा—"अरे इसे लेकर मैं क्या करूंगा ? इस तरह के तो अनेक पत्थर मेरे पास पड़े हैं। इसके पैसे नहीं मिल सकते। अगर तुम चाहो, मैं तुम्हें इसके तौल का नमक दे सकता हूं।" गड़रिया राजी हो गया। वह मणि के बराबर नमक लेकर घर चला गया।

उसके जाते ही सेठ जी उसे लेकर जौहरी के यहां पहुंचे। बोले—"सर्राफ जी, मैं आपके लिए एक बढ़िया चीज लाया हूं। देखिए तो सही।" कहते हुए सेठ जी ने वह मणि जौहरी को दिखाई। उसे मणि के गुणों की अच्छी परख थी। वह देखते ही मणि को पहचान गया। सोचा—'लाखों की यह मणि राजा को दूंगा। फिर मनचाही कीमत पाई जा सकती है।' बस, उसके मन में पाप समा गया। उसने डांटकर पूछा—"क्यों सेठ जी, यह पत्थर आपको कहां से

Scanned with CamScanner

टहनी हिलाओ

— रमेश गुप्त

बहुत समय पहले की बात है । श्याम नगर में रामधन नाम के एक सेठ रहते थे । बहुत बड़ा व्यापार था उनका । जहाजों में भरकर उनका माल विदेश में जाता था । इससे खूब आय होती थी । फिर भी सेठ जी बड़े विनम्र तथा सरल स्वभाव के थे । अपने धन पर तनिक भी गर्व नहीं था । गरीबों की सहायता करने के लिए सदैव तत्पर रहते थे ।

सेठ जी के तीन पुत्र थे । वे भी अपने पिता के समान सहृदय तथा गुणी थे । वे अपने पिता के व्यापार में उनकी सहायता करते थे । कई बार सेठ जी के मित्र उनसे पूछते— "आपके पास इतना धन है । फिर भी आपको गर्व छूता तक नहीं । ऐसा कैसे सम्भव है ?"

"भाई, लक्ष्मी तो आनी-जानी है । व्यापार अच्छा चले, तो सुख-समृद्धि प्राप्त होती है । न चले, तो निर्धनता का मुख देखना पड़ता है । इसलिए धन पाकर गर्व करने से क्या लाभ ?"— सेठ की बात सुनकर उनके मित्र चुप लगा जाते ।

एक दिन सेठ जी की बात सच हो गई । दुर्दिनों ने उन्हें आ घेरा । कीमती सामान से भरा उनका जहाज सागर में डूब गया । देखते ही देखते सेठ जी निर्धन हो गए । कर्जदारों का धन चुकाने में उनका सब कुछ बिक गया । वह इतने गरीब हो गए कि खाने के लाले पड़ गए ।

फिर भी सेठ जी के मुख पर दुःख या उदासी की छाया नहीं थी । अपने पुत्रों को बुलाकर बोले— "मेरे बच्चो, अब हम निर्धन हो गए हैं । हमें मेहनत-मजदूरी करके पेट भरना होगा ।"

"मेहनत से दो जून की रोटियां मिल जाएंगी ?"— सबसे बड़े बेटे ने पूछा ।

—"क्यों नहीं ? मेहनत से संसार में सब कुछ प्राप्त हो सकता है । निराशा से कुछ नहीं होने वाला । एक बात याद रखना । जब वे समृद्धि के दिन नहीं रहे, तो ये दुर्दिन भी सदैव नहीं रहने वाले ।"

सेठ की बात सुनकर तीनों बेटों के अंदर आशा का नया संचार हो गया । चारों घर से चल पड़े । उनके पास एक छोटा-सा खेत था । उस खेत में बरगद का एक घना पेड़ था । सेठ ने इस पेड़ के नीचे डेरा जमा दिया । उन चारों ने फैसला कर लिया था कि वे परती पड़े इस खेत को जोत-बोकर अनाज उगाएंगे ।

चारों ने फावड़े और कुदाली से भूमि को खोदना शुरू कर दिया । थोड़ी देर के परिश्रम के बाद सेठ थक गए । बरगद के पेड़ की छांह में आराम करने लगे ।

उस पेड़ पर एक यक्ष रहता था । सेठ और उसके पुत्रों के वहां आने से उसकी शांति में बाधा पहुंची । वह सेठ से बोला— "सुनो, तुम लोग यहां से फौरन चले जाओ ।"

"हम क्यों जाएं ? हम तो अपने खेत पर काम कर रहे हैं ।"— सेठ ने कहा ।

"अगर तुम लोग नहीं जाओगे, तो मैं तुम्हें मार डालूंगा ।"— यक्ष ने सेठ को डराया ।

"हम इस तरह की धमकियों से नहीं डरते । हमने तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ा है । हमें अपना पेट भरने के लिए अपने खेत पर मेहनत करने का अधिकार है ।"— सेठ ने शांति पूर्वक उत्तर दिया ।

यक्ष संतुष्ट हो गया । उसने सेठ से आगे कुछ न कहा ।

शाम हुई । सेठ दिन भर के काम के बाद चले

Scanned with CamScanner

गए । उसके तीनों पुत्र सुस्ताने के लिए बरगद के पेड़ के नीचे लेट गए ।

तभी यक्ष आया और क्रोध में आकर बोला— "सुनो लड़को, तुम यहां से तुरंत भाग जाओ ।"

"क्यों भला ?"— बड़े लड़के ने पूछा ।

"तुम लोगों ने सारे दिन यहां खटर-पटर करके मेरी नींद हराम कर दी है ।"— यक्ष बोला ।

"हम अपने खेत पर काम कर रहे हैं ।"— दूसरा लड़का बोला ।

"अगर तुम नहीं जाओगे, तो मैं तुम्हें मार डालूंगा ।"— यक्ष ने धमकी दी ।

सबसे छोटा लड़का कुदाल तानकर खड़ा हो गया और बोला— "हम इस तरह की धमकियों से नहीं डरते । आ जाओ । हो जाएं दो-दो हाथ !"

यक्ष प्रसन्न होकर बोला— "बच्चो, तुम सचमुच बड़े वीर, साहसी और पुरुषार्थी हो । मैं प्रसन्न हूं । जरा सबसे नीचे वाली टहनी तो हिलाओ ।"

तीनों लड़के खड़े हो गए । उन्होंने बरगद की सबसे निचली टहनी को जोर से हिलाया । उससे सूखे पत्तों के समान स्वर्ण मुद्राएं टपकने लगीं ।

तीनों लड़कों ने वे स्वर्ण मुद्राएं समेटीं और घर आ गए । वे लोग एक बार फिर धनी हो गए । सेठ ने फिर अपना व्यापार शुरू कर दिया । उनके पुराने दिन लौट आए ।

नगर में सेठ के फिर से धनी होने की चर्चा फैल गई । सेठ के पड़ोस में एक बढ़ई रहता था । उसे सेठ के फिर से धनी होने का रहस्य पता चल गया ।

अगले दिन बढ़ई अपने बेटे और औजारों को लेकर बरगद के पेड़ के नीचे पहुंच गया । बढ़ई ने आरी निकाली और पेड़ को काटने लगा । उसका बेटा कुल्हाड़ी से पेड़ पर चोटें करने लगा ।

यक्ष प्रकट हुआ और बोला— "अरे मूर्खो, यह तुम क्या कर रहे हो ?"

"हम यह पेड़ काट रहे हैं ।"— बढ़ई ने उत्तर दिया ।

"क्यों ?"— यक्ष ने पूछा ।

"हमें रोटी चाहिए ।"— बढ़ई के बेटे ने उत्तर दिया ।

— "अगर तुम्हें रोटी चाहिए तो वृक्ष को काटने का पाप क्यों करते हो ? भागो यहां से, नहीं तो मैं तुम्हें अभी पल भर में नष्ट कर दूंगा ।"

बढ़ई और उसका बेटा भयभीत हो गए । वे अपने औजार वहीं छोड़, सिर पर पांव रखकर भागे।

यक्ष खिलखिलाकर हंस पड़ा । फिर वह बुदबुदाया— "कायर कहीं के ! स्वर्ण मुद्राएं लेने आए थे । बिना साहस कुछ नहीं मिल सकता ।"

पचास पुरस्कार

चुटकुला प्रतियोगिता

आप कोई न कोई मजेदार चुटकुला लिख सकते हैं, तो अभी लिख डालिए । उसे नीचे लिखे पते पर भेज दीजिए । चुटकुला नकल किया या सुना-सुनाया न हो । चुने हुए पचास चुटकुले 'नंदन' में छपेंगे। प्रत्येक पर तीस रुपए मूल्य की पुस्तकें पुरस्कार के रूप में दी जाएंगी ।

एक पाठक कितने भी चुटकुले प्रतियोगिता में भेज सकता है । पता है— **चुटकुला प्रतियोगिता, 'नंदन', हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली**

Scanned with CamScanner

चीटू-नीटू

Scanned with CamScanner

शीर्षक बताइए

इस चित्र को ध्यान से देखिए। इसके अनेक शीर्षक हो सकते हैं। आप भी कोई अच्छा-सा, छोटा-सा शीर्षक सोचिए। उसे पोस्टकार्ड पर लिख कर १० मई १९८९ तक शीर्षक बताइए, नंदन मासिक, हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली—११०००१ के पते पर भेज दीजिए। चुने हुए शीर्षकों पर पुरस्कार दिए जाएंगे।

परिणाम : जुलाई अंक
चित्र : भास्कर मुखर्जी

पुरस्कृत चित्र

नीरजकुमार, सुपुत्र श्री सुक्खन लाल, नावल्टी सिनेमा के सामने, ५८ सिविल लाइंस, बरेली (उ. प्र.)।

इनके चित्र भी प्रशंसनीय रहे—गोपेशकुमार साहू, कांकेर (म. प्र.); कु. सपना गुप्ता, अमरावती (महा.); शैली कौशिक, गुड़गांव (हरि.); बालिका गुप्ता, चंडीगढ़।

Scanned with CamScanner

पुरस्कृत कथा :

छोटी-सी बात

उडनीपुर नगर में एक जमींदार रहता था। जमींदार की पत्नी की मृत्यु हो चुकी थी। उसकी बेटी थी—नम्रता। जमींदार बेटी को बहुत प्यार करता था। लेकिन पत्नी की मृत्यु के कारण नम्रता की देखभाल करने वाला कोई न रहा था। जमींदार ने शीघ्र ही दूसरा विवाह कर लिया। नन्ही नम्रता सौतेली मां को ही अपनी मां समझने लगी।

कुछ दिनों बाद नम्रता के भाई का जन्म हुआ। उसका नाम विवेक रखा गया। नम्रता विवेक को बहुत प्यार करती थी, लेकिन सौतेली मां का व्यवहार उसके प्रति बदलने लगा। अब वह नम्रता को खूब डांटती-डपटती। जमींदार बेटी की हालत देखता, मगर पत्नी से कुछ कह न पाता।

विवेक भी बड़ा हो गया था। वह स्कूल जाने लगा। परीक्षा परिणाम निकला, तो नम्रता प्रथम आई। घर आकर उसने मां को परिणाम दिखाया। मां ने ज्यादा ध्यान नहीं दिया। वह प्यार से विवेक का परिणाम देखने लगी। नम्रता दूसरे कमरे में गई। वह रो रही थी। उसे अपनी मां की याद आ रही थी। तभी विवेक वहां आ पहुंचा। उसे भी मां का यह व्यवहार बुरा लगा। उसने कहा—"दीदी, मां तुमसे इतना बुरा व्यवहार करती हैं, फिर भी तुम कुछ बोलती क्यों नहीं ?" नम्रता चुप रही। विवेक बोला—"आज जब पिता जी आएंगे, तो मैं मां की शिकायत करूंगा।"

"नहीं भैया, हमें ऐसा नहीं करना चाहिए। आखिर हैं तो वह हमारी मां ही। हमसे बड़ी हैं। शायद उनके इस व्यवहार में ही कोई भलाई छिपी हो।"—नम्रता ने विवेक को समझाते हुए कहा।

दरवाजे के पीछे खड़ी मां ने जब ऐसी बातें सुनीं, तो उसकी आंखें भर आईं। 'मुझसे अच्छी तो यह बच्ची ही है।'—उसने सोचा। वह जल्दी से अंदर आई। उसने नम्रता को गले लगा लिया। कहा—"बेटी, मुझे माफ कर दो।"

शाम को जब जमींदार वापस आया, तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। नम्रता मां की गोद में सिर रखे बैठी थी। विवेक दूसरी तरफ बैठा था। वे किसी बात पर जोर से हंस रहे थे।

—कु. राना सीता रामजी ढोमणे, नागपुर।

इनकी कहानियां भी पसंद की गईं : आलोक शुक्ल, लखनऊ; दिनेश दास, भोपाल; बुद्धान कुमार मारड़ी, सारजमदा (बिहार)।

आगामी अंक

- **जून की गरमी को भुलाएं ऐसी सरस, सजीली कविताएं**
- नई अनूठी कहानियां, जिन्हें विशेष रूप से 'नंदन' के लिए लिखा है विशिष्ट लेखकों ने
- **'महर्षि नारद'**—आठ पृष्ठों की सतरंगी चित्र-कथा
- **शूद्रक** की अमर रचना **'मृच्छकटिक'** की संक्षिप्त कथा पढ़िए 'विश्व की महान कृतियों में—
  'मिट्टी की गाड़ी'
  चीटू-नीटू छुट्टियों में ज्यादा शरारती हो गए हैं साथ में **तेनालीराम** की सूझ
  अन्य सभी स्थायी स्तम्भ

Scanned with CamScanner

कबूतरों की रेल; छतरी से गपशप–दोनों के लेखक : दिविक रमेश; प्रकाशक : परिमल प्रकाशन, बाघम्बरी आवास योजना, अल्लापुर, इलाहाबाद; प्रत्येक का मूल्य : आठ रुपए।

'कबूतरों की रेल' में विविध विषयों की कविताएं हैं। सरस, सुबोध भाषा की ये कविताएं ज्ञान-विज्ञान से परिचित कराने के अतिरिक्त प्रकृति को समझने में भी सहायक होंगी। पढ़कर मन में कौतूहल के साथ-साथ अपने आसपास को समझने की प्रेरणा भी मिलेगी। 'बनी न अब तक खीर' में बच्चा उड़ान भरता है :

सोचा अगर भैंस सीधे ही
देती हमको खीर
तो फिर क्यों हम बाट जोहते
गप-गप खाते खीर।

प्रकृति की छटा का आनंद उठाना चाहें, तो ज्ञान के साथ कल्पना की उड़ान भी भर सकते हैं।

और दूसरी पुस्तक 'छतरी से गपशप' की 'पुस्तक लगते हैं सब फूल', 'ऐसे देखा चिड़िया को', 'तोड़ न जाए कोई पेड़'कविताएं सुंदर हैं। प्रकृति को समझाने का अच्छा ढंग कवि ने अपनाया है। देखिए—

लगता है जैसे पौधों की
हंसी बने हैं सारे फूल

दोनों पुस्तकें मूल्य, साज-सज्जा और मुद्रण की दृष्टि से अच्छी हैं। बच्चे इन्हें पसंद करेंगे।

ज्योति से ज्योति जगाते चलो; चतुर बगुला; अक्ल बड़ी या भैंस; तीनों पुस्तकों के लेखक : नारायणलाल परमार; प्रकाशक : अनुभूति प्रकाशन, ५३ करनपुर, इलाहाबाद; प्रत्येक का मूल्य नौ रुपए।

'ज्योति से ज्योति जगाते चलो'—प्रेरक प्रसंगों वाली एक अच्छी रचना है। प्रसंग काफी अच्छे हैं। लेखक ने लालबहादुर शास्त्री, डाक्टर जाकिर हुसैन, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, संत कबीर, स्वामी दयानंद, महात्मा गांधी के साथ-साथ विदेशी महापुरुषों के जीवन प्रसंग भी इसमें शामिल किए हैं। प्लेटो, कन्फूशियस, एच. जी. वेल्स व नेपोलियन के प्रसंग प्रेरणादायक हैं। इस पुस्तक का सार है—हमारे महान नेता तथा अन्य महापुरुष। छोटी-छोटी बातों में भी बड़प्पन दिखाकर वे हमारे रास्ते को जगमग करते थे, हमें राह दिखाते थे, जीवन में कुछ करने की प्रेरणा देते थे।

पुस्तक सभी दृष्टियों से उपयोगी है। बच्चे इसे बार-बार पढ़ कर इन प्रसंगों से सीखेंगे व प्रेरणा लेंगे।

अन्य दो पुस्तकें 'चतुर बगुला' और 'अक्ल बड़ी या भैंस'—बच्चों की कहानियों के संग्रह हैं। पंचतंत्र, कथा सरित्सागर तथा पुराण कथाओं की पुनरावृत्ति है। फिर भी इन दोनों पुस्तकों को बच्चे पढ़ेंगे—मूल्य अवश्य अधिक हैं।

'चतुर बगुला' संग्रह में 'मूर्ख चिड़िया' 'सबसे बड़ी चुप', 'एक था भाई' उत्तम कहानियां हैं, जो घिसीपिटी कहानियों से अलग हैं।

'अक्ल बड़ी या भैंस' संग्रह में 'आजादी', 'राजा का गुरु', 'काम में शर्म कैसी' कहानियां बढ़िया हैं। मन को छुएंगी।

१. ज्ञान पहेली; २. अक्ल की कुश्ती-लेखक : रत्नप्रकाश शील; प्रकाशक : सत्साहित्य प्रकाशन, २०५-बी, चावड़ी बाजार, दिल्ली; प्रत्येक का मूल्य : पंद्रह रुपए।

'ज्ञान पहेली' में २५ और 'अक्ल की कुश्ती' में ४० पहेलियां हैं। हर पहेली में विभिन्न आकार के चित्र हैं। इन में अलग-अलग अक्षर दिए हैं। प्रश्नों के अनुसार अक्षर मिलाकर उत्तर खोजने हैं। प्रश्न देश के महापुरुषों, प्रसिद्ध स्थानों, घटनाओं, वृक्षों, पर्व-त्योहारों तथा यहां के निवासियों के बारे में पाठक के ज्ञान की थाह लेते हैं। कहीं आकृतियों में शब्द भरने हैं, तो कहीं शब्दों में छिपे संकेत समझकर उत्तर देने हैं। इस तरह बच्चे खेल-खेल में ज्ञान की बातें सीख सकते हैं। बाल साहित्य में यह, पुस्तक रूप में अनूठा प्रयोग है। हर आयु के बच्चे रुचि लेकर इन्हें पढ़ना-बूझना चाहेंगे। **—शंकरलाल मस्करा**

Scanned with CamScanner

आप कितने बुद्धिमान हैं (उत्तर)

१. आदमी के जूते का एक तला मोटा है।
२. उसके पीछे रखा कुशन छोटा है।
३. दीवार पर लगा चित्र बदल गया है।
४. औरत के ब्लाउज का गला बड़ा है।
५. दरवाजे के पास बिजली का स्विच ऊपर लगा है।
६. किताबों की रैक पर रखे रेडियो का एरियल गायब है।
७. टी. वी. का एक बटन कम है।
८. दाईं ओर के चमगादड़ का सिर दूसरी ओर घूमा है।
९. बच्चे के स्वेटर का कालर काला है।
१०. बच्चे के हाथ से गिरी पत्रिका के पृष्ठ कम हैं।

प्रिय बच्चों, क्या आप नवोदय विद्यालय प्रवेश परीक्षा में सफलता चाहते है? यदि हाँ, तो आज ही खरीदे प्रकाश गाइड।

प्रकाश गाइड

नवोदय विद्यालय प्रवेश परीक्षा

लेखक : खन्ना एवं वर्मा | मूल्य 22/- रु० मात्र

गत वर्ष के प्रश्न-पत्र हल सहित

अपने निकटतम पुस्तक विक्रेता से खरीदें, अथवा 20 का ऑर्डर M.O. भेजकर पुस्तक V.P.P. द्वारा प्राप्त करें।

प्रकाश प्रकाशन 305 मोरीपाड़ा-मेरठ

कद बढ़ाइए!

आत्मविश्वास से भरा और सीधे तन के खड़े होने का अंदाज होता है एक कामयाब व्यक्ति का, चाहे वह पुरुष हो या महिला. रिसर्च से यह भी साबित हुआ है कि लंबा कद विपरीत सेक्स को कहीं ज़्यादा आकर्षित करता है. जिन्दगी के इन खूबसूरत मौकों से क्या आप सिर्फ़ इसलिए वंचित रह जाते हैं क्योंकि आपका कद छोटा, साधारण है? निराश मत होइये, आपके लिए भी हमारे पास है एक खुशखबरी.

न्यू हाइट है एक ऐसा विस्तृत प्रोग्राम जिसमें शामिल हैं वैज्ञानिक ढंग से की जाने वाली वर्जिशें, आहार संबंधी मार्गदर्शन और विजुअल टैक्नीक्स **जिनके जरिए आप पाते है पहले से कहीं ज्यादा लंबा कद, और खड़े होने का एक नया शानदार अंदाज.**

न्यू हाइट के जरिए सारे शरीर में चुस्ती-फुर्ती भरी जा सकती है, पूरी तसल्ली की गारंटी भी देता है. सारे दिन में सिर्फ कुछ मिनट कमबार निर्देशों का पालन कीजिए.

सिर्फ़-4 हफ्तों के बाद आप अपना कद 5 सें.मी. तक बढ़ा हुआ पायेंगे. हमारे रिकार्ड में पत्र हैं जो प्रमाणित करते हैं की इस आश्चर्यजनक प्रोग्राम से सैकड़ों महिलाओं और पुरुषों को अपना कद और अंदाज सुधारने में मदद मिल चुकी है आप भी अपना कद बढ़ा सकते है!

यदि 30 दिनों में आपका कद 5 सें.मी. से 15 सें.मी. तक न बढ़े, तो हम आपके

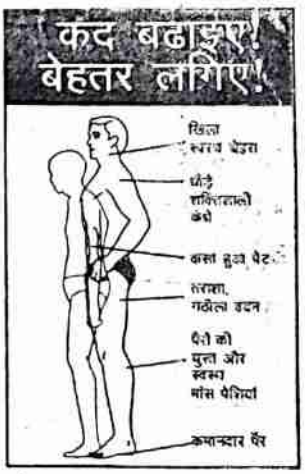

पैसे वापस करने की गारंटी देते है.
(डाक व प्रेषण खर्च घटाकर).

बात चाहे सामाजिक सफलता की हो या प्रेम, खेल-कूद और मौज-मस्ती की, लंबा कद हर जगह काफी मायने रखता है. इसलिए जल्दी कीजिए और एक नई छवि पाइये अपना कद बढ़ाइए और ऊंचे, नजर आइये

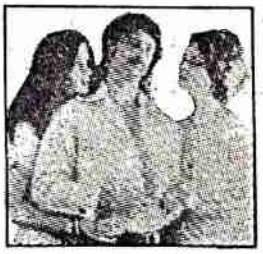

ध्यान रहे न्यू हाइट एक निर्देश पुस्तक है जिसमें कुछ वैज्ञानिक कसरतों के जरिये कद बढ़ाने एवं सही व आकर्षक ढब पाने के संबंध में हिदायतें दी गई हैं। यह किसी प्रकार की दवा या औषधि नहीं है। और पूरी तरह सुरक्षित है।

३० दिनों का आजमाइशी मौका

वी.पी.पी. द्वारा रु. 94/- मँगवायें: 'न्यू हाइट' मैहता महल, 15वीं न्यू रोड, बंबई- 400 004.

यह कूपन आज ही भेजिए

न्यू हाइट, 15वीं न्यू रोड, बंबई- 400 004 NH-01

जी हां मुझे अपने खड़े होने के अंदाज को संवारना है और अपना कद बढ़ाना है आप मुझे 30 दिनों की मुफ्त बिना जोखिम आजमाइश के अन्तर्गत न्यू हाइट भेज दें अगर मैं पूर्णतया संतुष्ट न हुआ, तो पैसा वापस पाने के लिए (डाक व प्रेषण खर्च घटाकर) न्यू हाइट, उसकी नयी जैसी स्थिति में ही वापस कर दूंगा बिना सवाल-जवाब के ND-117

कृपया सही खाने में ☑ निशान लगाइए

☐ रजिस्टर्ड पोस्ट पार्सल से भेजें मैं ड्राफ्ट/पोस्टल ऑर्डर/मनी ऑर्डर नं. तारीख द्वारा रु. 94/- भेज रहा हूं. (मुलवर्कर प्राप्ति को देय)

☐ वी पी पी से भेजें डिलीवरी मिलने पर मैं डाकिए को रु. 94/- के भुगतान का वादा करता हूं.

नाम .....

पता .....

.....

पिन ..... हस्ताक्षर .....

Scanned with CamScanner

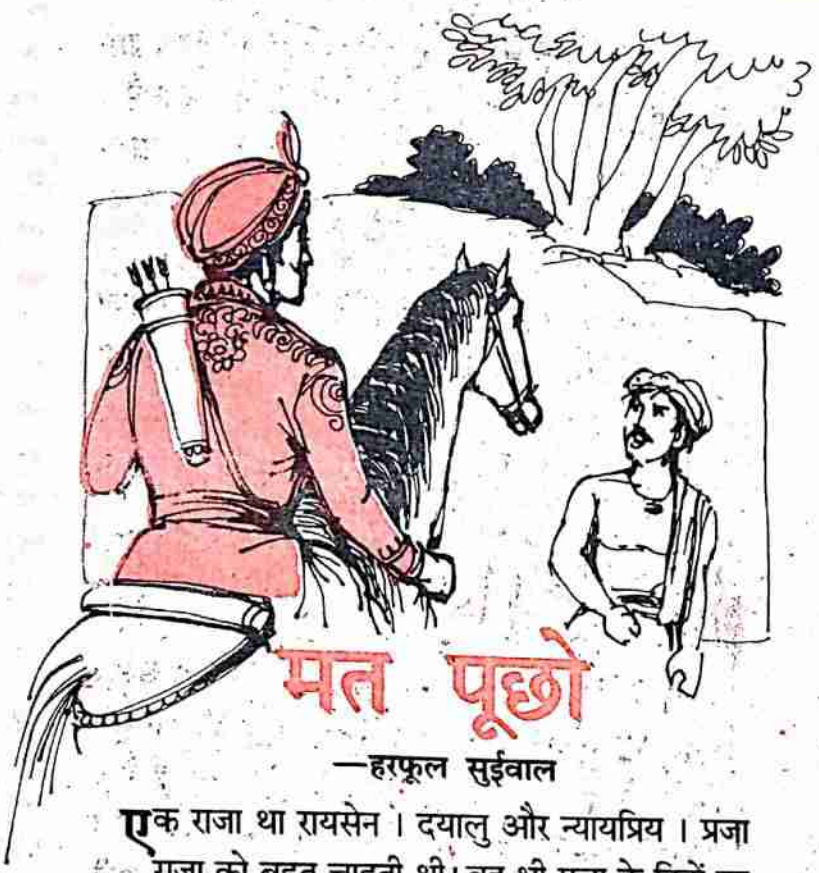

मत पूछो

—हरफूल सुईवाल

एक राजा था रायसेन । दयालु और न्यायप्रिय । प्रजा राजा को बहुत चाहती थी। वह भी प्रजा के हितों का बहुत ख्याल रखता । अक्सर वेश बदलकर नगर में घूमता । जानने की कोशिश करता, कहीं कोई दुखी तो नहीं ।

एक बार रायसेन पड़ोसी राजा देवप्रिय के निमंत्रण पर वहां गया । देवप्रिय का सोने का बना रत्नों से जड़ा सिंहासन देखकर दंग रह गया । सिंहासन की भव्यता देख, वह ईर्ष्या से जल उठा । सोचने लगा—'काश,ऐसे ही सिंहासन पर मैं भी बैठ सकूं ।'

वहां से लौटा, तो रायसेन के दिमाग में वैसा ही सिंहासन बनवाने की बात घूमती रही । उसने मंत्री को आदेश दिया—"मेरा सिंहासन पुराना हो गया । सोने का नया सिंहासन बनवाकर, उसमें बहुमूल्य रत्न जड़वाने का काम शुरू करवा दो ।"

मंत्री सोच में डूब गया। फिर धीरे से बोला—"महाराज, जिस सिंहासन की आप बात कह रहे हैं, उसे बनवाने के लिए तो अपना शाही खजाना भी कम है । वैसे भी राजकोष में धन कम आता है । आज तक आपने कभी खजाने में धन इकट्ठा करने की बात ही नहीं सोची । सदा प्रजा की भलाई के लिए ही राज खजाने का उपयोग होता रहा है ।"

मंत्री की बात रायसेन को तनिक भी न भाई । उस पर सिंहासन का भूत सवार था । वह बोला—"तो अब भर जाएगा शाही खजाना । प्रजा पर नए कर लगा दो ।"

रत्न जटित सोने के सिंहासन के लोभ में राजा रायसेन प्रजा के प्रति अपने सारे कर्तव्यों को भूल गया । प्रजा नए करों के बोझ से कराह उठी ।

थोड़े दिन बाद, राजा एक दिन शिकार से लौट रहा था । अंधेरा हो चुका था । घोड़े पर सवार राजा बढ़ा जा रहा था । अचानक उसकी निगाह अंधेरे और ठंड में काम करते एक किसान पर पड़ी । राजा को बेहद आश्चर्य हुआ ।

रायसेन ने उसके पास घोड़ा रोक लिया । बोला—"अरे, भाई ! इतने अंधेरे और ठंड में क्यों काम कर रहे हो ?"

किसान ने आश्चर्य से सिर उठाकर देखा और कहा—"इस राज्य में तुम ऐसी बात पूछने वाले कहां से आ गए ?"

—"क्यों ? आखिर वह ऐसी कौन-सी बात है, जिसे इस राज्य में कोई नहीं पूछता ?"

—"यहां का राजा पहले जितना नेक और इंसाफ पसंद था, अब वह उतना ही क्रूर बन गया है । सोने से बने रत्न जटित सिंहासन के लिए प्रजा पर करों का इतना बोझ डाल दिया है । अब कर चुकाने के लिए हम कमरतोड़ मेहनत करते हैं । न रात का ख्याल रहता है और न दिन का ।"

किसान की बात सुन, रायसेन उदास हो गया । वह गहरे सोच में डूब गया । मन ने कहा—'नए सिंहासन के लोभ ने प्रजा का सुख-चैन ही छीन लिया ? यह ठीक नहीं हुआ ।' उसने किसान से कुछ न कहा । वह चुपचाप चला आया ।

अगले दिन घोषणा हुई कि राजा ने सारे नए कर समाप्त कर दिए हैं । रायसेन ने सिंहासन का लोभ त्याग दिया था । अब वह फिर वही पुराना रायसेन बन गया था । ●

Scanned with CamScanner

बातें रंग बिरंगी

अशोक की लाट—विश्व के सभी देशों के अपने-अपने राष्ट्रीय चिह्न हैं। हमारे देश का राष्ट्रीय चिह्न सारनाथ में लगी सम्राट अशोक की लाट का ऊपरी भाग है। इस चिह्न में खुले मुंह वाले चार शेर हैं, जिसमें चौथा शेर चित्र में दिखाई नहीं देता। आधार की प्लेट के बीच में धर्मचक्र है। इस चक्र के दाहिनी ओर एक बैल और बाईं ओर घोड़े का चित्र है। दाहिनी और बाईं ओर दो पहिए हैं। आधार प्लेट के नीचे देवनागरी लिपि में 'सत्यमेव जयते' लिखा हुआ है। यह वाक्य मुंडक उपनिषद् से लिया गया है, जिसका अर्थ है कि सत्य की ही विजय होती है।

यह राष्ट्रीय चिह्न सिक्कों और नोटों पर भी देखा जा सकता है। सरकार द्वारा दिए जाने वाले सभी प्रमाणपत्रों पर राष्ट्रीय चिह्न बना होता है। सरकारी कागजों पर भी यह चिह्न होता है।

विचित्र टाइपराइटर—दुनिया भर के दफ्तरों में टाइपराइटरों का इस्तेमाल होता है। आज हमारे पास सामान्य टाइपराइटरों के अतिरिक्त इलेक्ट्रिकल और इलेक्ट्रोनिक टाइपराइटर भी उपलब्ध हैं। इन सभी में एक 'की बोर्ड' होता है। जिस पर विभिन्न अक्षर, अंक, कौमा, पूर्ण विराम आदि के चिह्न होते हैं। 'की बोर्ड' की सहायता से टाइपराइटर किसी भी दस्तावेज को टाइप करता है।

आज के वैज्ञानिकों ने एक विचित्र प्रकार का टाइपराइटर बनाया है। इसमें कोई 'की बोर्ड' नहीं है। इस टाइपराइटर में एक पर्दा लगा है। इसी पर्दे के ऊपर टाइप करने वाला व्यक्ति, एक विशेष पेंसिल द्वारा सब कुछ लिखता जाता है, जो उसे टाइप करना है। एक बटन दबाते ही पर्दे पर लिखे विवरण की टाइप कॉपी मशीन से बाहर आ जाती है। टाइपराइटर का पैनल स्पर्श के प्रति संवेदनशील है।

इस टाइपराइटर का नाम 'पेनाबर्ड' है। इसका विकास १९८४ में जापान की एक कम्पनी ने किया था। इस टाइपराइटर में शब्दों के संचय के लिए एक मैमोरी (स्मृति) भी है। यह ३४४८ अक्षरों को याद रख सकती है।

अनोखा चूहा—संसार में सौ से भी अधिक किस्म के चूहे पाए जाते हैं। आम तौर पर काले, सफेद और भूरे चूहे देखने को मिलते हैं। चूहे संसार के सभी देशों में हैं। काले चूहे की उत्पत्ति दक्षिण-पूर्वी एशिया से और भूरे चूहे की उत्पत्ति चीन से हुई है। चूहों को ही नहीं, बल्कि सभी पेड़-पौधों और जानवरों को जीवित रहने के लिए जल की आवश्यकता होती है। लेकिन एक ऐसा चूहा भी है, जिसे जीवन भर पानी की आवश्यकता न के बराबर होती है। इस चूहे को 'कंगारू रैट' कहते हैं। यह विचित्र जंतु उत्तरी अमरीका के दक्षिण-पश्चिमी रेगिस्तानों में मिलता है। इसकी टांगें कंगारू से मिलती हैं। मुंह के दोनों ओर थैलियां भी होती हैं, जिनमें यह अपने खाने का सामान रखता है। यह कंगारू की तरह से ही लम्बी छलांग भी लगाता है।

यह चूहा रेगिस्तानी जंतु है। इसीलिए इस चूहे को पानी की बहुत कम आवश्यकता होती है। यह पेड़-पौधों की जड़ें खाता है। इन जड़ों की नमी से ही जल और भोजन की इसकी आवश्यकता पूरी हो जाती है।

—डा. सी. एल. गर्ग

Scanned with CamScanner

सब की पसंद सबसे कम मूल्य

पिटारा कॉमिक्स

(हर माह चार का सैट)

आज ही अपने पत्र विक्रेता
अथवा किसी भी रेलवे बुक स्टाल से लें

पिटारा कॉमिक्स
ए-5 मायापुरी नई दिल्ली 110064

मूल्य केवल 3/- एक प्रति

आठ साल के बूढ़ों से लेकर 60 साल तक के
बच्चों के लिए

साप्ताहिक

लोटपोट

हास्य व्यंग्य की अनूठी पत्रिका

मूल्य केवल 2/-

सभी पत्र विक्रेताओं तथा रेलवे बुक स्टालों पर मिलता है

लोटपोट
ए-5 मायापुरी नई दिल्ली - 110064

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेंद्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस नयी दिल्ली में मुद्रित तथा प्रकाशित
कार्यकारी अध्यक्ष : नरेश मोहन

Scanned with CamScanner

पत्र मिला

- मार्च अंक बहुत अच्छा लगा। 'पूंछ की कैद', 'धरती कलश', 'गुफा में हीरे' तथा 'चीटू नीटू' ने मन मोह लिया। हर अगले अंक का हमें बेचैनी से इंतजार रहता है।

—सुरेंद्र पटेल, दलीपपुर (बिहार)।

- 'आप कितने बुद्धिमान हैं ?—'नंदन' का अनूठा स्तम्भ है। पत्रिका में खेल स्तम्भ की कमी अखरती है। एलबम में खिलाड़ियों के चित्र भी छापें।

—नवलकिशोर, बड़ौदा (गुजरात)।

- चित्रकथा 'महर्षि कर्वे' बहुत प्रेरणादायक थी। भविष्य में इस प्रकार की चित्र कथाएं ज्यादा छापें। जिससे तपस्वियों और महात्माओं से प्रेरणा लेकर, बच्चे सही पथ पर चल सकें। **—रविशंकर बार्वे, लवन, रायपुर।**
- 'नंदन' बच्चों के लिए ही नहीं, बड़े-बूढ़ों के लिए भी जरूरी है। उम्मीद है, हमेशा ऐसी ही रोचक, पौराणिक लोक-कथाएं पढ़ने को मिलती रहेंगी।

—राबिन राई 'नेपाली', थिम्फू (भूटान)।

- मैं 'नंदन' का नियमित पाठक हूं। मुझे सुरुचिपूर्ण लगती है। इसके कई स्तम्भ जैसे 'एलबम', 'तेनाली राम', 'ज्ञान-पहेली' आदि अनोखे हैं। महर्षि कर्वे चित्र कथा ने मन को छू लिया। **—सुनीलकुमार गुप्ता,बदायूं।**
- 'नंदन' को हम चंदन की तरह माथे से लगाते हैं। होली अंक खुशियों का पिटारा लेकर आया। सभी रचनाएं एक से एक बढ़कर हैं।

—सुरेशकुमार सिंह, खजौली (बिहार)।

- अप्रैल अंक में बातें रंग-बिरंगी में शून्य के बारे में छपा है। उसे इस प्रकार होना चाहिए—किसी संख्या को शून्य से गुणा करने पर परिणाम शून्य हो जाता है। किसी संख्या को शून्य से विभाजित करने पर परिणाम अनंत होता है। **—अमिताभ, बरेली**
- मार्च अंक एक बार क्या उठाया कि जब तक पूरा न हो गया, मैं उसे पढ़ती ही रही। 'दे तो राजा' 'गुफा में हीरे' तथा सभी कहानियां अच्छी लगी। पुरस्कृत कथा 'अनोखा उपहार' विशेष पसंद आई। 'महर्षि कर्वे' चित्रकथा ने भाव-विभोर कर दिया। **—कनक राय, आसनसोल**
- पत्रिका की हर प्रति नए आकर्षण के साथ प्राप्त होती है। यही कारण है कि हर अंक का इंतजार करता हूं। इसमें प्रकाशित तरह-तरह के ज्ञानवर्धक स्तम्भ चार चांद लगा देते हैं। **करुणेश प्रकाश भट्ट, जफरपुर**

70 सेकंड की चाबी

खजाना खोलेगी

पूरी ताकत का! पूरी शक्ति का

बुलवर्कर- 3 की बदौलत दुनिया भर में लाखों लोगों ने कामयाबी हासिल की है. अब आप भी ताकत बढ़ानेवाले इस जगप्रसिद्ध कामयाब तरीके आज़मा सकते हैं–वो भी मुफ्त! ये है रोजाना 70 सेकंड के जोरदार आइसोटोनिक/आइसोमेट्रिक वर्जिश प्रोग्राम–एक ऐसी आजमायी हुई चाबी जो आप के लिए शक्ति का खजाना खोल देगी . . . आपको मनचाही ताकतवर 'सुपरबॉडी' देगी.

आदम कद शीशे के सामने खड़े होकर, अपनी शारीरिक अवस्था के बारे में खुद भ्रम में पड़ जाना कितना सरल है क्या सचमुच आपका शरीर वैसा ही मर्दाना है जिससे दूसरे पुरुषों में ईर्ष्या जाग उठे और स्त्रियों में प्रशंसा? अगर नहीं तो यह खबर सुन कर आप झूम उठेंगे? एक अति क्रांतिकारी नए किस्म का साधन बताया गया है जो आपको वैसा ही बदन देगा जैसा आप हमेशा से चाहते रहे हैं और वह भी सिर्फ कुछ सप्ताहों में ही ! इस नए साधन का नाम है बुलवर्कर– 3. कल्पना कीजिए . . . आपकी मॉस पेशियाँ फौलादी हों . . . बाहों की मछलियों का शक्तिशाली मर्दाना उभार . . . पेड़ के प्रचंड तने जैसी रानें अब आप इसे हकीकत बना सकते हैं और आप स्वयं यह केवल 14 दिनों में सिद्ध कर सकते हैं!

शारीरिक गठन में निपुण लोग बताते हैं कि किस तरह ये व्यायाम आपको पर्याप्त शक्तिशाली शरीर दे सकते हैं!

ये हैं लेन तेल भूतपूर्व मिस्टर यूनिवर्स . 7 रोजेड की आसान बुलवर्कर व्यायाम श्रेणी करते हुए

यह व्यायाम गहरा सुगठित मर्दाना सीना बनाता है

ये देखिए आप किस तरह आकर्षक सुगठित शरीर का "V" आकार प्राप्त कर सकते हैं

यह व्यायाम पीठ की मोटी-पेशियों सुगठित कर आपको स्फूर्तिभरे पुरुष का रूप देता है

यह आपके हाथों में नई शक्ति भरता है

ये देखिए आप किस तरह गठित मांस-पेशियों वाले कंधे बना सकते हैं

अंतर्गत पॉवरमीटर

से आप अपनी मांस पेशियों की शक्ति को दिन-ब-दिन बढ़ते हुए देख सकते हैं.

5 साल की गारंटी

साथमें मुफ्त रु. ४५

- बुलवर्कर रखनेका आवरण कीमत का
- २४ पृष्ठों की सचित्र पुस्तिका
- दीवार पर लगाने के लिए सौदाहरण व्यायाम तालिका
- आहार और शिक्षण गाईड

खेल के सामान की सभी प्रमुख दुकानों पर उपलब्ध वी पी पी द्वारा इस पते से मंगा सकते हैं: बुलवर्कर प्रा. लि. मेहता महल, 15 मैथ्यू रोड, बम्बई 400 004

कृपया ध्यान दें कि वी पी पी. से आर्डर देने पर वी पी पी खर्च का भुगतान सीधे पोस्ट आफिस को देना होगा

Also Available at authorised BULLWORKER FITNESS CENTRES Connaught Place, New Delhi 110 001. • *GULATI STORES*, 888, E.P.K. Road, Karol Bagh, New Delhi 110 005. Tel No. 522380 • *CONTINENTAL* SPORTS, 6510, Fatehpuri, Chandni Chowk, New Delhi 110 006. Tel. No. 233196. • *DELIGHT INDUSTRIES*, 21 Khurshid Market, Sadar Bazar, New Delhi 110 006. Tel. No 771355 • *SUBHASH GIFT HOUSE*, 76 Central Market, Lajpat Nagar, Delhi 110 024. Tel. No. 6838963 • *RIO GRAND DEPARTMENTAL STORES*, M-39, Greater Kailash, New Delhi. Tel. No. 6410928 • *PRAKASH NOVELTY*, 27-E, Kamla Nagar, New Delhi 110 007 Tel. No 2520527 • *GULATI SPORTS INDUSTRIES*, Karol Bagh, New Delhi 110 005.

घटी कीमतों में डाक द्वारा

सामान्य रिटेल कीमत रु.325/-

अब आपके लिए सिर्फ रु. 298/- में साथ में मुफ्त उपहार • ऑफर थोड़े समय के लिए है.

दुनिया के 30 से भी अधिक देशों में बिकनेवाला

ABHA

यह कूपन आज ही भेजिए

बुलवर्कर प्रा. लि. 15 मैथ्यू रोड, बम्बई–400 004. S39-R LO

कृपया 14 दिनों की आजमाइश के अन्तर्गत मेरा बुलवर्कर–3 मुफ्त उपहार के साथ भेज दीजिए यदि मैं पूर्णतया परिणामों से सन्तुष्ट नहीं हुआ तो आजमाइश अवधि के अन्दर अपनी रकम (डाक व अतिरिक्त खर्च काटकर) वापिस पाने के लिए शीघ्र ही सबकुछ लौटा दूँगा

कृपया उचित चौकोर में ✓ निशान लगाइए ND-120

☐ रजि पोस्ट पार्सल द्वारा भेज दीजिए मैं रु 298/- का ड्राफ्ट/आइ पी ओ. मनीऑर्डर न ..... तारीख ..... (देय बुलवर्कर प्रा लि के नाम) भेज रहा हूं.

☐ वी.पी.पी द्वारा भेज दीजिए. डिलीवरी के समय डाकिए को रु 298/- देने का वचन देता हूं.

नाम: .....

पता: .....

.....

पिन ..... हस्ताक्षर .....

Scanned with CamScanner

पत्र-मित्र

पुस्तकें पढ़ने तथा लेखन में रुचि :

१. संजीवकुमार राठौर, १४ वर्ष, नई बस्ती, पुलिस चौकी के पास, ललितपुर (उ. प्र.); २. हरिप्रसाद किल्ला, १०, द्वारा रामेश्वरलाल, किला लाडनूं, जि. नागौर (राज.); ३. सुनीलकुमार बिसपतिया, १६, १४८ राघा गोविंद कालोनी, जयपुर; ४. हरीकृष्ण ओमर, १७, दरोगा कुआं, छोटी बाजार, बांदा; ५. विकास जैन, १४, २२४ वीर नगर, मवाना (मेरठ); ६. विकास अग्रवाल, १४, २४ न्यू सेटलमेंट मार्केट, खड्गपुर; ७. सुरेंद्रपाल सिंह नारंग, १४, केसरी सिंहपुर, जि. श्रीगंगानगर; ८. धीरजकुमार, १६, बभनपुर मानिकपुर, डा. गढ़ी मानिकपुर, प्रतापगढ़; ९. राजबहादुर सिंह, १६, म. नं. बी-१८०, कोंडली, पो. खिचड़ीपुर, दिल्ली-९१; १०. मुकेशकुमार छीपा, १६, ३०५९ पलसानिया रोड, नसीराबाद, जि. अजमेर (राज.)।

खेल, संगीत तथा चित्रकला में रुचि :

१. राजेशकुमार कोठारी, १५ वर्ष, द्वारा शंकरलाल जी कोठारी, स्वर्ण स्ट्रीट, पो. नापासर, बीकानेर; २. खगेश शर्मा, १५, ५७-बी, गोबिंद घेरा, वृंदावन, जि. मथुरा; ३. किशोरकुमार मिश्रा, १६, लाट नं. १, मकान नं. २९/२, मुगलसराय (उ. प्र.); ४. श्रीशचंद्र श्रीवास्तव, ११, द्वारा रमेशचंद्र श्रीवास्तव, का. नं. १/६ निकट माडल कालोनी, गोंडा (उ. प्र.); ५. सैयद शहजाद अहमद, १५, द्वारा सैयद मोहम्मद नूह, स्टेशन रोड, रसड़ा (बलिया); ६. दिनेशचंद्र जोशी, १६, द्वारा सुरेशचंद्र जोशी, विवेकानंद स्कूल की बगल में, संजय कालोनी, भोटिया पड़ाव, हल्द्वानी, जि. नैनीताल; ७. सुरेशकुमार जायसवाल, १६, पो. सिकरा बाजार, पश्चिमी चम्पारण (बि.); ८. राजेश कालड़ा, १०, राजेश क्लाथ हाउस, २१ दरेसी रोड, लुधियाना; ९. राजूकुमार, १३, द्वारा अखिलेशकुमार भार्गव, ग्राम कोंआथ, रोहतास (बि.)।

डाक टिकट संग्रह में रुचि :

१. राजीव जैरथ, १४, मकान नं. ३५-बी, सेक्टर ४४-ए, चंडीगढ़; २. आशीष अग्रवाल, १२, ए-५ बी-१८१/बी जनकपुरी, नई दिल्ली; ३. सुशीलकुमार तिवारी, १५, भैरापाड़ा, दुमका (बि.); ४. नवीन ग्रोवर, १७, ९७ अग्रसेन नगर, श्रीगंगानगर (राज.); ५. रविकुमार, १५, म. नं. एफ-१७७७, शास्त्री नगर, तह. गांधीनगर (जम्मू-तवी); ६. राहुलकुमार, ८, शास्त्री नगर, पटना; ७. वसंतकुमार बक्सी, १६, राउरकेला, सेक्टर-२०, का. नं. डी/५२५, सुंदरगढ़ (उड़ीसा)।

शीर्षक बताइए : परिणाम

मार्च अंक में छपे रंगीन चित्र पर एक से एक बढ़िया, आकर्षक शीर्षक भेजे पाठकों ने। पुरस्कार इन शीर्षकों पर दिए जा रहे हैं :

नटखट गुड़िया सजी-धजी,
चारों ओर है भीड़ खड़ी।

—रत्नेश अष्ठाना, अष्ठाना निवास, मठिया निरात, मोतीहारी, चम्पारण पूर्व (बि.)

नाच मैं दिखलाऊं,
सबका मन बहलाऊं।

—लतिका सिंह, मकान नं. ४६३, कैमरी रोड, पटेल नगर, हिसार (हरि.)।

जमाया नाच ने ऐसा रंग,
देख सभी रह गए दंग।

—मोहनलाल शर्मा, का. नं. ९०७/ए, डी स्ट्रीट, पो. फ्रीलैंड गंज, दाहोद, जि. पंचमहल (गुज.)।

इनके **शीर्षक भी प्रशंसनीय रहे :** रश्मा गुप्ता, हिंडौन सिटी (राज.); मनोजकुमार गुप्ता, कलकत्ता; सुनीता सोनी, रायकरनपुरा (राज.); दीनानाथ शर्मा, शिमला; धीरजकुमार, नौगचिया (बि.); नेहा कमल, जम्मू तवी।

नंदन ज्ञान पहेली : २४३

परिणाम

इस बार सर्वशुद्ध हल कोई नहीं आया। एक तथा दो गलती वाले प्रतियोगियों में पुरस्कार की राशि इस प्रकार बांटी जा रही है।

एक गलती : एक : दो सौ रुपए

कुणाल घटक, वाराणसी।

दो गलती : आठ : प्रत्येक को सौ रुपए।

१. सौरभ श्रीवास्तव, जबलपुर; २. विशाल रतनसुख, शाहजहांपुर; ३. ओमप्रकाश तंवर, सरदारशहर (राज.); ४. सरोजकुमार, मिदनापुर (प. बं.); ५. शशिरंजन वर्मा, मुंगेर; ६.आभा शर्मा, मथुरा; ७. सीमारानी, मधुबनी, (बि.); ८. अनु अग्रवाल, आगरा।

Scanned with CamScanner

स्टूडेन्ट लेसिंग
काला कोर्डरोय
साईज़ 5-8, 9-2

रोज़ी, बहु-रँगा
साईज़ 3-8

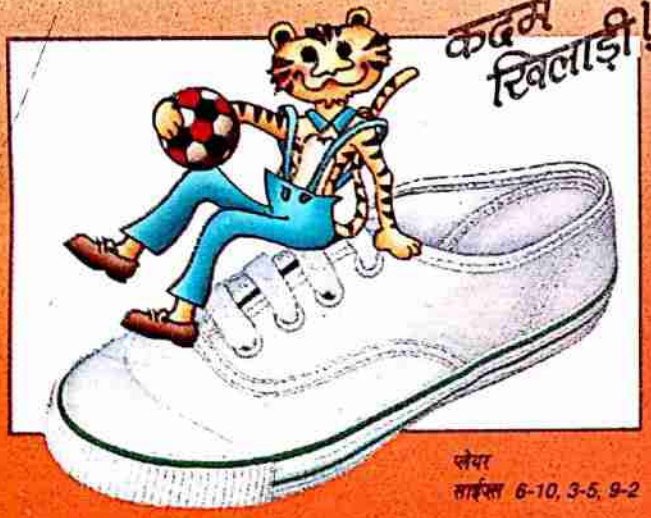

खेयर
साईज़ 6-10, 3-5, 9-2

ओमेगा
स्विस नीला
साईज़ 6-10, 3-5, 9-2

हर कदम की शक्ति हर कदम की शान!

एक अंतरराष्ट्रीय खेलना अब आपके मौसम में. टाईगर! जूते परिवार के लिये जूते जो आपको दें भरोसेमंद बाटा क्वालिटी का विश्वास और आपके पैसे का उचित मूल्य. अच्छे और आसान — न केवल आपके पैरों पर — आपकी जेब पर भी. आज ही अपने घर लाइये एक टाईगर.

सारे जग का टाईगर प्यारा!

TIGRE

बाटा के क्वालिटी जूते
प्रमुख जूते की दुकानों में उपलब्ध

React/1517/89

Scanned with CamScanner

रॉज. नं. डी.-(सी)-१७१ आर.एन.आई. नं. १०५२५/६

मैगी के सभी चाहने वालों के लिए मैगी क्लब के नए उपहार!

ये उपहार मुफ़्त पाओ!

बस यह मैगी चिन्ह पाँच खाली पैकेटों से काट कर हमें भेज दो।
और बदले में लो अपनी पसंद का कोई भी उपहार। ये मज़ेदार उपहार तुम्हें 6 से 8 सप्ताह के अंदर मिल जाएंगे।

याद रखो:

अगर तुम मैगी क्लब के सदस्य हो तो अपनी पसंद के उपहार के नाम के साथ-साथ अपना नाम, पता और सदस्यता नं० हमें हर बार भेजो।

अगर तुम मैगी क्लब के सदस्य नहीं हो तो अपनी पसंद के उपहार के नाम के साथ-साथ अपना नाम और पता ज़रूर लिखो।

I'M A MAGGI CLUBBER

HTA 6320 HIN

हमारा पता है: मैगी क्लब, पी.ओ. बॉक्स नं०: 5788, नई दिल्ली-110 055

Scanned with CamScanner